राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 भारत को हराना पाक के लिए विश्व कप जीतने से ज्यादा ...

48 डिग्री तापमान के बीच काल कोठरी में बिन कूलर के हैं केजरीवाल ... 12

वर्ष : 15 | अंक : 55 | नई दिल्ली, बुधवार,05 जून, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम अधिकतम तापमान 31°C न्यूनतम तापमान 25.0°C

हां 30%
नहीं 50%
कह नहीं सकते 10%

बाजार

सोना 59,340

चांदी 55,350

सेंसेक्स 63,327

निफ्टी 18,816

संक्षिप्त खबरें

चुनाव परिणाम में देरी को लेकर आयोग से मिला कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल

नई दिल्ली। कांग्रेस ने कहा है कि चुनाव अपडेट में देरी होने, हर आधा घंटा में राउंड वाइज अपडेट नहीं आने तथा सोनीपत में ईवीएम में खराबी आने संबंधी शिकायत को लेकर पार्टी के प्रतिनिधि मंडल ने मंगलवार को चुनाव आयोग से मुलाकात की और समस्या का तत्काल समाधान निकालने का आग्रह किया। आयोग से मुलाकात के बाद कांग्रेस नेता अभिषेक मनु सिंघवी तथा सलमान खुर्शीद ने निर्वाचन सदन के बाहर मौजूद पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि गणना धीमी होने की जानकारी आयोग को दी गई तो आयोग ने उन्हें समझाया कि किस तरह से गिनती में देरी हो रही है, लेकिन वह प्रयास करेंगे कि आगे देरी नहीं हो। उन्होंने कहा कि आयोग को बताया गया कि हर आधा घंटे में जो अपडेट आने चाहिए थे वह आयोग की वेबसाइट पर नहीं आ रही है और विधानसभा क्षेत्र वाइज अपडेट आने में देरी हो रही है। कांग्रेस नेताओं ने कहा, चुनाव आयोग ने हमें बताया कि अपडेट होने में टाइम लगता है। जिस सेगमेंट से पहले गणना का अपडेट आता है, उसे पहले दिया जाता है।

दिल्ली में भाजपा ने किया तीसरी बार क्लीन स्वीप, विपक्ष धराशायी

नई दिल्ली। राजधानी में भाजपा का उम्मीदवारों ने एक बार फिर रिकॉर्ड जीत का परचरम लहराया। केंद्रीय नेतृत्व ने सात सीटों में से छह पर नये चेहरों को चुनाव मैदान में उतारा था। मौजूदा सांसदों की सियासी हवा खराब होने से उनका टिकट काट दिया गया था। इनमें एक केंद्रीय मंत्री थीं तो अन्य दो-दो बार केंद्रीय कैबिनेट का हिस्सा रहे थे। इनकी जगह पर पार्टी ने दो पूर्व मेयर व एक विधायक को टिकट दिया। भाजपा ने केंद्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी की जगह नई दिल्ली लोकसभा सीट से बांसुरी स्वराज पर दांव लगाया था। इसी तरह पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. हर्ष वर्धन का टिकट काटकर चांदनी चौक से व्यापारी नेता प्रवीण खंडेलवाल को चुनावी मैदान में उतारा था। पूर्वी दिल्ली लोकसभा सीट से गौतम गंभीर की जगह हर्ष मल्होत्रा को गठबंधन के प्रत्याशी के खिलाफ दो-दो हाथ करने के लिए उतारा गया था।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए गठबंधन ने लगातार तीसरी बार हासिल किया बहुमत

एनडीए को पूर्ण बहुमत, इंडिया गठबंधन का बेहतर प्रदर्शन

एनडीए को 292, इंडिया को 234 सीट, भाजपा को अकेले बहुमत नहीं

प्रातः किरण

पार्टी	आगे	जीत	कुल (+/-)	2019
एनडीए	4	288	292(-61)	353
INDIA	11	223	234(143)	91
अन्य	0	17	17(-82)	99

नई दिल्ली/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए गठबंधन ने लगातार तीसरी बार बहुमत का आकड़ा पार कर लिया है। चुनाव आयोग द्वारा जारी आंकड़ें के मुताबिक 542 सीटों में से एनडीए को 291, इंडिया को 234 सीटें मिल रही हैं। हालांकि, भाजपा अकेले 272 के बहुमत आंकड़े को पार नहीं कर पाई, लेकिन एनडीए को बहुमत मिल गया है। 2014 में भाजपा को 278 और 2019 में 303 सीटें मिली थीं। निर्वाचन आयोग की वेबसाइट के अनुसार, रात 10 बजे तक भाजपा को 240, कांग्रेस को 99, सपा को 37, टीएमसी को 29, डीएमके को 22, टीडीपी को 16, जेडीयू को 12, शिवसेना यूटीबी को 9, एनसीपी शरद पवार को 7, राजद को 4 और लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास को 5, शिवसेना शिंदे को 7 सीटें मिलती दिख रही हैं। चुनाव आयोग ने 16 मार्च को लोकसभा चुनाव कार्यक्रम का ऐलान किया था। कुल 7 फेज में 19 अप्रैल से 1 जून तक वोटिंग हुई। 1952 के बाद 44 दिन का यह चुनाव सबसे लंबा रहा। 1952 में यह 4 महीने चला था। इन 2 मौकों के अलावा चुनाव की प्रोसेस अमूमन 30 से 40 दिन में पूरी हो जाती थी। उत्तर प्रदेश की 70 से अधिक सीटें जीतने वाली भाजपा को करारा झटका लगा है और पार्टी पिछली बार की 62 सीटों की तुलना में पार्टी केवल 34 सीटों पर बढत बना पाई है। एक बड़े और अप्रत्याशित उलट फेर में समाजवादी पार्टी 35 और कांग्रेस 7 सीटों पर आगे चल रही हैं। राजग की सहयोगी राष्ट्रीय लोकदल दो और अपना दल एक सीट पर बढत बनाये हुए है। बहुजन समाज पार्टी अभी तक किसी भी सीट पर बढत नहीं बना पाई है जबकि आजाद समाज पार्टी के दलित नेता चंद्रशेखर आजाद नगीना सीट पर आगे है। राजस्थान में राज्य की 25 सीटों में से उसे 14 पर बढत हासिल है। पिछले चुनाव में पार्टी ने सभी 25 सीटों पर जीत दर्ज की थी। इस बार कांग्रेस ने शानदार प्रदर्शन करते हुए आठ सीट पर बढत बना रखी है। माकपा, राष्ट्रीय लोतांत्रिक पार्टी तथा भारत आदिवासी पार्टी एक एक सीट पर आगे है। महाराष्ट्र में शिव सेना (शिंदे) और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के साथ मिलकर चुनाव लड़ रही भाजपा का प्रदर्शन आशा के अनुरूप नहीं दिख रहा है। राज्य में भाजपा 12, शिव सेना (शिंदे) 6 और राकांपा एक सीट पर आगे है। कांग्रेस 11, शिव सेना (उद्धव ठाकरे) 10, राकांपा शरद पवार 7 सीट पर आगे है जबकि एक सीट पर निर्दलीय उम्मीदवार आगे है। बिहार में कुल 40 सीटों में भाजपा 12, जद यू 12, लोजपा (रामविलास) 5, राजद 4, कांग्रेस दो, माकपा माले दो और हिन्दुस्तानी अवाम मोर्चा एक सीट पर आगे है। भाजपा के लिए बेहद महत्वपूर्ण माने जा रहे पश्चिम बंगाल में भी पार्टी का प्रदर्शन उसके दावों के अनुरूप नहीं रहा। पार्टी राज्य की 42 सीटों में से केवल 12 सीटों पर आगे है जबकि सत्तारूढ तृणमूल कांग्रेस 29 सीटों पर बढत बनाये हुए है। कांग्रेस केवल एक सीट पर आगे है। कांग्रेस शासित कर्नाटक में भाजपा ने कुछ हद तक अच्छा प्रदर्शन किया है और राज्य की 28 सीटों में से वह एक सीट जीतकर 15 पर आगे चल रही है। भाजपा की सहयोगी जद एस दो सीटों पर आगे है। कांग्रेस दस सीटों पर बढत बनाये हुए है। भाजपा के सहयागी जद एस के प्रज्जवल रेवन्ना को हसन सीट से हार का सामना करना पड़ा है। छत्तीसगढ में पार्टी का शानदार प्रदर्शन है और वह राज्य की 11 में से दस सीटों पर आगे है। एक सीट कोरबा पर कांग्रेस आगे है। मध्य प्रदेश में भी पार्टी सभी 29 सीटों पर आगे चल रही है । पार्टी राजधानी दिल्ली की सभी सातों, उत्तराखंड की सभी पांच और हिमाचल प्रदेश की सभी चार सीटों पर भी आगे है। हरियाणा में भी भाजपा को नुकसान होता दिख रहा है और वह पिछली बार की दस सीटों की तुलना में पांच सीटों पर आगे है जबकि कांग्रेस भी पांच सीट पर बढत बनाये हुए है। पंजाब में भाजपा का खाता खुलता नहीं दिख रहा है । राज्य की 13 सीटों में से दो सीटों के परिणाम आ चुके हैं और ये दोनों सीट कांग्रेस के खाते में गयी है। इसके अलावा कांग्रेस पांच सीटों पर बढत बनाये हुए है जबकि सत्तारूढ आम आदमी पार्टी 3 सीटों पर शिरोमणि अकाली दल एक और निर्दलीय दो सीटों पर आगे हैं। जम्मू कश्मीर में जम्मू क्षेत्र की दोनों सीटों पर भाजपा आगे है जबकि श्रीनगर एवं अनंतनाग राजौरी सीट पर नेशनल कांफ्रेस आगे है।

बिहार की 40 सीटों में राजग को 30 और इंडिया गठबंधन को 10 सीट

भाजपा 12, जदयू 12, राजद 4, कांग्रेस 3, भाकपा माले 2 व अन्य 1

प्रातः किरण

बिहार

NDA	INDIA	OTH
30	9	1

पटना। बिहार की 40 लोकसभा सीट में सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन 30, विपक्षी इंडिया गठबंधन 9 और एक संसदीय सीट पर निर्दलीय उम्मीदवार पप्पू यादव ने जीत का परचम लहराया है। निर्वाचन आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध रुझानों के मुताबिक, राजग में शामिल जनता दल-यूनाइटेड 12, भारतीय जनता पार्टी 12, लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) पांच और हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा (सेक्युलर) एक सीट जीत चुकी है। वहीं, विपक्षी इंडिया गठबंधन में शामिल राष्ट्रीय जनता दल चार, भाकपा माले दो और कांग्रेस तीन व निर्दलीय उम्मीदवार पप्पू यादव पूर्णिया लोकसभा सीट पर आगे हैं। आरा, पाटलिपुत्र, बक्सर, सासाराम, औरंगाबाद सहित पांच सीटों पर भाजपा का करारी हार का सामना करना पड़ा। वहीं, जहानाबाद, कटिहार, पूर्णिया, किशनगंज सीट पर जदयू को करारी हार का सामना करना पड़ा है।

राजद ने औरगांबाद, जहानाबाद, पाटलिपुत्रा और जहानाबाद में राजद ने जीत का परचम लहराया है। भाकपा माले ने आरा और काराकाट में तो कांग्रेस ने सासाराम, कटिहार और किशनगंज में जीत हासिल की है। वहीं, पूर्णियां में पप्पू यादव ने जीत हासिल किया। बेगूसराय लोकसभा सीट के भारतीय जनता पार्टी प्रत्याशी गिरिराज सिंह ने 85 हजार वोटों से चुनाव जीत लिया है। उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी सीपीआई के अवधेश राय को मात दी। पिछली बार गिरिराज सिंह ने बेगूसराय में कन्हैया कुमार को इसके मुकाबले भारी अंतर से हराया था। बिहार के 40 सीटों में कई सीटों पर परिणाम सामने आ चुके हैं। कई पर मतगणना अंतिम दौर में है। भाजपा के दिग्गज नेता आरके सिंह, रामकृपाल यादव को हार का सामना करना पड़ा।

आरा में भाकपा माले के सुदामा प्रसाद ने भाजपा प्रत्याशी और केंद्रीय मंत्री आर के सिंह को हराया। बेगुसराय में भाजपा प्रत्याशी गिरिराज सिंह ने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के अवधेश कुमार राय को हराया। गया से पूर्व मुख्यमंत्री और हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा (सेक्युलर) के संस्थापक जीतन राम मांझी ने राजद के कुमार सर्वजीत को पराजित किया। हाजीपुर से लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) प्रमुख चिराग पासवान ने राजद के शिव चंद्र राम को हराया।

काराकाट से भाकपा माले के राजा राम सिंह ने राष्ट्रीय लोक मोर्चा के उपेन्द्र कुशवाहा को, कटिहार से कांग्रेस के तारिक अनवर ने भाजपा के दुलाल चंद्र गोस्वामी को हराया है। किशनगंज से कांग्रेस के मोहम्मद जावेद ने जद-यू के मुजाहिद आलम को हराया। मधुबनी से भाजपा के अशोक कुमार यादव ने राजद के मो. अली अशरफ फातमी को हराया। मुंगेर के जद-यू के राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह ने राजद की कुमारी अनिता देवी को हराया हैं ।

पश्चिम चम्पारण से भाजपा के डॉ. संजय जायसवाल ने कांग्रेस के मदन मोहन तिवारी को हराया हैं। पाटलिपुत्र से राजद की मीसा भारती ने भाजपा के राम कृपाल यादव को हराया हैं । पटना साहिब से भाजपा के रवि शंकर प्रसाद कांग्रेस के अंशुल अभिजित से 89,374 मतों से आगे हैं। पूर्वी चंपारण से भाजपा के राधा मोहन सिंह ने विकासशील इंसान पार्टी के राजेश कुमार को हराया हैं। सारण से भाजपा के राजीव प्रताप रूडी ने राजद की रोहिणी आचार्य को हराया।

शिवहर से जद-यू की लवली आनंद ने राजद की रितु जयसवाल को हराया। सीतामढी से जद-यू के देवेश चंद्र ठाकुर ने राजद के अर्जुन राय को हराया हैं । सीवान से जद-यू की विजयलक्ष्मी देवी ने निर्दलीय प्रत्याशी हिना शाहब को पराजित किया है। उजियारपुर से भाजपा के नित्यानंद राय ने राजद के आलोक कुमार मेहता को हराया । राज्य में 36 से ज्यादा केंद्रों पर मतगणना जारी है। इन सीट पर 19 अप्रैल से एक जून के बीच सात चरणों में मतदान हुआ था।

लोकसभा चुनाव के नतीजों के बीच प्रधानमंत्री पहुंचे भाजपा मुख्यालय, जोरदार स्वागत

तीसरे कार्यकाल में देश बड़े फैसलों का एक नया अध्याय लिखेगा : मोदी

बोलें-यह विजय दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की जीत है

प्रातः किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। लोकसभा चुनाव के नतीजों के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भाजपा मुख्यालय पहुंचे। यहां उन्होंने देश को संबोधित किया। मंच से उन्होंने महिलाओं सहित सभी मतदाताओं के प्रति आभार जताया। उन्होंने संकेत दिए हैं कि तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के बाद उनके नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार कड़े फैसले ले सकती है। जय जगन्नाथ, हम सभी जनता जनार्दन के ऋणी हैं। उन्होंने कहा, जनता ने भाजपा और एनडीए पर भरोसा जताया है। आज की यह विजय दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की जीत है। यह भारत के अटूट निष्ठा की जीत है।

यह विकसित भारत के प्रण की जीत है। यह कहना है प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का। मतगणना के बीच प्रधानमंत्री मोदी ने भाजपा मुख्यालय पहुंचे। यहां उन्होंने आयोजित कार्यक्रम को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि यह विकसित भारत के प्रण की जीत है। यह सबका साथ, सबका विकास की जीत है। यह इस मंत्र की जीत है। यह 140 करोड़ भारतीयों की जीत है। उन्होंने आगे कहा कि मैं आज देश के चुनाव आयोग का भी अभिनंदन करुंगा। चुनाव आयोग ने दुनिया का सबसे बड़ा चुनाव इतनी कुशलता के साथ संपन्न कराया है। इस चुनाव में करीब 100 करोड़ मतदाता, 11 लाख पोलिंग स्टेशन, 55 लाख वोटिंग मशीन, 1.5 करोड़ मतदान कर्मियों ने साथ काम किया। भारत की चुनाव प्रक्रिया, चुनाव के पूरे सिस्टम पर हर भारतीय को गर्व है। ये अपने आप में बहुत बड़ा गौरव का विषय है। पीएम मोदी ने कहा कि आंध्र प्रदेश में चंद्रबाबू नायडू के नेतृत्व में एनडीए ने शानदार प्रदर्शन किया। बिहार में नीतीश बाबू के नेतृत्व में एनडीए ने शानदार प्रदर्शन किया। दोस्तों 10 साल पहले देश ने हमें जनादेश दिया था। 2013-14 में देश एक निराशा की गर्त में डूब चुका था। हर दिन अखबारों की हेडलाइन ऐसी ही होती थीं। ऐसे समय में देश ने हमें निराशा के गहरे सागर से आशा के मोती निकालने का जिम्मा सौंपा था।

आत्म निर्भर बनाने के लिए करेंगे काम : पीएम मोदी ने मंच से कहा कि देश के इतिहास में महिलाओं द्वारा दिए गए वोटों से रिकॉर्ड टूट गया है। मैं इसे शब्दों में बयां नहीं कर सकता। देश की कोटि-कोटि माताओं-बहनों ने मुझे नई प्रेरणा दी है। राष्ट्र प्रथम की भावना हमें लक्ष्य हासिल करने का हौसला देती है। हमने दुनिया की सबसे बड़ी जनकल्याणकारी योजनाएं चलाईं। आजादी के 70 साल बाद 12 करोड़ लोगों को नल से जल मिला है। आजादी के 70 साल बाद चार करोड़ जनधन खाते खुले हैं। अनुच्छेद 370 हटा, बैंकिंग रिफॉर्म हुए, जीएसटी आई। आप याद करिए कोरोना का इतना बड़ा संकट आया, हमने हर दबाव से हटकर कदम उठाया और इसी का नतीजा है कि आज भारत दुनिया की सबसे तेजी से विकसित होती बड़ी इकोनॉमी है।

लोकसभा चुनाव : कई दिग्गजों ने मारी बाजी तो कई को मिली करारी हार

पीएम मोदी की वाराणसी तो राहुल गांधी की वायनाड व रायबरेली में बड़ी जीत

प्रातः किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। लोकसभा चुनाव में कई दिग्गजों ने मारी बाजी तो कई दिग्गज उम्मीदवारों को हार का मुंह देखना पड़ा। लेकिन भारतीय राजनीतिक के कई बड़े नाम आसानी से जीत हासिल करने में कामयाब रहे। देश के प्रधानमंत्री और वाराणसी से भाजपा प्रत्याशी नरेंद्र मोदी ने वाराणसी लोकसभा सीट से 152513 वोटों से जीत दर्ज की है। उन्होंने कांग्रेस के अजय राय को हराया है।

राहुल गांधी, वायनाड/रायबरेली : कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने केरल के वायनाड और यूपी के रायबरेली लोकसभा सीट से जीत दर्ज की है। राहुल गांधी को वायनाड में 647445 वोट मिले हैं। उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के एन्नी राजा को 364422 वोटों से हराया है। दूसरी सीट रायबरेली से उन्होंने 390030 वोटों से बीजेपी प्रत्याशी दिनेश प्रताप सिंह को हराया है। राहुल को रायबरेली में 687649 वोट मिले।

अखिलेश यादव, कन्नौज : सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कन्नौज लोकसभा सीट से बीजेपी प्रत्याशी सुब्रत पाठक को 170076 वोटों से हराया है। अखिलेश यादव को कन्नौज में 640207 वोट मिले।

अमित शाह, गांधीनगर : केंद्रीय गृह मंत्री और भाजपा नेता अमित शाह ने गांधीनगर लोकसभा सीट से 744716 रिकॉर्ड वोटों से कांग्रेस प्रत्याशी सोनल रमनभाई पटेल को हराया। अमित शाह को 1010972 वोट मिले।

नितिन गडकरी, नागपुर :
केंद्रीय मंत्री और भाजपा नेता नितिन गडकरी ने नागपुर लोकसभा सीट जीत दर्ज की है। नितिन गडकरी को 652809 वोट मिले। उन्होंने कांग्रेस प्रत्याशी विकास ठाकरे को 136868 वोटों से हराया।

किशोरी लाल, अमेठी :
यूपी की हाई प्रोफाइल सीट अमेठी से कांग्रेस प्रत्याशी किशोरी लाल ने जीत दर्ज की है। उन्होंने भाजपा प्रत्याशी और केंद्रीय मंत्री स्मृति इरानी को 167196 वोटों से हराया है। उन्हें 539228 वोट मिले हैं। इसी सीट पर पिछली बार स्मृति इरानी ने राहुल गांधी को हराया था।

मनोज तिवारी, नार्थ-इस्ट दिल्ली : भाजपा नेता मनोज तिवारी ने नार्थ-इस्ट दिल्ली लोकसभा सीट से जीत दर्ज की है। मनोज तिवारी ने कांग्रेस प्रत्याशी कन्हैया कुमार को लगभग 137066 वोटों से हराया है। मनोज तिवारी को करीब 821567 वोट मिले हैं।

अधीर रंजन चौधरी, बहरमपुर :
पश्चिम बंगाल की बहरमपुर सीट से कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी को हार का सामना करना पड़ा है। अधीर रंजन चौधरी को टीएमसी के यूसुफ पठान ने 539228 वोटों से हराया है। अधीर रंजन चौधरी को 438171 वोट मिले हैं।

स्मृति इरानी, मेनका गांधी, दिग्विजय सिंह की करारी हार :
भारतीय राजनीतिक के कई बड़े चेहरे को चुनाव में करारी हार का सामना करना पड़ा। अमेठी स्मृति इरानी, अमेठी :
यूपी की हाई प्रोफाइल सीट अमेठी से भाजपा प्रत्याशी और केंद्रीय मंत्री स्मृति इरानी को हार का सामना करना पड़ा है। कांग्रेस प्रत्याशी किशोरी लाल ने स्मृति इरानी को 167196 वोटों से हराया है। स्मृति इरानी को 372032 वोट मिले। पिछली बार इसी सीट से उन्होंने राहुल गांधी को हराया था।

दिनेश लाल यादव, आजमगढ़ :
भोजपुरी सुपरस्टार और आजमगढ़ से भाजपा प्रत्याशी दिनेश लाल यादव को सपा प्रत्याशी ने 161035 वोटों से हराया है। दिनेश लाल यादव को 347204 वोट मिले। जबकि सपा प्रत्याशी धर्मेंद्र यादव को 508239 वोट मिले हैं।

माधवी लता, हैदराबाद :
हैदराबाद से भाजपा प्रत्याशी माधवी लता को हार का सामना करना पड़ा है। ओवैसी ने माधवी लता को 338087 वोटों से हराया है। माधवी लता को 323894 वोट मिले हैं।

मेनका गांधी, सुल्तानपुर :
सुल्तानपुर से भाजपा प्रत्याशी मेनका गांधी हार गई हैं। सपा प्रत्याशी रामभुवल निषाद ने मेनका गांधी को 43174 वोटों से हराया है। मेनका गांधी को सुल्तानपुर में 401156 वोट मिले हैं।

कन्हैया कुमार, नार्थ-इस्ट दिल्ली : कांग्रेस नेता कन्हैया कुमार को 137066 वोटों से हार का सामना करना पड़ा। नार्थ-इस्ट दिल्ली लोकसभा सीट से कांग्रेस प्रत्याशी कन्हैया कुमार को 684501 वोट मिले हैं।

नतीजे **भागलपुर से जदयू के अजय मंडल ने कांग्रेस के अजित शर्मा को हराया**

केन्द्रीय मंत्री आरके सिंह चुनाव हारे, मीसा और चिराग की बड़ी जीत

प्रातः किरण

पटना। बिहार में लोकसभा की 40 सीटों के लिए काउंटिंग जारी है। एक बार फिर से बिहार में नीतीश कुमार का जलवा बरकरार है। जबकिबीजेपी को कुछ सीटों का नुकसान होता दिख रहा है। वहीं, इस बार चुनाव में लालू यादव का भी दम दिख रहा है।

सीटों के उलटफेर के बीच कुछ कैंडिडेट चुनाव जीत चुके हैं, बस चुनाव आयोग के तरफ से आधिकारिक एलान बाकी है। दरअसल, पाटलिपुत्र सीट से रामकृपाल यादव भाजपा के तरफ से मजबूत दावेदार माने जा रहे थे। लेकिन, वह यहां पर अपनी जीत की हैट्रिक लगाने में कामयाब नहीं हुए हैं। यहां, लालू प्रसाद की बेटी मीसा भारती की जीत का रास्ता तय कर दिया। मीसा भारती पिछले लोकसभा चुनाव में हार गई थी। लेकिन अब उन्होंने उस हार का बदला ले लिया है। वहीं, आरा से मोदी कैबिनेट के मंत्री आर के सिंह चुनाव हार गए हैं। लेफ्ट के सुदमा सिंह ने उन्हें पटखनी दी है।दरभंगा में गोपालजी ठाकुर ने 178156 मतों से जीत दर्ज की है। उन्होंने इंडी गठबंधन के ललित यादव को मात दी है। इसके साथ ही हाजीपुर सीट से चिराग पासवान को पहले से ही जीत का बड़ा दावेदार माना जा रहा था। जो आखिरकार सही साबित हुआ है। समस्तीपुर (एससी) लोजपा रा के प्रत्याशी शांभवी चौधरी ने कांग्रेस के सन्नी हजारी को पछाड़ा, बेगूसराय में भाजपा के गिरिराज सिंह ने सीपीआई के अवधेश राय को हराया। खगड़िया में लोजपा रा के राजेश वर्मा ने माकपा के संजय

कुशवाहा को हराया। भागलपुर से जदयू के अजय मंडल ने कांग्रेस के अजित शर्मा को हराया। बांका में जदयू के गिरधारी यादव ने राजद के जयप्रकाश नारायण यादव को हराया। मुंगेर से जदयू के ललन सिंह ने राजद के अनिता महतो को पराजित किया। नालंदा में जदयू के कौशलेन्द्र ने भाकपा माले के संदीप सौरभ को हराया। पटना साहिब से भाजपा के रविशंकर प्रसाद ने कांग्रेस के अंशुल अभिजित को हराया। पाटलिपुत्रा से राजद के मीसा भारती ने भाजपा के रामकृपाल यादव को शिकस्त दी। आरा में भाकपा माले के सुदामा प्रसाद ने भाजपा के आर के सिंह को पराजित किया। वाल्मिकीनगर से जदयू के सुनील महतो ने राजद के दीपक यादव को भारी मतो से हराया। बक्सर से राजद के सुधाकर सिंह ने भाजपा के मिथलिश तिवारी को हराया। पश्चिम चंपारण से भाजपा के संजय जायसवाल ने कांग्रेस मदन मोहन तिवारी को एक लाख से अधिक वोटों से हराया। सासाराम सुरक्षित से कांग्रेस के मनोज राम ने भाजपा के शिवेश राम को पराजित किया। पूर्वी चंपारण से भाजपा के राधामोहन सिंह ने वीआईपी के उम्मीदवार राजेश कुशवाहा का हराया। काराकाट से भाकपा माले के राजाराम कुशवाहा ने फिल्मी स्टार पवन सिंह को पराजित किया। जहानाबाद से राजद के सुरेन्द्र यादव जदयू के चंद्रेश्वर चंद्रवंशी को हराया। शिवहर से बाहुबली आनंद मोहन की पत्नी लवली आनंद ने राजद के रितु जायसवाल को हराया। औरगांबाद में राजद के अभय कुशवाहा ने भाजपा के सुशील कुमार सिंह को हराया। सीतामढ़ी से जदयू के देवेश चंद्र ठाकुर ने राजद के अर्जून राय को हराया। मधुबनी में भाजपा के अशोक यादव ने राजद के अली अशराफ आतमी को हराया। गया सुरक्षित सीट से हम सेक्यूलर के जीतन राम मांझी ने राजद के कुमार सर्व जीत को हराया। झंझारपुर से जदयू के रामप्रीत मंडल ने वीआईपी के सुमन कुमार महासेठ को हराया। नवादा से भाजपा के विवेक ठाकुर ने राजद के श्रवण कुशवाहा को हराया। सुपौल से राजद के दिलकेश्वर कामत ने राजद के चंद्रहास चौपाल से पराजित किया। जमुई से लोजपा रामबिलास पासवान के अरूण भारती ने राजद के अर्चना रविदास ने हराया। अररिया से भाजपा के प्रदीप सिंह न राजद के शाहनवाज आलम को हराया। किशनगंज से कांग्रेस के मोहम्मद जावेद ने जदयू के मुसाहिद आलम को हराया। कटिहार से कांग्रेस के तारिक अनवर ने जदयू के प्रदीप कुमार के साथ हराया।

कटिहार से कांग्रेस के तारिक अनवर ने जदयू के दुलारचंद गोस्वामी को हराने का काम किया। पूर्णिया में निर्दलीय पप्पु यादव ने जदयू के संतोष कुशवाहा ने जीता। मधेपुरा से जदयू के दिनेश चंद्र यादव ने राजद के चंद्रदीप राय को हराया। दरभंगा के भाजपा उम्मीदवार गोपाल जी ठाकुर ने राजद के ललित कुमार यादव को हराया।
मुजफ्फरपुर से भाजपा के राजभुषण निषाद ने कांग्रेस के अजय निषाद को हराया।

मोदी-शाह से मुक्ति पाने का जनता ने दिया स्पष्ट संदेशः राहुल गांधी

प्रातः किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा है कि इस चुनाव में देश के जनादेश ने साफ कर दिया है कि अब उन्हें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह नहीं चाहिए। श्री गांधी ने पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा, यह लड़ाई संविधान को बचाने की थी। यह बात वह तब ही समझ गए थे, जब सरकार ने कांग्रेस के बैंक अकाउंट सील किए, मुख्यमंत्री को जेल में डाला तब मेरे दिमाग में यह बात स्पष्ट हो गयी थी कि अब हिंदुस्तान की जनता संविधान की रक्षा के लिए मिलकर लड़ेगी और मेरा यह पुख्ता भरोसा आज सही साबित हुआ है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस कार्यकताओं और नेताओं ने संविधान को बचाने के लिए सबसे बड़ा कदम उठाया। इसके तहत कांग्रेस पार्टी ने इंडिया समूह के नेताओं को साथ लिया और जहां भी गठबंधन लड़ा ,वहां सबने मिलकर चुनाव लड़ा और देश को एक नया विजन दिया है। श्री गांधी ने कहा, यह चुनाव परिणाम इंडिया गठबंधन का आया है और इसमें संविधान को बचाने का हमारा अभियान सफल रहा। देश ने इस चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को साफ कह दिया है कि देश अब उन्हें नहीं चाहता है। कांग्रेस नेता ने कहा, देश को बचाने का काम हिंदुस्तान के गरीब लोगों ने किया है, आदिवासियों ने किया, मजदूरों ने किया है। उन्हें समझ में आ गया था कि संविधान देश की आवाज है।

संक्षिप्त समाचार

जेल की दीवारों पर कैदी ने बनाए देवी-देवता और महापुरुषों के चित्र

हरिद्वार, एजेंसी। जिला कारागार रोशनाबाद में बंद कैदी जेल की साज-सज्जा कर कुछ न कुछ नया काम कर रहे हैं। आजीवन कारावास की सजा काट रहे एक कैदी ने अपने हाथों से जेल की दीवारों पर देवी-देवताओं और महापुरुषों के चित्र बनाए हैं। कैदी के हाथों की चित्रकारी दीवारों पर देखकर अफसर भी प्रशंसा कर रहे हैं। इससे पहले एक कैदी ने कई महापुरुषों की मूर्तियां बनाई थी। रोशनाबाद जेल में बंद कैदियों में सकारात्मकता लाने के लिए वरिष्ठ जेल अधीक्षक मनोज कुमार आर्य प्रयास करते रहते हैं। जेल में बैकरी के साथ ही रेडीमेट कपड़े, पैकिंग, फर्नीचर सहित कार्य किए जा रहे हैं। अब सलाखों के पीछे चारों तरफ बनी ऊंची दीवारों को देखकर नकारात्मक छवि मन में न आए इसके लिए महापुरुषों की चित्रकारी खुद एक कैदी ने करनी शुरू कर दी। जेल अधीक्षक मनोज कुमार आर्य की मानें तो हत्या के मामले में आजीवन की सजा काट रहे कैदी घनश्याम गुप्ता ने करीब दो महीने की मेहनत से देवी देवताओं, महापुरुषों, वीर सैनिकों, चिपको आंदोलन से जुड़े चित्र बनाए हैं। बैरकों को गंगोत्री, यमुनोत्री, मानसरोवर और महिला बैरक को शारदा नाम दिया है। जिससे कैदियों की सोच सकारात्मक बनी रहे है।

नारसन बॉर्डर पर उमड़ी भीड़, वाहनों की लगी कतारें

रूड़की, एजेंसी। वीकेंड पर नारसन बॉर्डर पर वाहनों का रेला उमड़ पड़ा। दोपहर बाद बॉर्डर पर वाहनों की लंबी कतारें लग गईं जिससे जाम की स्थिति बन गई। इस बीच पुलिस ने हाईवे पर उतरकर स्थिति को संभाला और बेतरतीब चल रहे वाहनों को साइड कराया। साथ ही हाईवे किनारे खड़े होने वाले वाहनों को आगे के लिए रवाना किया। चारधाम यात्रा और वीकेंड के मद्देनजर बड़ी संख्या में राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, यूपी, राजस्थान, मध्यप्रदेश समेत अन्य राज्यों से सैलानी व श्रद्धालु उत्तराखंड पहुंच रहे हैं। पंजीकरण प्रक्रिया अनिवार्य होने पर नारसन बॉर्डर पर वाहनों को रोककर उनके पंजीकरण की जांच की जा रही है। बॉर्डर पर सुबह से लेकर शाम तक वाहनों की भीड़ उमड़ रही है। ऐसे में बॉर्डर पर रोजाना जाम लग रहा है। इससे बाहरी राज्यों से आ रहे लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। रविवार को एक बार फिर नारसन बॉर्डर पर वाहनों का रेला उमड़ पड़ा। दोपहर बाद वाहनों की लंबी कतारें लग गईं जिससे जाम के हालात बन गए। नारसन बॉर्डर पर संयुक्त जांच चौकी है। जिसपर बाहरी राज्यों से आने श्रद्धालुओं के चारधाम के पंजीकरण की जांच की जा रही है। जांच के बाद ही उन्हें आगे के लिए रवाना किया जा रहा है। ऐसे में पंजीकरण काउंटर पर लोगों की लाइन लग रही है।

मुखिया विहीन हैं अल्मोड़ा के 17 बालिका इंटर कॉलेज

अल्मोड़ा, एजेंसी। जिले में संचालित 21 जीजीआईसी में से 17 विद्यालय प्रधानाचार्य विहीन हैं। प्रभारी प्रधानाचार्यों के पास आहरण वितरण का अधिकार न होने से विद्यालय में बिलों के भुगतान सहित अन्य लेन देन संबंधी काम प्रभावित हो रहे हैं। इन स्कूलों में वरिष्ठ प्रवक्ताओं को प्रभारी प्रधानाचार्य का पदभार दिया गया है लेकिन उन्हें आहरण-वितरण का अधिकार नहीं हैं। ऐसे में विद्यालय में किए जाने वाले विकास कार्यों के बिलों के भुगतान, लेन देन संबंधी कार्य नहीं हो रहे हैं। प्रभारी प्रधानाचार्यों को वित्तीय कार्यों के लिए बीईओ या संबंधित आहरण-वितरण अधिकारी के कार्यालय के चक्कर काटने पड़ रहे हैं।

पेट्रोल पंप स्वामी से मांगी पांच लाख रुपये रंगदारी

अल्मोड़ा, एजेंसी। नगर में एक पेट्रोल पंप स्वामी से पांच लाख रुपये रंगदारी मांगने का मामला सामने आया है। रुपये न देने पर जान से मारने और पंप में आग लगाने की धमकी दी है, इससे पीड़ित दहशत में है। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। नगर के मल्ला कसार, जाखनदेवी निवासी अशोक कुमार पाली ने तहरीर देते हुए कहा कि क्वारब स्थित पेट्रोल पंप में वह हिस्सेदार है। कुछ दिन पूर्व उनके मोबाइल नंबर पर व्हाट्सएप कॉल कर आरोपी ने अपना नाम इमराज मिर्जा बताते हुए पांच लाख रुपये रंगदारी मांगी।

हल्द्वानी में उमस भरी गर्मी के बीच बिजली कटौती से जनता परेशान

नैनीताल, एजेंसी। हल्द्वानी में सुबह से रात तक बार-बार गुल होती रही बिजली से सोमवार को भी उपभोक्ता परेशान रहे। गर्मी में परेशान हो रहे लोगों का कहना था कि बार-बार बिजली जाने से उनके उपकरणों के खराब होने का भी खतरा है।

हल्द्वानी में सुबह से रात तक बार-बार गुल होती रही बिजली से सोमवार को भी उपभोक्ता परेशान रहे। विभाग के अधिकारी बिजली गुल रहने की बात को नकारते रहे। इस दौरान गर्मी में परेशान हो रहे लोगों का कहना था कि बार-बार बिजली जाने से उनके उपकरणों के खराब होने का भी खतरा है।

सीएम पुष्कर सिंह धामी की ओर से जनता तक निर्बाध बिजली पहुंचाने के आदेशों को ऊर्जा निगम के अधिकारी मान नहीं रहे हैं। लाइनों में हो रहे ओवरलोड को कम करने के लिए विभाग दिन भर अलग-अलग इलाकों की बिजली काट रहा है। इससे उपभोक्ताओं को गर्मी और उमस झेलने को मजबूर होना पड़ रहा है। सोमवार को भी दिन में 33 केवी बिजलीघर से केडी उपसंस्थान से जुड़े फीडरों में लोड बढ़ गया। इस दौरान राजपुरा, महिला अस्पताल, रामपुर रोड, मंगल पड़ाव, इंदिरानगर और कमलुवागांजा में लोड कम करने के लिए विभाग शटडाउन लेता रहा। पूरे डेढ़ घंटे तक अलग-अलग फीडरों पर रात आठ बजे से सप्लाई रात नौ बजे तक सुचारु हो पाई। ग्रामीण इलाकों में भी बार-बार बिजली गुल होती रही।

वर्तमान में शहर की पांच लाख की आबादी में शहर और ग्रामीण को मिलाकर एक लाख कनेक्शन हैं। लालकुआं से रानीबाग तक 14 बिजलीघरों में मई में मांग 178 मेगावाट पहुंच गई है। अप्रैल में मांग 146 मेगावाट थी। विभाग इसके लिए ट्रांसफार्मरों की क्षमता बढ़ा रहा है। ईई (टाउन) प्रदीप कुमार बिष्ट ने बताया कि बाजार क्षेत्र दिन-भर कहीं भी बिजली गुल होने की शिकायत नहीं मिली। ईई (ग्रामीण) डीडी पांगती ने बताया कि मौसम खराब होने के दौरान लाइन ट्रिप होने की समस्या को देखते हुए सप्लाई थोड़ी देर के लिए बंद की गई।

जल्द बनेंगे तीन नए बिजली घर, उपभोक्ताओं को मिलेगी राहत- हल्द्वानी, एजेंसी। लगातार बढ़ रही बिजली की मांग और लोड की समस्या को दूर करने के लिए ऊर्जा निगम शहर के ग्रामीण क्षेत्र में 33 केवी के तीन नए बिजली घर बनाने जा रहा है। इससे लगभग 70 हजार की आबादी को राहत मिलेगी। विभाग ने जिलाधिकारी की संस्तुति पर प्रस्ताव शासन को भेजा है। विभागीय सूत्रों के मुताबिक इन दिनों कमलुवागांजा बिजली घर पर अधिक लोड है। इससे जुड़े उपभोक्ताओं के कनेक्शनों में लोड बढ़ने से बार-बार ट्रिपिंग की समस्या हो रही है।

नगर निकायों के प्रशासकों का कार्यकाल 3 माह और बढ़ा, शहरी विकास विभाग के प्रमुख सचिव ने जारी किया आदेश

देहरादून, एजेंसी। उत्तराखंड सरकार ने रविवार को नगर निकायों के बोर्ड के प्रशासकों का कार्यकाल तीन माह के लिए और बढ़ा दिया। प्रदेश के शहरी विकास विभाग के प्रमुख सचिव आरके सुधांशु ने इस संबंध में यहां आदेश जारी किया।

आदेश में कहा गया है कि लोकसभा चुनाव के कारण लगी आचार संहिता के प्रभावी होने के कारण नगर निकायों के चुनाव की प्रक्रिया में संभावित विलंब को देखते हुए प्रशासकों का कार्यकाल तीन माह या नगर निकायों के बोर्ड का गठन होने तक बढ़ा दिया गया है।

बता दें कि एक दिसंबर 2023 में नगर निकायों के बोर्ड का कार्यकाल समाप्त होने के कारण सरकार ने संबंधित जिलों के जिलाधिकारियों को अग्रिम आदेशों तक उनका प्रशासक नियुक्त कर दिया था।

एसटीएफ के हाथ लगी बड़ी सफलता, 3 राज्यों के लिए सिरदर्द बना बदमाश दिल्ली से गिरफ्तार

देहरादून, एजेंसी। उत्तराखंड विशेष कार्यबल (एसटीएफ) ने तीन राज्यों की पुलिस के लिए सिरदर्द बने 50 हजार रुपये के इनामी बदमाश को दिल्ली से गिरफ्तार कर लिया।

एसटीएफ में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) आयुष अग्रवाल ने यहां रविवार को बताया कि उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश तथा दिल्ली में तीन दर्जन से अधिक चोरी, लूट और हत्या के प्रयास की घटनाओं में शामिल सगीर को शनिवार को दिल्ली के बाबूनगर, मुस्तफाबाद क्षेत्र से गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होंने बताया कि मुखबिर से मिली सूचना पर कार्रवाई करते हुए उत्तर प्रदेश के रामपुर जिले के टांडा क्षेत्र के इस हिस्ट्रीशीटर को गिरफ्तार करने के लिए पिछले एक सप्ताह से एसटीएफ की टीम दिल्ली में डेरा डाले हुई थी।

अग्रवाल ने बताया, ÷कुल 38 घटनाओं में शामिल सगीर की गिरफ्तारी के लिए पिछले एक साल से तीनों राज्यों की पुलिस जगह-जगह छापेमारी कर रही थी। अपराधी की गिरफ्तारी के लिए उत्तराखंड के उधम सिंह नगर जिले और उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले की पुलिस ने उस पर 25-25 हजार रुपए के इनाम की घोषणा भी की थी।

स्याल्दे में फर्जी दस्तावेज तैयार कर बेच दी दूसरे की जमीन

अल्मोड़ा, एजेंसी। स्याल्दे में फर्जी दस्तावेज तैयार कर दूसरे की जमीन बेच डाली। न्यायालय के आदेश पर पांच के खिलाफ धोखाधड़ी और अन्य धाराओं में केस दर्ज हुआ है। स्याल्दे के ऐराड़ी बिष्ट गुमटी निवासी दीवान सिंह मेहरा ने न्यायालय में वाद दायर किया। इसमें बताया कि वह जून 2023 में दिल्ली से गांव लौटा। उसे जानकारी मिली कि गांव के ही दो सगे भाई इंद्र सिंह और चंद्र सिंह ने फर्जी दस्तावेज तैयार कर सीमा जिंदल निवासी टैगालाइन रामनगर, अल्पना रावत और अनुपमा रावत निवासी मनराल टनोला सल्ट को उसकी पैतृक जमीन बेच दी। मामले में पूछने पर आरोपियों ने उसे धमकाया और कुछ भी कार्रवाई करने पर जान से मारने की धमकी दी। कहा कि न्याय के लिए उसने पुलिस-प्रशासन के चक्कर काटे, लेकिन राहत नहीं मिली। मजबूरन उसे न्यायालय की शरण में जाना पड़ा।

सैलानियों से नैनीताल के पर्यटक स्थल गुलजार

नैनीताल। मैदानी क्षेत्रों में गर्मी बढ़ने से सैलानियों ने नैनीताल की ओर रुख करना शुरू कर दिया है। सोमवार को भी सैलानियों से नैनीताल के पर्यटक स्थल गुलजार रहे। माल रोड समेत नगर के अधिकांश होटलों में दिन भर सैलानियों की आवाजाही रही और अधिकांश पार्किंग स्थल वाहनों से पैक नजर आए।

बता दें जैसे जैसे तराई भाबर में गर्मी बढ़ रही है। हिल स्टेशनों की ओर आने वाले सैलानियों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। सोमवार को सुबह से ही नैनीताल, भीमताल, भवाली, सातताल, नौकुचियाताल आदि क्षेत्रों में सैलानियों का पहुंचना शुरू हो गया था जो देर शाम तक जारी रहा। नैनीताल पहुंचे सैलानियों ने माल रोड, तिब्बती भोटिया बाजार, पंत पार्क, स्नोव्यू, हनुमानगढ़ी, बारपत्थर, हिमालय दर्शन, चिड़ियाघर, केव गार्डन में मौज मस्ती की और रोपवे से स्नोव्यू तक की सैर की। बड़ी संख्या में सैलानियों ने नैनीझील में नौका विहार किया जबकि घुड़सवारी के शौकीन बारापत्थर पहुंचे। नगर में सैलानियों की आवाजाही बढ़ने के बाद तल्लीताल और मल्लीताल स्थित पार्किंग स्थल भी वाहनों से पैक नजर आए।

जंगल की आग ने लील ली नव विवाहिता की जान, चार एंबुलेंस बदली पर एम्स पहुंचने तक तोड़ा दम

देहरादून, एजेंसी। बीती शाम पूजा जंगल की आग में झुलस गई थी। जिसके बाद उसे अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद एम्स रेफर किया गया था। लेकिन यहां जाने से पहले ही उसकी मौत हो गई।

देवप्रयाग क्षेत्र की क्रीली पालकोट पट्टी के गोदाण गांव में रविवार को जंगल की आग से झुलसी नव विवाहिता की मौत हो गई। एम्स ऋषिकेश पहुंचते ही डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद शव को अंतिम संस्कार के लिए परिजनों को सौंपा दिया है। वहीं परिजनों व पूजा के मायके की ग्राम प्रधान ने समय पर एंबुलेंस सेवा न मिलने और स्वास्थ्य विभाग की लचर व्यवस्था पर सवाल खड़े किए हैं।

रविवार को शाम चार बजे के करीब 21 वर्षीय पूजा पत्नी अरविंद सिंह आग से झुलस गई थी। आनन-फानन में परिजन पूजा को सीएचसी बागी ले गए। यहां पूजा का प्राथमिक उपचार करने के बाद ऋषिकेश एम्स के लिए रेफर कर दिया गया, लेकिन जिस अस्पताल की एंबुलेंस से उसे ले जाया जा रहा था वह शिवमूर्ति के समीप खराब हो गई। यहां पहुंची दूसरी 108 सेवा की एंबुलेंस भी साकनीधार में खराब हो गई।

इसके बाद पौड़ी क्षेत्र की ऋषिकेश से श्रीनगर की ओर आ रही 108 एंबुलेंस ने पूजा को साकनीधार से कौड़ियाला तक पहुंचाया। शिवपुरी से चौथी एंबुलेंस कौड़ियाला तक पहुंची तब इसके जरिए उसे एम्स पहुंचाया गया, लेकिन एम्स पहुंचने पर डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। बगसारी के उपप्रधान मनोहर रणाकोटी व पूजा के मायके कुर्न गांव की प्रधान पुष्पा रावत ने कहा कि पूजा को एम्स ले जाने के लिए चार एंबुलेंस का सहारा लिया गया। यदि एक ही एबुलेंस समय पर उसे एम्स पहुंचा देती तो उसकी जान बच सकती थी।

असहाय बुजुर्गों के लिए निशुल्क ई-रिक्शा की सुविधा शुरू

हरिद्वार, एजेंसी। ज्वालापुर इंटर कॉलेज प्रांगण में वरिष्ठ नागरिक सामाजिक संगठन की बैठक हुई। जिसमें सर्वसम्मति से असहाय बुजुर्गों के लिए निःशुल्क ई-रिक्शा सवारी की सुविधा शुरू की गई। असहाय बुजुर्ग फोन नंबर पर संपर्क कर लाभ ले सकते हैं। साथ ही कई मुद्दों चर्चा हुई। बैठक में सर्वप्रथम उत्कर्ष बैंक की तरफ से सुविधा के बारे में संगठन सदस्यों को जानकारी दी गई। बताया कि दो वर्ष के फिक्स्ड डिपॉजिट पर बैंक 9.1त्न ब्याज तथा बचत खाते पर 6त्न ब्याज देता है। जो अन्य बैंकों की अपेक्षा अधिक है। सभी सदस्यों को बैंक मे धन जमा कर अधिक ब्याज का लाभ लेने की राय दी। अध्यक्ष चौधरी चरण सिंह ने बताया कि ऐसा देखने में आया है कि कुछ लाचार एवं सीनियर वरिष्ठ नागरिक सवारी के अभाव में अस्पताल नहीं जा पाते हैं। संगठन ने बैठक में प्रस्ताव पारित कर असहाय वरिष्ठ नागरिकों को परेशानी के समय या इमरजेंसी में अस्पताल आने जाने के लिए ई-रिक्शा की सुविधा देने का निर्णय लिया है। सुविधा के लिए मोबाइल नंबर 9264991075 या 9837472421 पर संपर्क कर सकते हैं। साथ ही शास्त्री नगर कॉलोनी की मेन रोड और शारदानगर अंडरपास के समीप स्पीड ब्रेकर का निर्माण, शास्त्री नगर में जर्जर बिजली के खंभों को बदलने की भी मांग उठाई गई। इस दौरान विद्यासागर गुप्ता, सुखबीर सिंह, एससीएस भास्कर, हरदयाल अरोड़ा, महेंद्र सिंह चौहान, रामबचन सिंह, रामसागर सिंह, सुभाष ग्रोवर, श्याम सिंह आदि मौजूद रहे।

मेडिकल कॉलेज में एक माह बाद भी नहीं आई एंटी रैबीज वैक्सीन

अल्मोड़ा, एजेंसी। मेडिकल कॉलेज के अधीन बेस अस्पताल में एक महीने से कुत्ते, बंदरों के काटने का उपचार बंद है। अब तक अस्पताल को एंटी रैबीज वैक्सीन नहीं मिल सकी हैं। ऐसे में इन जानवरों के हमले में घायल होकर हर रोज अस्पताल पहुंच रहे 10 से 15 लोग उपचार के लिए भटकने के लिए मजबूर हैं।

मेडिकल कॉलेज के अधीन बेस अस्पताल में स्वास्थ्य सेवाएं बेहतर नहीं हो पा रही हैं। एक महीने पहले यहां एंटी रैबीज वैक्सीन खत्म हो गई थीं, इसकी अब तक व्यवस्था नहीं हो सकी है। कुत्ते और बंदरों के हमले में जिले के विभिन्न हिस्सों से 10 से अधिक घायल उपचार के लिए अस्पताल पहुंच रहे हैं। अस्पताल प्रबंधन उन्हें वैक्सीन खत्म होने का हवाला दे रहा है। ऐसे में ये घायल अन्य अस्पतालों की दौड़ लगाने के लिए मजबूर हैं। उन्हें या तो निजी अस्पतालों में जाकर वैक्सीन खरीदनी पड़ रही है या चार किमी दूर जिला अस्पताल की दौड़ लगानी पड़ रही है। चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अशोक कुमार ने कहा कि वैक्सीन की डिमांड भेजी गई है। उम्मीद है जल्द उपलब्ध होंगी। संवाद

मेडिकल कॉलेज और इसके अधीन बेस अस्पताल में अब तक रेडियोलॉजिस्ट की तैनाती नहीं हुई है। यहां पहुंचने वाले मरीजों और गर्भवतियों को राहत देने के लिए स्वास्थ्य विभाग ने उधारी में रेडियोलॉजिस्ट दिया था, इन्हें एक महीने पहले जिला अस्पताल वापस बुला लिया गया। तब से यहां अल्ट्रासाउंड ठप हैं और मरीजों और गर्भवतियों को जांच के लिए भटकना पड़ रहा है। प्राचार्य प्रो. सीपी भैंसोड़ा ने कहा कि रेडियोलॉजिस्ट की तैनाती के प्रयास हो रहे हैं।

अल्मोड़ा से हल्द्वानी की तरफ जा रही कार नदी में गिरी, दंपती घायल

गरमपानी, एजेंसी। भवाली-अल्मोड़ा राष्ट्रीय राजमार्ग पर अल्मोड़ा से हल्द्वानी की तरफ जा रही कार सामने से आ रहे वाहन को बचाने के प्रयास में कोसी नदी में जा गिरी। हादसे में कार सवार दंपती घायल हो गए। चालक बाल-बाल बच गया। सूचना पर मौके पर पहुंचे खैरना चौकी प्रभारी धमेंद्र कुमार ने घायलों को अपनी निजी कार से सीएचसी गरमपानी पहुंचाया। हादसे में श्रद्धेय सिंह (28) पुत्र केदार सिंह बिष्ट और उनकी पत्नी सोनल बिष्ट निवासी मुनस्यारी पिथौरागढ़ गंभीर घायल हो गए। कार चालक खीमानंद भट्ट निवासी हल्द्वानी को चोट नहीं आई।

विवाहिता की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत

रामनगर, एजेंसी। कालाढूंगी थाना क्षेत्र के ग्राम पाटकोट में एक विवाहित की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। परिजनों ने महिला के पति और ससुरालियों उसकी हत्या का आरोप लगाया है। पुलिस जांच में जुटी है। ग्राम डोनपरेवा निवासी किरन का विवाह करीब 13 वर्ष पहले ग्राम पाटकोट निवासी नवीन कर्नाटक के साथ हुआ था। महिला के परिजनों का आरोप है कि पिछले कई वर्षों से उसका पति नवीन और ससुराल वाले महिला का उत्पीड़न कर रहे थे। कई बार गांव में पंचायत के बाद दोनों पक्षों में समझौता भी हो गया था। महिला के परिजनों ने पति नवीन और उसके ससुरालियों पर किरन को जहर देकर मारने का आरोप लगाया है। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर रामनगर के सरकारी अस्पताल पहुंचाया। महिला की शव का पोस्टमार्टम करने के बाद ससुरालियों को सौंप दिया। कालाढूंगी थानाध्यक्ष भगवान सिंह मेहर ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद वैधानिक कार्रवाई की जाएगी। महिला के दो बेटे हैं।

होटल में आग लगने की सूचना पर मची खलबली

नैनीताल, एजेंसी। नैनीताल के गेठिया क्षेत्र में होटल में आग लगने की सूचना से खलबली मच गई। सूचना पर दमकल की टीम मौके पर पहुंची तो पता चला कि आग जंगल में।लगी है। जानकारी के अनुसार सोमवार शाम सात बजे नैनीताल के समीप गेठिया क्षेत्र के होटल में आग लगने की सूचना से खलबली मच गई। दमकल की टीम मौके पर पहुंची तो होटल में आग नहीं मिली। एफएसओ किशोर उपाध्याय ने बताया कि लोगों से बात करने पर पता चला कि आग जंगल में लगी थी जो होटल की ओर आ रही थी। बारिश के दौरान आग बुझ गई। बताया कि सुरक्षा की दृष्टि से दमकल को भेजा गया।

जनता का जनादेश भाजपा के खिलाफ, नैतिकता के आधार पर इस्तीफा दें नरेंद्र मोदी- आप

जानकारी

- चुनाव का ये परिणाम संदेश दे रहा है कि जनता महंगाई, बेरोजगारी और तानाशाही से दुखी है और भाजपा सरकार से मुक्ति चाहती है- संजय सिंह

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी ने लोकसभा चुनाव के जनादेश को भाजपा की नफरत और तानाशाही की राजनीति के खिलाफ बताते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से इस्तीफे की मांग की है। आप के वरिष्ठ नेता एवं सांसद संजय सिंह ने कहा कि देश की जनता का जनादेश भाजपा के खिलाफ है। भाजपा को बहुमत नहीं मिल रहा है। लिहाजा नरेंद्र मोदी को नैतिकता के आधार पर प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा दे देना चाहिए। चुनाव परिणाम से संदेश साफ है कि जनता ने महंगाई, बेरोजगारी और तानाशाही से दुखी होकर ह्यभाजपा वापस जाओह्ल का नारा दिया है। लोग समझ गए थे कि संविधान व आरक्षण को खत्म करने और अपने पूंजीपति मित्रों को फायदा पहुंचाने के लिए मोदी जी को 400 सीटें चाहिए। वहीं, दिल्ली प्रदेश संयोजक गोपाल राय ने कहा कि आम आदमी पार्टी ने सबसे विपरित परिस्थितियों में चुनाव लड़ा। इसके बाद भी पंजाब में हमारे सांसदों की संख्या बढ़ रही है और दिल्ली में हमने भाजपा को कड़ी टक्कर दी है।

जनता ने बाबा साहब के संविधान और आरक्षण को बचाने के लिए वोट किया- संजय सिंह

लोकसभा चुनाव के नतीजों को लेकर आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं राज्यसभा सदस्य संजय सिंह, प्रदेश संयोजक एवं कैबिनेट मंत्री गोपाल राय और राष्ट्रीय सचिव पंकज गुप्ता ने संयुक्त प्रेसवार्ता की। संजय सिंह ने देश की जनता को बधाई देते हुए कहा कि जनता ने दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र महापर्व में हिस्सा लिया। ये चुनाव कई प्रकार के संदेश दे रहे हैं। इस चुनाव में जनता द्वारा सबसे बड़ा संदेश दिया गया है कि 10 साल के बीजेपी शासन से लोग दुखी और परेशान हैं। जनता इस सरकार को हटाना चाहती है। लोग महंगाई, बेरोजगारी और तानाशाही से दुखी हैं। जिस तरह से इस चुनाव में धन-बल, ईडी सीबीआई, इनकम टैक्स, पुलिस बल का इस्तेमाल किया गया, सारे विपक्ष को पकड़कर जेल मे डाला गया। आम आदमी पार्टी के मुखिया अरविंद केजरीवाल, पूर्व शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया और स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन को जेल में डाला गया। पूरे चुनाव को प्रभावित करने की एक गहरी साजिश रची गई। इसके बावजूद भारत के लोकतंत्र की ये खूबसूरती है कि देश की महान जनता ने ह्यबीजेपी वापस जाओह्ल का नारा है। जनता ने बाबा साहब के संविधान, दलितों, पिछड़ों, शोषितों और आदिवासियों को मिले आरक्षण को बचाने के लिए वोट किया।

ये चुनाव परिणाम भारत में नफरत और तानाशाही की राजनीति के खिलाफ है- संजय सिंह ने कहा कि इन चुनावी नतीजों में बीजेपी को बहुमत मिलता नजर नहीं आ रहा है। पिछली बार की तुलना में बीजेपी की लगभग 60 सीटें कम हो रही हैं। अब अगर प्रधानमंत्री मोदी में जरा सी भी नैतिकता है तो उनको इस्तीफा दे देना चाहिए। क्योंकि उन्होंने तो 400 पार का नारा दिया था। लेकिन देश की जनता समझ गई की इन्हें 400 पार देश के संविधान को बदलने, आरक्षण खत्म करने और अपने पूंजीपति मित्रों को फायदा पहुंचाने के लिए चाहिए। इसलिए देश की जनता ने ये परिणाम दिया है। बीजेपी के लिए ये बहुत बड़ा सबक है, लेकिन शायद वो ये सबक नहीं लेंगे। क्योंकि उन्हें तो झगड़ा करना है। ये चुनाव का परिणाम भारत में नफरत और तानाशाही की राजनीति के खिलाफ है। ये इस बात का भी संकेत है कि नफरत की बुनियाद पर हिन्दुस्तान नहीं बनेगा, मोहब्बत की बुनियाद पर बनेगा। इसलिए मैं इस देश की की महान जनता को बधाई देना चाहता हूं कि लोकतंत्र के इस महापर्व में आपने हिस्सा लिया। जनता ने एग्जिट पोल के नतीजों को पूरी तरह से ध्वस्त किया और ये बताया कि हम लोकतंत्र में अपने मुद्दों के आधार पर वोट देंगे, पार्टियों का चयन करेंगे। किसी को भी इस अहंकार में नहीं रहना चाहिए कि वो हमेशा के लिए इस देश में अपनी तानाशाही की हुकूमत चलाएंगे। बजरंग बलि ने अपने आप को अवतारी कह रहे प्रधानमंत्री को बड़ा सबक दिया है- संजय सिंह जब से प्रधानमंत्री जी ने कहा कि उनका जन्म बायोलॉजिकल नहीं है, उन्होंने अवतार लिया है। वो अपने आप को भगवान से भी ऊपर मानने लगे। क्योंकि उनकी पार्टी गाना गा रही थी कि जो राम को लाए हैं हम उनको लाएंगे। इनको इतना अहंकार हो गया कि ये भगवान श्री राम को लाने का दावा करने लगे, भगवान जगन्नाथ को मोदी जी का भक्त बताने लगे। आज मंगलवार बजरंग बली का दिन है और उनको एक संदेश प्रभु श्री राम, हनुमान जी और इस देश की जनता ने दिया है। वो उससे कितना सबक लेते हैं ये तो मालूम नहीं, लेकिन ये भारत के लोकतंत्र की महान जनता है जो ये बताने के लिए खुद मैदान में आई की आप इस देश में तानाशाही की सरकार नहीं चला सकते। भाजपा ने फर्जी एग्जिट पोल कराकर लोगों पर मनोवैज्ञानिक दबाव बनाने की कोशिश की- गोपाल राय आप के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष गोपाल राय ने कहा कि जिस, समय चुनाव का सातवां चरण समाप्त हुआ और एग्जिट पोल आए। सात चरणों के चुनाव में देश की जनता लगातार ये संदेश दे रही थी कि वो बीजेपी की तानाशाही, महंगाई और बेरोजगारी को खत्म करने के लिए अपना जनादेश दे रही है। लेकिन जिस तरह से जनता के संदेश को जानते और समझते हुए आखिरी समय में भी बीजेपी की केंद्र सरकार और प्रधानमंत्री ने पूरे मीडिया चैनल को जिस तरह से मैनेज किया और फर्जी एग्जिट पोल घोषित करके लोगों के साइकोलॉजिकल माइंड पर जिस तरह से दवाब बनाने की कोशिश की गई, ये जनादेश उनके भी खिलाफ है। आम आदमी पार्टी ने शायद इस देश में जितनी पार्टियां हैं उसमें सबसे विपरीत परिस्थिति में हमने ये चुनाव लड़ा।

दिल्ली के सातों सीटों पर खूब दबा नोटा का बटन, नहीं पसंद आया कोई कैंडिडेट, मतगणना जारी

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली की सातों लोकसभा सीटों पर वोटों की गिनती जारी है. सभी सातों सीट पर 7 से 8 राउंड की वोटिंग की गिनती पूरी हो चुकी है. चुनाव आयोग के आकड़ों के मुताबिक सभी सीटों पर भारतीय जनता पार्टी के कैंडिडेट अच्छे मार्जिन के साथ लीड कर रहे हैं. हालांकि, इन सभी सीटों पर वोटर्स ने नोटा पर भी खूब बटन दबाया है.

भारत निर्वाचन आयोग की ओर से जारी आंकड़ों के मुताबिक अब तक की वोटो की गिनती में सबसे ज्यादा नोटा नॉर्थ वेस्ट दिल्ली लोकसभा सीट पर 5204 रिकॉर्ड किया गया है. इसके अलावा उत्तर पूर्वी लोकसभा सीट पर 3469. पूर्वी दिल्ली पर 2753, चांदनी चौक लोकसभा सीट पर 3093, नई दिल्ली पर 2856, नॉर्थ वेस्ट सीट पर 4181, दक्षिणी दिल्ली पर 4782 मतदाताओं ने नोट पर बटन दबाया है.

इस बीच देखा जाए तो चुनाव आयोग की ओर से जारी किए गए अब तक के आंकड़ों में नॉर्थ ईस्ट से बीजेपी के कैंडिडेट मनोज तिवारी, ईस्ट सीट से हर्ष मल्होत्रा, चांदनी चौक से प्रवीण खंडेलवाल, नई दिल्ली से बांसुरी स्वराज, नॉर्थ वेस्ट सीट से योगेंद्र चंदोलिया, साउथ सीट से रामवीर सिंह विधूड़ी और पश्चिमी दिल्ली लोकसभा सीट से कमलजीत सेहरावत अपने निकट प्रतिद्वंदियों से काफी वोटो के अंतराल से आगे चल रही हैं. इन सभी सीटों पर अभी मतगणना जारी है. फाइनल मतगणना होने के बाद नोटा में और ज्यादा बढ़ोतरी होने की प्रबल संभावना है.

बता दें, दिल्ली में इस बार सातों लोकसभा सीटों के लिए बीते माह 25 मई को 89.21 लाख से अधिक मतदाताओं ने मतदान कर लोकतंत्र के इस महापर्व में हिस्सा लिया था. वहीं, आज सातों मतगणना केंद्रों पर कुल 7,000 कर्मी तैनात किए गए हैं. कुल 89,21,495 मतों की गिनती के लिए लगभग 21 से 28 चक्र की मतगणना होगी.

दिल्ली में फिर नहीं खुला किसी तीसरे दल का खाता, इस बार 148 प्रत्याशियों की जमानत जब्त

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

राष्ट्रीय राजधानी में इस बार लोकसभा चुनाव में भाजपा और आईएनडीआईए (कांग्रेस व आम आदमी पार्टी) के प्रत्याशियों के बीच जोरदार मुकाबला हुआ। इस मुकाबले में भाजपा न सिर्फ भारी पड़ी बल्कि राष्ट्रीय राजधानी में लगातार तीसरी बार क्लीन स्वीप किया। भाजपा और प्रतिद्वंदी आईएनडीआईए प्रत्याशियों के अलावा अन्य दलों के एक भी उम्मीदवार और निर्दलीय अपनी जमानत नहीं बचा पाए। बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) के सातों उम्मीदवारों सहित 148 प्रत्याशियों की जमानत जब्त हो गई। खास बात यह कि कांग्रेस और आम आदमी पार्टी (आप) के बीच गठबंधन होने के बावजूद इस बार भी दिल्ली में किसी तीसरे दल का खाता नहीं खुल पाया।

35 वर्षों में किसी तीसरे दल को नहीं मिली सीट दिल्ली में पिछले 35 वर्षों में किसी तीसरे दल को एक भी सीट नहीं मिली। इस दौरान पिछले दस वर्षों में दिल्ली की सात लोकसभा सीटों के लिए हुए तीन चुनावों का परिणाम एकतरफा ही रहा है। बाकी चुनावों में भाजपा व कांग्रेस के प्रत्याशी ही चुनाव जीत पाए थे।

दिल्ली में आखिरी बार वर्ष 1989 के लोकसभा चुनाव में तीसरे दल के रूप में जनता दल ने एक सीट पर जीत दर्ज की थी। तब बाहरी दिल्ली लोकसभा सीट से जनता दल के प्रत्याशी तारीफ सिंह चुनाव जीते थे। इसके बाद अब तक नौ चुनाव हो चुके हैं लेकिन दिल्ली में किसी तीसरे दल को सीट नहीं मिली।

इस बार 162 उम्मीदवार थे मैदान में

इस लोकसभा चुनाव में दिल्ली की सात लोकसभा सीटों के लिए 162 प्रत्याशी चुनावी मैदान में थे। भाजपा और आईएनडीआई गठबंधन के प्रत्याशियों के अलावा बीएसपी ने भी सातों सीटों पर अपने उम्मीदवार चुनावी मैदान में उतारे थे। लेकिन हाथी की चाल बेहद कमजोर रही। इस वजह से बीएसपी के दो उम्मीदवारों को छोड़कर बीएसपी के अन्य उम्मीदवार दस हजार मत भी नहीं पा सके। सिर्फ दो उम्मीदवार ही दस हजार से थोड़ा अधिक मत पा सके।

दिल्ली की आप सरकार से इस्तीफा देखकर नई दिल्ली से बीएसपी प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़े पूर्व मंत्री राजकुमार आनंद को भी छह हजार से कम वोट मिले। इस वजह से उनकी भी जमानत जब्त हो गई। भाजपा, कांग्रेस, आप और बीएसपी के अलावा 141 अन्य उम्मीदवार भी चुनावी मैदान में थे। जिसमें करीब चार दर्जन पंजीकृत गौर मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रत्याशी व निर्दलीय उम्मीदवार शामिल हैं। इन सब की जमानत जब्त हो गई।

जमानत बचाने के लिए 16.5 प्रतिशत मत लाना जरूरी

पिछले लोकसभा चुनाव में दिल्ली की सात लोकसभा सीटों से 164 उम्मीदवार थे। तब विजेता व प्रतिद्वंदी उम्मीदवारों को छोड़कर तीन अन्य प्रत्याशी अपनी जमानत बचाने में कामयाब रहे थे। दिल्ली के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) कार्यालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि जमानत बचाने के लिए लोकसभा क्षेत्र में कुल हुए मतदान का छठा हिस्सा (करीब 16.5 प्रतिशत) वोट लेना होता है। इससे कम वोट मिलने पर प्रत्याशी की जमानत जब्त हो जाती है।

दिल्ली में इस बार के लोकसभा चुनाव व पिछले चार चुनावों में उम्मीदवारों व जमानत जब्त हुए उम्मीदवारों की संख्या

चुनावी वर्ष	उम्मीदवार	जमानत जब्त
2024	162	148
2019	164	147
2014	150	133
2009	160	146
2004	129	115

दिल्ली में भाजपा को कड़ी टक्कर दी; देश के लोगों ने नफरत, तानाशाही के खिलाफ वोट दिया: आप

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी (आप) ने मंगलवार को कहा कि प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद इसके उम्मीदवारों ने दिल्ली में भाजपा को कड़ी टक्कर दी और साथ ही लोगों ने भाजपा की नफरत तथा तानाशाही की राजनीति के खिलाफ मतदान किया। मंगलवार को लोकसभा चुनाव नतीजों के शुरूआती रुझानों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के लिए निराशाजनक नतीजे सामने आए जो उत्तर प्रदेश, हरियाणा और राजस्थान के अपने गढ़ों में बड़ा नुकसान उठाती दिख रही है, हालांकि इसके लगभग 290 सीट के साथ सरकार बनाने की उम्मीद है।

भाजपा दिल्ली की सभी सात लोकसभा सीट पर आगे है और इसके तीन उम्मीदवार एक लाख से अधिक मतों के अंतर से आगे हैं।

आप के राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने यहां एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, मैं देश के मतदाताओं के सामने सिर झुकाना चाहता हूं। आज चुनाव परिणाम आ रहे हैं। तस्वीर साफ होती जा रही है।

उन्होंने कहा, यह चुनाव जनता के लिए एक संदेश है कि वह भाजपा के 10 साल के शासन से थक गई है और उसे बाहर करना चाहती है। लोग महंगाई से परेशान हो गए हैं। यह भारत के लोकतंत्र की सुंदरता है कि लोगों ने भाजपा को वापस जाने के लिए कहा है। भाजपा के 272 के बहुमत के आंकड़े से दूर दिखाई देने पर सिंह ने कहा, नतीजे भाजपा और उसकी नफरत तथा तानाशाही की राजनीति के लिए एक बड़ा सबक हैं। अगर प्रधानमंत्री में थोड़ी सी भी नैतिकता है, तो उन्हें 400 पार का नारा देने के लिए पद छोड़ देना चाहिए।

पार्टी के चुनाव प्रदर्शन के बारे में आप के दिल्ली प्रदेश संयोजक गोपाल राय ने कहा, हमने विपरीत परिस्थितियों में चुनाव लड़ा। पंजाब में सांसदों की संख्या बढ़ेगी। दिल्ली में हमने भाजपा को कड़ी टक्कर दी और इस बार (2019 की तुलना में) अंतर कम है।

पंजाब में आप दो सीट पर आगे है जबकि संगरूर से इसके उम्मीदवार गुरमीत सिंह मीत हेयर चुनाव जीत गए हैं। राय ने कहा कि भाजपा के सहयोगियों- तेदेपा के एन चंद्रबाबू नायडू और जदयू नेता एवं बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि दोनों ने अतीत में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का विरोध किया था। उन्होंने कहा, ह्यदेश के लोग चंद्रबाबू नायडू और नीतीश कुमार से उम्मीद करते हैं कि वे सही समय पर सही निर्णय लेंगे और देश में तानाशाही खत्म करने के उनके आह्वान को सुनेंगे। डसिंह ने कहा कि भविष्य की रणनीति तय करने के लिए इंडिया गठबंधन जल्द ही बैठक करेगा।

स्नातकोत्तर, बीटेक व लॉ इंटीग्रेटेड प्रोग्राम में 12 जून तक होंगे आवेदन

- दिल्ली विश्वविद्यालय ने लोकसभा चुनाव के कारण पंजीकरण करने की तिथि को बढ़ाया
- दो बार बढ़ चुकी है तिथि, पूर्व शेड्यूल के अनुसार 25 मई को समाप्त होनी थी प्रक्रिया

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली विश्वविद्यालय के शैक्षणिक सत्र 2024-25 में स्नातकोत्तर (पीजी), तीन बीटेक प्रोग्राम व पांच वर्षीय लॉ इंटीग्रेटेड प्रोग्राम में दाखिले के लिए पंजीकरण से चूके उम्मीदवारों के लिए अच्छी खबर है। डीयू ने इन तीनों प्रोग्राम में पंजीकरण करने की तिथि को बढ़ाने का फैसला किया है। अब उम्मीदवार इन प्रोग्राम के लिए 12 जून तक आवेदन कर सकते हैं। पूर्व निर्धारित शेड्यूल के अनुसार पंजीकरण करने की अंतिम तिथि पांच जून थी। अंतिम तिथि से पहले ही तिथि को आगे बढ़ा दिया गया है।

इसके साथ ही आवेदक पांच जून से 12 जून तक अपने आवेदन फॉर्म में सुधार कर सकेंगे। डीयू दाखिला डीन प्रो हनीत गांधी ने बताया कि अब उम्मीदवार 12 जून तक आवेदन कर सकते हैं। लोकसभा चुनाव को देखते हुए ही तिथि को आगे बढ़ाया गया है। अब आवेदन करने व फॉर्म में सुधार करने की प्रक्रिया एक साथ चलेगी। पांच जून से आवेदन फॉर्म में सुधार करने की प्रक्रिया शुरू हो जाएगी, जो कि 12 जून तक चलेगी। पंजीकरण के लिए आवेदक दाखिला पोर्टल (ँ३३स्र२://ंि२१ङ्मल्ल.४ङ्मि.ूल्ल/) के माध्यम से विभिन्न कोर्सेज में आवेदन कर सकते हैं। डीयू ने स्नातकोत्तर के 82 प्रोग्राम की 13, 500 सीटों, और पांच वर्षीय इंटीग्रेटेड लॉ प्रोग्राम (बीए एलएलबी और बीबीए एलएलबी) की 60 सीटों पर दाखिले के लिए ऑनलाइन पंजीकरण प्रक्रिया की शुरूआत 25 अप्रैल से की थी।

जबकि तीन बीटेक प्रोग्राम की 360 सीटों पर पंजीकरण प्रक्रिया को 27 अप्रैल से शुरू किया गया था। 25 मई को पंजीकरण करने की अंतिम तिथि थी। लेकिन अंतिम तिथि से पहले ही मंगलवार को पंजीकरण प्रक्रिया की तिथि को आगे बढ़ा दिया गया है। अब तक की पंजीकरण प्रक्रिया के तहत पीजी प्रोग्राम के लिए देशभर से 85 हजार से अधिक, बीटेक के तीन प्रोग्राम के लिए दस हजार से अधिक व लॉ प्रोग्राम के लिए करीब 8 हजार आवेदन प्राप्त हो चुके हैं। अब आवेदन करने की तिथि बढ़ने के कारण आवेदन करने का आंकड़ा और बढ़ जाएगा। इस कारण से एक-एक सीट पर कई आवेदकों की दावेदारी बढ़ जाएगी।

सुप्रीम कोर्ट ने सिसोदिया की जमानत याचिका की खारिज

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने दिल्ली आबकारी नीति से संबंधित धनशोधन मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की गिरफ्तारी के बाद न्यायिक हिरासत में जेल में बंद पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया की जमानत याचिका मंगलवार को खारिज कर दी। न्यायमूर्ति अरविंद कुमार और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की अवकाशकालीन पीठ ने संबंधित पक्षों की दलीलें सुनने के बाद यह आदेश पारित किया। पीठ ने जमानत याचिका पर विचार करने से इनकार करते हुए यह भी स्पष्ट किया कि वह इस मामले के गुण-दोष पर कुछ नहीं कह रही है। याचिकाकर्ता (सिसोदिया) जमानत के लिए नए सिरे से आवेदन करने के लिए स्वतंत्र हैं। ण्शीर्ष अदालत ने कहा, ह्लहम (गुण-दोष पर) कुछ नहीं कहेंगे। हम आपकी प्रार्थनाओं को पुनर्जीवित करने के लिए स्वतंत्रता के साथ निपटारा करेंगे। हम गुण-दोष पर कुछ नहीं कह रहे हैं। शीर्ष अदालत ने ईडी की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता का यह बयान दर्ज किया कि आरोप अंतिम पत्र तीन जुलाई तक दाखिल कर दिया जाएगा। दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री सिसोदिया को 26 फरवरी को गिरफ्तार किया गया था। उन्होंने विशेष अदालत की ओर से जमानत याचिका खारिज होने के बाद दिल्ली उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया था, जहां 21 मई को उनकी अपील खारिज कर दी थी। इसके बाद उन्होंने उच्च न्यायालय के आदेश को शीर्ष अदालत के समक्ष चुनौती दी थी।

गाजियाबाद में कुत्ता काटने को लेकर हुए विवाद में 22 पर एफआईआर, 11 गिरफ्तार

गाजियाबाद। लोनी के बॉर्डर थाना क्षेत्र के संतोष विहार कॉलोनी में एक कुत्ते ने बच्चे को काट लिया। इस पर दो पक्षों में जमकर मारपीट हो गई। जिसमें कई लोग घायल हुए हैं। पुलिस ने दोनों पक्षों के 22 लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर 11 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। एसीपी (अंकुर विहार) भास्कर वर्मा ने बताया कि 16 मार्च से चार जून तक जिले में धारा 144 लागू हैं। उपनिरीक्षक प्रशांत रावत हेड कांस्टेबल जितेंद्र के साथ क्षेत्र में गश्त कर रहे थे। तभी उन्हें सूचना मिली कि सेवाधाम पुलिस चौकी क्षेत्र के अंतर्गत शिशुपाल विहार संतोष विहार कॉलोनी में दो पक्षों में कुत्ते द्वारा बच्चे को काटने पर झगड़ा हो रहा है। दोनों मौके पर पहुंचे। यहां एक पक्ष के राजेंद्र, जितेंद्र, संतोष, कंवरपाल, राजू, विकास, नीरज, रामप्यारी, रामबेटी और दूसरे पक्ष के रोहताश, बृजेश, विपिन, अरुण, नीतू, धनदेही और मधु समेत छह अज्ञात लोग एक दूसरे के साथ मारपीट कर रहे थे। दोनों तरफ से लाठी, डंडे और पथराव हो रहा था। उन्होंने दोनों पक्षों को समझाने की कोशिश की, लेकिन कोई नहीं माना। मारपीट में दोनों तरफ से कई लोगों को चोट लगी है। एसीपी ने बताया कि पुलिस ने दोनों पक्षों के 22 लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की और 11 लोगों को गिरफ्तार कर लिया।

मतगणना के दिन सोशल मीडिया पर साझा किए जा रहे अजीबोगरीब मीम

नई दिल्ली। लोकसभा चुनावों के रुझानों के साथ ही बाजार में गिरावट और एग्जिट पोल के नतीजों को लेकर सोशल मीडिया पर व्यंग्य वाले मीम साझा किए जा रहे हैं। चुनाव परिणामों को लेकर कई लोकप्रिय टीवी शो और फिल्मों पर आधारित मीम सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट किए गए हैं। मतगणना के शुरूआती रुझान एग्जिट पोल के नतीजों से अलग रहे, जिसके चलते शेयर बाजार में भारी गिरावट आई और सेंसेक्स तथा निफ्टी दोनों में भारी गिरावट दर्ज की गई। लोगों ने इस स्थिति पर मजेदार मीम पोस्ट किए। एक्स पर एक यूजर ने शाहिद कपूर अभिनीत फिल्म चुप चुप के का स्क्रीनशॉट पोस्ट किया जिसके साथ लिखा था, निवेशक आज अपना पोर्टफोलियो इसी तरह देख रहे हैं। कुछ लोगों ने टीवी न्यूज चैनलों पर भी निशाना साधा जिन्होंने एग्जिट पोल जारी किए थे। एक यूजन ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, मैं एग्जिट पोल करने वालों को खोज रहा हूं। इस पोस्ट में हिट फिल्म गैंग्स ऑफ वासेपुर की एक तस्वीर भी है। एक अन्य यूजर ने लोकप्रिय वेब सीरीज पंचायत सीजन 3 का एक स्क्रीनशॉट साझा किया और लिखा, ह्यमैं और मेरे पिताजी चुनाव परिणाम देखते हुए।

दिल्ली की सातों लोकसभा सीट पर भाजपा ने लगाई हैट्रिक, गढ़ बचाने में रही सफल

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली की सातों लोकसभा सीट के चुनाव नतीजे अब स्पष्ट हैं. खास बात है कि दिल्ली में बीजेपी अपना गढ़ बचाने में सफल दिख रही है. मंगलवार को दिल्ली बीजेपी के लिए सब कुछ मंगलमय रहा. मंगलवार सुबह दिल्ली की सात अलग-अलग मतदान केंद्रों पर वोटों की गिनती शुरू हुई तो दक्षिणी दिल्ली और चांदनी चौक लोकसभा सीट पर शुरूआत में कुछ उतार-चढ़ाव देखने को मिला.

दक्षिणी दिल्ली से आम आदमी पार्टी की प्रत्याशी सहीराम, तो वहीं चांदनी चौक से कांग्रेस प्रत्याशी जेपी अग्रवाल ने बीजेपी प्रत्याशी से बढ़त हासिल की. कुछ पल के लिए उन दोनों दलों के प्रत्याशियों में खुशी की लहर दौर उठी. लेकिन दिन चढ़ने के साथ ही बीजेपी प्रत्याशियों के पाले में जब वोट गिरने लगे तब उनकी जीत का सिलसिला शुरू होता गया. दिल्ली के सभी सातों लोकसभा सीट पर बीजेपी लगातार बढ़त बनाए रखी और चुनाव नतीजे आने तक सब अच्छी खासी मार्जिन से चुनाव जीत पाए. उत्तर- पूर्वी लोकसभा सीट से लगातार तीसरी बार चुनाव लड़ रहे मनोज तिवारी के खिलाफ कांग्रेस ने कन्हैया कुमार को चुनाव मैदान में उतारा था, लेकिन कन्हैया कुमार का करिश्मा नहीं चल पाया. वह भारी मतों के अंतर से चुनाव हार गए.

एग्जिट पोल को भी झुठलाया: दिल्ली में 2014 और 2019 के लोकसभा चुनाव में भी बीजेपी ने सभी सातों सीट पर जीत दर्ज की थी. हालांकि, चुनाव नतीजे से पहले आए एग्जिट पोल में बताया जा रहा था कि इस बार बीजेपी को एक से दो सीटों का नुकसान हो सकता है. लेकिन ऐसा नहीं हुआ. वर्ष 2024 के तीसरी बार बीजेपी दिल्ली की सातों सीट जीतने में सफल साबित रही.

दिल्ली को कभी माना जाता था कांग्रेस का गढ़: एक समय था जब दिल्ली को कांग्रेस का गढ़ माना जाता था. लेकिन पिछले दो लोकसभा चुनाव में बीजेपी ने दिल्ली में जोरदार प्रदर्शन कर कांग्रेस और आम आदमी पार्टी को कड़ी शिकस्त दी है. वर्ष 2014 और 2019 के लोकसभा चुनाव में दिल्ली में बीजेपी ने एक तरफा जीत दर्ज की थी. इस बार दिल्ली में लगातार तीसरी बार जीत दर्ज कर हैट्रिक लगा पाने में सफल साबित होते हुए दिख रही है.

आप का जेल का जवाब वोट से अभियान फेल: कांग्रेस और आम आदमी पार्टी ने दिल्ली के लोकसभा चुनाव में मिलकर बीजेपी को मात देने की रणनीति बनाई थी. चार सीटों पर आम आदमी पार्टी ने अपने प्रत्याशी उतारे थे तो वहीं कांग्रेस ने तीन सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारे. लेकिन दोनों ही राजनीतिक दलों के प्रत्याशी और पार्टी कोई करिश्मा नहीं कर सकी. आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक व दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को खास तौर पर चुनाव प्रचार के लिए सुप्रीम कोर्ट से अंतरिम जमानत मिली थी.

उन्होंने 21 दिनों में धुरंधर चुनाव प्रचार भी किया था. वह जहां भी चुनाव प्रचार के लिए जा रहे थे, वे दिल्ली की जनता से उन्हें जेल भेजना के कारणों को बताया और कहा कि अगर वह चाहते हैं कि केजरीवाल जेल से बाहर आए तो वह इंडिया गठबंधन के पक्ष में वोट दें. आम आदमी पार्टी ने जेल का जवाब वोट से नाम से कैंपेन भी चलाया था, लेकिन यह कैंपेन दिल्ली में कोई असर नहीं कर पाया.

गाजियाबाद में आरआरटीएस स्टेशनों पर रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम बनाने का काम तेज

गाजियाबाद । दिल्ली-मेरठ रैपिड रेल कॉरिडोर पर स्थित सभी स्टेशनों पर रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम बनाने का काम तेज हो गया है। दिल्ली के सराय काले खां से लेकर मेरठ तक के बीच आरआरटीएस 900 पिट्स बना रहा है। करीब 75 फीसदी काम पूरा करने का दावा किया गया है। एनसीआरटीसी के सीपीआरओ पुनीत वत्स का कहना है कि वैश्विक पर्यावरण लक्ष्यों के अनुरूप वर्षा जल संचयन के लिए प्रभावी तंत्र तैयार किया जा रहा है। इसके तहत दिल्ली के सराय काले खां से लेकर मेरठ के मोदीपुरम तक के एलिवेटेड वायडक्ट, स्टेशनों और डिपो में 900 से ज्यादा वर्षा जल संचयन पिट्स बनाए जा रहे हैं। इन पिट्स के जरिए लाखों क्यूबिक मीटर ग्राउंड वॉटर रिचार्ज हो सकेगा।स्टेशनों पर भी प्रत्येक प्रवेश-निकास द्वारों के पास दो-दो वर्षा जल संचयन पिट्स विकसित किए जा रहे हैं। इस कॉरिडोर पर ट्रेनों के रखरखाव और संचालन के लिए दो डिपो होंगे। एक डिपो दुहाई, गाजियाबाद में बनकर तैयार हो चुका है और दूसरा मोदीपुरम मेरठ में निर्मित किया जा रहा है। दुहाई डिपो में 20 से ज्यादा वर्षा जल संचयन पिट्स बनाए गए हैं। इन पिट्स की गहराई लगभग 16 से 22 मीटर भूजल स्तर के मुताबिक रखी गई है। इस सिस्टम की मदद से भूजल स्तर को बढ़ाने में सहयोग मिलेगा।

हरिद्वार से मथुरा जा रही डबल डेकर बस दुर्घटनाग्रस्त, 35 श्रद्धालु घायल

गाजियाबाद। हरिद्वार से मथुरा जा रही डबल डेकर बस दुर्घटनाग्रस्त हो गई। जिससे उसमें सवार 35 श्रद्धालु घायल हो गए। हादसा दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेस वे पर भोजपुर थाना क्षेत्र के कलछीना गांव के समीप मंगलवार सुबह हुआ। घायल श्रद्धालुओं को उपचार के लिए मोदीनगर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया, जहां 22 को उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई। गंभीर रूप से 13 घायलों को मेरठ मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया गया।श्रद्धालु महाराष्ट्र के रहने वाले हैं। वह सभी एक महीने की धार्मिक यात्रा पर निकले थे। श्रद्धालु सोमवार रात हरिद्वार से मथुरा वृंदावन के लिए चले थे। हादसे के बाद आरोपी चालक ट्रक सहित फरार हो गया। मौके पर पहुंची एक्सप्रेस-वे की पेट्रोलिंग टीम ने घायल श्रद्धालुओं को अस्पताल पहुंचाया। हादसे में बस चालक गंभीर रूप से घायल हो गया। चिकित्सकों के अनुसार, उसके दोनों पैरों की हड्डियां टूट गई। श्रद्धालुओं के मुताबिक, घटना के काफी देर तक वह एक्सप्रेसवे पर तड़पते रहे। बस में करीब 50 श्रद्धालु थे।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

उत्तर रेलवे

निविदा सूचना

(ई–टेंडरिंग द्वारा)

कार्य का नाम तथा स्थान	(1) दिल्ली मंडल पर ट्रेन संचालन के लिए एफओआईएस, सीएमएस, ई–टीएसआर और टीएमएस आदि सर्किट के लिए सुरक्षा व्यवस्था का प्रावधान। (अनुमान क्रमांक 559–सिग–एम ऑफ 23–24)। (2) बड़ौदा हाउस नई दिल्ली में एनेक्सी–1, एनेक्सी–2 और जीएम बिल्डिंग के नवीनीकरण के तहत दूरसंचार सुविधाओं का प्रावधान। (अनुमान संख्या 83/23–24/डब्ल्यूई एवं 85/22–23/डब्ल्यूई)।
कार्य की अनुमानित लागत (₹)	₹1,05,91,778.81/- मात्र
धरोहर राशि (₹)	₹2,03,000/- मात्र
कार्यालय का पता	वरिष्ठ मंडल संकेत एवं दूरसंचार अभियंता–C, तृतीय तल, संकेत एवं दूरसंचार ब्रांच, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, स्टेट एंट्री रोड, नई दिल्ली–110055
निविदा प्रपत्र जमा करने तथा निविदा खुलने का दिनांक तथा समय	निविदा प्रपत्र जमा अपलोड करने का समय दिनांक 27.06.2024 15:00 बजे तक
वेबसाइट एवं नोटिस बोर्ड का स्थान जहां से विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है।	उत्तर रेलवे की वेबसाइट www.ireps.gov.in पर देखें या देखे नोटिस बोर्ड, तृतीय तल, संकेत एवं दूरसंचार ब्रांच, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, स्टेट एंट्री रोड, नई दिल्ली–110055

निविदा संख्या : 558–सिगनल–16–टेली–ओपनटेंडर–1001 दिनाँक : 03.06.2024 1653/2024

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

राष्ट्रीय दैनिक
प्रात: किरण

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें

@Pratahkiran
www.pratahkiran.com
नई दिल्ली, बुधवार, 05 जून, 2024

दिल्ली में तीसरी बार सभी 7 सीटों पर भाजपा का जलवा, विजय रथ रोकने में नाकाम रही आप-कांग्रेस

- दिल्ली वालों ने बदलाव करने की जगह एकतरफा जीत दिलाने में विश्वास जताया
- चांदनी चौक और पूर्वी दिल्ली लोकसभा सीट पर कई चरणों तक कांटे की टक्कर रही

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

सियासत के संग्राम में भाजपा ने दिल्ली में लगातार तीसरी बार क्लीन स्वीप कर जीत का परचम लहराया है। भाजपा ने सातों संसदीय सीटों पर गठबंधन को शिकस्त दी। पड़ोसी राज्य हरियाणा और उत्तर प्रदेश से इतर दिल्ली के मतदाताओं ने लगातार तीसरी बार एकतरफा जीत दिलाने के लिए भाजपा पर भरोसा जताया। चांदनी चौक और पूर्वी दिल्ली लोकसभा सीट पर मतगणना के कई चरणों तक कांटे की टक्कर देखने को मिली, लेकिन नतीजा फाइनल होने तक विपक्ष के सभी प्रत्याशी धराशायी हो गए।

राजधानी में 2014 व 2019 लोकसभा चुनाव में जो ट्रेंड देखने को मिला, 2024 में भी वही रहा। खास बात यह कि गठबंधन ने कन्हैया कुमार, जेपी अग्रवाल और महाबल मिश्रा जैसे दिग्गज नेताओं को चुनाव मैदान में उतारा था। इसके बावजूद ये नेता अपना जादू नहीं बिखेर सके। मतगणना शुरू होते ही चांदनी चौक लोकसभा सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी जेपी अग्रवाल ने भाजपा प्रत्याशी प्रवीण खंडेलवाल से बढ़त हासिल कर ली थी, लेकिन पारा जैसे-जैसे चढ़ता गया जेपी अग्रवाल सुस्त पड़ने लगे। यही हालत पूर्वी दिल्ली संसदीय सीट की भी रही। शुरुआती चरण में बढ़ते हासिल करने वाले आप प्रत्याशी कुलदीप के बाद में भाजपा प्रत्याशी हर्ष मल्होत्रा भारी पड़े। सबसे पहला परिणाम नई दिल्ली लोकसभा सीट का आया, जहां से बांसुरी स्वराज ने जीत दर्ज की। कन्हैया को हराकर तीसरी बार जीते तिवारी चुनाव में यह भी देखने को मिला कि उत्तर-पूर्वी दिल्ली सीट से मनोज तिवारी कांग्रेस नेता कन्हैया कुमार को बड़े अंतर से शिकस्त देकर हैट्रिक लगाने वाले सांसद बन गए। उनके खिलाफ नाराजगी भी नहीं रही। यहां दो पूर्वांचली नेता मैदान में थे, लेकिन जनता ने मनोज तिवारी के पक्ष में ही वोट किया। कमलीत ने भारी अंतर से महाबल को हराया पश्चिमी दिल्ली से गठबंधन से महाबल मिश्रा को मैदान में उतारा गया था, जो कभी दिल्ली के लालू यादव के नाम से मशहूर थे, उन्हें भाजपा की कमलजीत सहरावत ने भारी मतों के अंतर से परास्त कर दिया। इसी तरह उत्तर-पश्चिमी लोकसभा सीट से योगेंद्र चंदोलिया ने गठबंधन के डॉ. उदित राज को बड़े वोटों के अंतर से पटखनी दे दी। पश्चिमी दिल्ली, उत्तर-पूर्वी दिल्ली की तरह गठबंधन का यहां भी पूर्वांचल फैक्टर काम नहीं आया और तीनों प्रत्याशियों को हार का सामना करना पड़ा।

दिल्ली की सभी सातों सीटों पर भाजपा आगे

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी (आप) और कांग्रेस के बीच गठबंधन के बावजूद भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) अपराह्न एक बजे तक दिल्ली की सभी सातों सीटों पर आगे चल रही है।

उत्तर-पश्चिम दिल्ली लोकसभा सीट पर भाजपा प्रत्याशी योगेन्द्र चंदोलिया कांग्रेस के उदित राज से 92252 मतों से अधिक आगे चल रहे हैं। वहीं दक्षिण दिल्ली लोकसभा सीट पर भाजपा प्रत्याशी रामवीर सिंह बिधूड़ी अपने निकटतम प्रतिद्वंदी आम आदमी पार्टी के सही राम से 6424 मतों से अधिक आगे चल रहे हैं।

पश्चिम दिल्ली लोकसभा सीट पर भाजपा प्रत्याशी कमलजीत सेहरावत अपने निकटतम प्रतिद्वंदी आम आदमी पार्टी के महाबल मिश्रा से 67084 मतों से अधिक आगे चल रहे हैं। उत्तर-पूर्वी दिल्ली लोकसभा सीट पर भाजपा के मनोज तिवारी अपने निकटतम प्रतिद्वंदी कांग्रेस के कन्हैया कुमार से 79071 मतों से अधिक आगे चल रहे हैं।

वहीं चांदनी चौक लोकसभा सीट पर भाजपा के प्रवीण खंडेलवाल अपने निकटतम प्रतिद्वंदी कांग्रेस के जे पी अग्रवाल से 19215 मतों से अधिक आगे चल रहे हैं, जबकि पूर्वी दिल्ली लोकसभा सीट पर भाजपा के हर्ष मल्होत्रा अपने निकटतम प्रतिद्वंदी आम आदमी पार्टी के कुलदीप कुमार से 14134 मतों से अधिक आगे चल रहे हैं। नई दिल्ली लोकसभा सीट पर भाजपा की बांसुरी स्वराज अपने निकटतम प्रतिद्वंदी आम आदमी पार्टी के सोमनाथ भारती से 24957 मतों से अधिक आगे चल रहे हैं।

संक्षिप्त खबरें

कांग्रेस की राजग में सेंध लगाने की कोशिश

नई दिल्ली। लोकसभा चुनावों की मतगणना के रूझानों में इंडिया समूह के शानदार प्रदर्शन और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के बहुमत के आंकड़े से दूर रहने के बाद कांग्रेस राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) में सेंध लगाने में जुट गयी है और उसने राजग के सहयोगी तेलुगु देशम पार्टी के साथ संपर्क साधा है जिसे देखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी तेदेपा नेता एन चंद्रबाबू नायडू से टेलीफोन पर बात की है।

रिपोर्टों के अनुसार दोपहर बाद मतगणना के आंकड़ों में भाजपा की सीटें 240 से 245 के बीच अटकने और कांग्रेस नीत इंडिया समूह की सीटें 225 से 227 के आसपास पहुंचते ही कांग्रेस ने राजग के घटक दलों में सेंध लगाने के उद्देश्य से तेदेपा से संपर्क साधा है। यह भी खबर उड़ी कि जनता दल यूनाइटेड के नेता नीतीश कुमार से भी संपर्क साधा जा सकता है। सूत्रों के अनुसार इसके कुछ ही देर बात श्री मोदी ने श्री नायडू से टेलीफोन पर बात की और आंध्र प्रदेश विधानसभा चुनाव में जीत हासिल करने पर बधाई दी। समझा जाता है कि श्री मोदी ने श्री नायडू के साथ केन्द्र में भी सरकार के गठन को लेकर बात की है।

नैतिक आधार पर इस्तीफा दें मोदी: कांग्रेस

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव 2024 की मतगणना के रुझानों के आधार पर कांग्रेस ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का इस्तीफा मांगा है। कांग्रेस के मीडिया प्रभारी एवं राज्यसभा सांसद जयराम रमेश ने मंगलवार को सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा कि श्री मोदी को सत्तारुढ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के प्रदर्शन पर नैतिक जिम्मेदारी लेनी चाहिए और प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देना चाहिए। कांग्रेस नेता ने कहा, अपने आप को अभूतपूर्व होने का दिखावा करते थे। अब साबित हो गया है कि निवर्तमान प्रधानमंत्री भूतपूर्व होने वाले हैं। नैतिक ज़िम्मेदारी लें और इस्तीफा दें। यही इस चुनाव का संदेश है। मतगणना के रुझानों में भारतीय जनता पार्टी को 243 और कांग्रेस को 94 सीटों पर बढ़त मिल रही थी।

कांग्रेस मुख्यालय के बाहर जबरदस्त जश्न, ढोल बजाकर नाच रहे हैं कार्यकर्ता

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव परिणाम के रुझान के बाद तस्वीर जैसे-जैसे साफ हो रही है कांग्रेस मुख्यालय के बाहर पार्टी कार्यकर्ताओं का जमवाड़ा बढ़ रहा है और लोग ढोल नगाड़ों के साथ जश्न मना रहे हैं। कांग्रेस मुख्यालय के बाहर यहां सुबह से ही कार्यकर्ता मौजूद थे लेकिन जैसे-जैसे रुझानों की तस्वीर साफ होती गई और कांग्रेस बढ़त बनाने लगी कार्यकर्ताओं में जोश भरने लगा और ढोल नगाड़ों के साथ वहां जश्न का माहौल शुरू हो गया। कार्यकर्ताओं की भीड़ को देखते हुए मुख्य गेट को बंद कर दिया गया है और कार्यकर्ता बाहर सड़क पर ढोल बजाकर और नाच गाने कर जश्न मना रहे हैं। नाचते गाते कार्यकर्ता हाथों में कांग्रेस का झंडा लेकर फहरा रहे हैं और राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, सोनिया गांधी जिंदाबाद के नारे लगाकर जश्न मना रहे हैं। कांग्रेस मुख्यालय परिसर में सुबह से ही चहल पहल थी। पार्टी ने पहले ही अपने नेताओं और कार्यकर्ताओं को घर पर बैठकर नहीं बल्कि प्रदेश और जिला मुख्यालयों के कार्यालयों में आकर चुनाव नतीजे देखने की हिदायत दी थी। कांग्रेस मुख्यालय परिसर में तो सुबह से ही पूरी और भटूरे बन रहे थे और परिसर में मौजूद नेता कार्यकर्ता उसका स्वाद ले रहे थे। बाद में भीड़ बढ़ने लगी तो गेट को बंद कर दिया गया और कार्यकर्ता बाहर सड़क पर ही जश्न मनाने लगे।

दिल्ली की सभी सात सीट पर भाजपा उम्मीदवार आगे, पार्टी कार्यकताओं ने मनाया जश्न

- खुशी से झूमते हुए पार्टी समर्थकों ने प्रधानमंत्री मोदी की एक बड़ी तस्वीर लगाकर पूजा का आयोजन किया।

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली की सभी सात लोकसभा सीट के रूझान में भाजपा उम्मीदवारों के बढ़त बनाने पर यहां पार्टी मुख्यालय में जश्न का माहौल है। पार्टी कार्यकताओं और समर्थकों ने शंख और ढोल बजाकर जश्न मनाया और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के समर्थन में नारे लगाए। निर्वाचन आयोग के रुझानों के अनुसार, मंगलवार को दिल्ली की सभी सात लोकसभा सीट पर भाजपा आगे है। उत्तर पूर्वी दिल्ली लोकसभा सीट पर मनोज तिवारी 79,000 से अधिक मतों के अंतर से आगे हैं। खुशी से झूमते हुए पार्टी समर्थकों ने प्रधानमंत्री मोदी की एक बड़ी तस्वीर लगाकर पूजा का आयोजन किया। आयोग के आंकड़ों के अनुसार चांदनी चौक सीट पर भाजपा के प्रवीण खंडेलवाल शुरू में कांग्रेस के जय प्रकाश अग्रवाल से पीछे थे, लेकिन बाद में उन्होंने 19,120 से अधिक मतों की बढ़त हासिल कर ली। उत्तर पूर्वी दिल्ली से भाजपा के उम्मीदवार मनोज तिवारी कांग्रेस के कन्हैया कुमार 79,071 मतों से आगे हैं। पश्चिम दिल्ली से भाजपा के उम्मीदवार कमलजीत सहरावत आप के महाबल मिश्रा से 69,296 मतों से आगे हैं, जबकि उत्तर पश्चिमी दिल्ली से भाजपा के उम्मीदवार योगेंद्र चंदोलिया 1,05,266 मतों से आगे हैं। पूर्वी दिल्ली सीट पर आप के कुलदीप कुमार भाजपा के हर्ष मल्होत्रा से 14,134 मतों से पीछे हैं। दक्षिण दिल्ली से भाजपा के रामवीर सिंह बिधूड़ी आप के सही राम पहलवान से 63,675 मतों से आगे चल रहे हैं, जबकि नई दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र में भाजपा की बांसुरी स्वराज 27,136 मतों से आगे हैं। राष्ट्रीय राजधानी में भाजपा का सीधा मुकाबला कांग्रेस-आप गठबंधन से है। भाजपा ने 2014 और 2019 के आम चुनाव में दिल्ली की सभी सात सीट पर जीत हासिल की थी।

जनादेश ने भाजपा को नकार दिया : संजय सिंह

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

लोकसभा चुनाव नतीजों पर मंगलवार को आम आदमी पार्टी के सांसद संजय सिंह ने कहा कि यह जनादेश कई प्रकार का संदेश दे रहा है। सबसे बड़ा संदेश यह है कि जनता भाजपा के दस साल के शासनकाल से दुखी है। वह सरकार हटाना चाहती है। इस जनादेश ने भाजपा को नकार दिया है। जिन विपरीत परिस्थितियों में विपक्ष ने चुनाव लड़ा है, उसमें जनता ने बताया है कि देश में लोकतंत्र कायम रहेगा।

पार्टी कार्यालय में आयोजित पत्रकारवार्ता में संजय सिंह ने कहा कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के महापर्व में हिस्सा लेने वाले देश की जनता को नमन करना हूं। आज जनता ने अपने जनादेश से साफ किया है कि वह महंगाई से, बेरोजगारी से दुखी है। उन्होंने कहा कि चुनाव के जो नतीजे सामने आए हैं, उससे साफ है कि भाजपा को बहुमत मिलता नहीं दिख रहा है। पिछली बार की तुलना में भाजपा की 60 सीटें कम हो रही है।

नायडू और नीतीश से गोपाल राय ने की अपील : आप के प्रदेश संयोजक गोपाल राय ने कहा कि भाजपा ने देश में जो माहौल बनाया, जनता ने उसके खिलाफ वोट दिया है। जनता ने भाजपा को बहुमत न देकर उन्हें लोकतंत्र के महत्व को समझाया है। राजनीतिक दलों से अपील करना चाहता हूं कि वह लोकतांत्रिक सरकार बनाने के लिए आगे आएं। उन्होंने टीडीपी के चंद्रबाबू नायडू को 2019 में भाजपा के खिलाफ सबको एकजुट करने और जेडीयू के नीतीश कुमार को 2024 में विपक्षी दलों को साथ लाने के प्रकरण की याद दिलाते हुए साथ आने की अपील की। उन्होंने कहा कि मुझे उम्मीद है कि देश की सभी राजनीतिक पार्टियां जनता के जनादेश को समझेगी।

महिला की संदिग्ध हालात में मौत

ग्रेटर नोएडा। ग्रेनो वेस्ट सेक्टर-1 स्थित लोटस विला सोसाइटी में रहने वाली महिला की संदिग्ध हालात में मौत हो गई। उसके पति ने पड़ोस में रहने वाले युवक और उसके कुछ साथियों पर साजिश की आशंका व्यक्त की है। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। लोटस विला सोसाइटी निवासी संदीप ने सेक्टर ईकोटेक-3 पुलिस को बताया कि एक सप्ताह पहले उसे उसके पड़ोसी ने फोन करके सूचना दी कि उसकी पत्नी मेघा की अचानक तबीयत बिगड़ गई है। वह और अमित उसे अस्पताल लेकर जा रहे हैं। इस सूचना पर संदीप अस्पताल पहुंचे। जहां उन्हें पता चला कि उनकी पत्न ी वेंटिलेटर पर है और जिंदगी और मौत से जूझ रही है। अस्पताल में उपचार के दौरान मेघा की मौत हो गई। इस मामले में संदीप ने पड़ोस में रहने वाले अमित और उसके कुछ साथियों पर शक जाहिर करते हुए मुकदमा दर्ज करवाया है। संदीप ने पुलिस को बताया की अमित उसकी पत्नी मेघा के गांव का रहने वाला है। मेघा से उसका रुपये का लेनदेन रहता था। घटना के दिन सीसीटीवी कैमरे में अमित उसके घर के आसपास आते-जाते दिखाई दिया है। उसे शक है कि उसकी पत्नी की मौत में अमित की कोई साजिश है।

चोरी के मोबाइल फोन के साथ आरोपी गिरफ्तार

नई दिल्ली। प्रीत विहार पुलिस ने रविवार को एक बदमाश को चोरी के मोबाइल फोन के साथ गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान पहाड़गंज के सिद्धार्थ बस्ती निवासी देवेंद्र उर्फ अमन के रूप में हुई है। पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि रविवार को प्रीत विहार थाने में एक बदमाश के चोरी के मोबाइल फोन के साथ इलाके में आने की सूचना मिली थी। सूचना के बाद पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और मंडावली रेलवे ट्रैक के पास छापा मारकर एक आरोपी को चोरी के मोबाइल फोन के साथ गिरफ्तार कर लिया।

मुझे यकीन था कि ह्यकिशोरी भैया अमेठी से जीतेंगे: प्रियंका गांधी

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने अमेठी संसदीय क्षेत्र से पार्टी उम्मीदवार के केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी के खिलाफ निर्णायक बढ़त कायम करने के बाद मंगलवार को कहा कि उन्हें यकीन था कि किशोरी भैया जीतेंगे।

निर्वाचन आयोग के अपराह्न तीन बजे तक के आंकड़ों के अनुसार किशोरी लाल शर्मा अमेठी से स्मृति ईरानी से एक लाख से अधिक मतों के अंतर से आगे हैं। प्रियंका गांधी ने शर्मा के साथ की अपनी एक पुरानी तस्वीर साझा करते हुए एक्स पर पोस्ट किया, किशोरी भैया, मुझे कभी कोई शक नहीं था। मुझे शुरू से यक ीन था कि आप जीतोगे। आपको और अमेठी के मेरे प्यारे भाइयों और बहनों को हार्दिक बधाई।

आप के सोमनाथ भारती पर भारी बढ़त के बाद आई बांसुरी स्वराज की प्रतिक्रिया

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

नई दिल्ली लोकसभा सीट से भाजपा उम्मीदवार बांसुरी स्वराज अपने निकटतम प्रतिद्वंदी आप के सोमनाथ भारती से आगे चल रही हैं। इस बीच वह मंगलवार को दिल्ली में श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर (बिड़ला मंदिर) में पूजा-अर्चना करने पहुंची। इस दौरान वह जीत को लेकर आश्वस्त दिखीं और बताया कि भारत में एक बार फिर एनडीए की सरकार बन रही है।

उन्होंने कहा, मैं पूरी तरह आश्वस्त हूं कि आज भारत की जनता भाजपा का चयन करेगी। देश की जनता पीएम मोदी के विकास नीतियों का चुनाव करेगी। वह पीएम मोदी के विकसित भारत की विजन का चयन करेगी। मैं जानती हूं कि तीसरी बार फिर मोदी की सरकार बन रही है। आप प्रत्याशी से 25 हजार से अधिक मतों से आगे बता दें, बांसुरी स्वराज पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज की पुत्री हैं। बांसुरी स्वराज पेशे से अधिवक्ता हैं। भाजपा ने इस बार मीनाक्षी लेखी को आराम देकर बांसुरी स्वराज को मौका दिया था। मीनाक्षी लेखी इस सीट से लगातार दो बार सांसद रही थीं। बांसुरी स्वराज को आप के सोमनाथ भारती ने कड़ी टक्कर दी थी और ताजा रुझान में वह आप उम्मीदवार से 25,882 मतों से आगे चल रही हैं।

चंद्रशेखर आजाद के सांसद निर्वाचित होने पर चौधरी वली उर रहमान ने बांटी मिठाई

प्रात: किरण संवाददाता

स्योहारा। 2024 के हुए आम लोकसभा चुनाव में नगीना सुरक्षित लोकसभा क्षेत्र से भीम आर्मी के संस्थापक एवं आजाद समाज पार्टी के अध्यक्ष भाई चंद्रशेखर आजाद एडवोकेट उर्फ रावण के भारी बहुमत से विजयी होकर सांसद बनने पर चौधरी वली उर रहमान और उनके भाइयो ने अपने समर्थकों के साथ खुशी मनाई और मिष्ठान वितरण कर उनका मुंह मीठा कराया।आपको बताते चले कि नगीना लोकसभा सुरक्षित सीट पर प्रथम चरण में 19 अप्रैल को मतदान हुआ था जिसमें आजाद समाज पार्टी के प्रत्याशी चन्द्रशेखर आजाद के सामने भारतीय जनता पार्टी की ओर से नहटौर क्षेत्र के विधायक ओम कुमार, समाजवादी पार्टी की ओर से पूर्व एडीजी मनोज कुमार तथा बहुजन समाज पार्टी की ओर से सुरेंद्र सिंह पाल चुनावी मैदान में थे। चुनाव में आजाद समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एडवोकेट चंद्रशेखर आजाद और भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी ओम कुमार के बीच मुकाबला देखने को मिला था सपा बसपा के प्रत्याशी तीसरे और चौथे नम्बर की लड़ाई लड़ते नजर आये थे।तभी से एडवोकेट चंद्रशेखर आजाद के जीतने के कयास लगाये जा रहे थे जो आज सच साबित हुए। आजाद समाज पार्टी के प्रत्याशी एडवोकेट चंद्रशेखर आजाद ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी भाजपा के सांसद प्रत्याशी ओमकुमार को लगभग 1,50,859 वोटो से पछाड़ते हुए भारी जीत दर्ज कर हिंदुस्तान की सबसे बड़ी पंचायत के सदस्य बनने में कामयाब हुए।भाजपा प्रत्याशी ओम कुमार को लगभग 3,56,751 समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी पूरे ए.डी.जे. मनोज कुमार को 1,00,751 और बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी सुरेंद्र सिंह पाल को 13126 मत प्राप्त हुए।चंद्रशेखर आजाद के जैसे ही चुनाव में विजयी होने की सूचना नगीना लोकसभा क्षेत्र के साथ-साथ सिवारा पहुंची तो स्योहारा में राजनीति के जाने-माने चेहरे चौधरी वाली उर रहमान और उनके भाइयों ने अपने समर्थकों, मित्रों, शुभचिंतकों का मुंह मीठा कराकर खुशी का इजहार किया और कहा कि चंद्रशेखर आजाद के सांसद बनने पर नगीना लोकसभा क्षेत्र का बिना भेदभाव के चहुमुखी विकास होगा।

सेक्टर बीटा-1 में गंदे पानी की आपूर्ति

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

ग्रेटर नोएडा। सेक्टर बीटा-1 में गंदा पानी आने के कारण लोग परेशान हैं। उनका आरोप है कि पिछले सात दिनों से लगातार गंदे पानी की आपूर्ति हो रही है। इस बारे में कई बार प्राधिकरण से शिकायत की जा चुकी है, लेकिन समस्या का कोई समाधान नहीं हुआ। महेश ने बताया कि काले रंग का पानी आ रहा है, जिससे बदबू आ रही है। इसका इस्तेमाल करने से लोग बीमार पड़ सकते हैं।

चोरी करने वाले पांच बदमाश गिरफ्तार

नई दिल्ली । लक्ष्मी नगर पुलिस ने लूट के एक मामले को सुलझाते हुए पांच बदमाशों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों के पास से वारदात में इस्तेमाल तमंचा, कारतूस, एक कार और लूट का सामान बरामद हुआ है। पकड़े गए आरोपियों में आफताब पर 20, फिरोज पर 24, जुबैर पर दो, शाने आलम पर 20 आपराधिक मामले दर्ज हैं, जबकि पांचवां आरोपी मोहम्मद वसीम इनका रिसीवर है। पुलिस आरोपियों से पूछताछ कर रही है। पूर्वी जिला पुलिस उपायुक्त अपूर्वा गुप्ता ने बताया कि 30 मई को सहारनपुर हाईवे पर निमार्णाधीन फुटओवर ब्रिज के निर्माण स्थल से लोहे की 10 प्लेट चोरी की शिकायत मिली थी। शिकायतकर्ता ने पुलिस को बताया कि कार सवार तीन आरोपियों ने लोहे की प्लेटों के साथ ही एक ऑक्सीजन सिलेंडर भी चुराया है। सूचना पर पुलिस लक्ष्मी नगर के ललिता पार्क के सामने यमुना पुश्ता रोड पर पहुंची। जांच पड़ताल के बाद पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया। एक जून को फिर से सफेद कार में आए चार आरोपियों ने गनप्वाइंट पर एक वेल्डिंग मशीन और दो लोहे की प्लेटें लूट लीं। इसके बाद पुलिस ने इस मामले की जांच के लिए एक टीम बनाई और हाईवे के आसपास व अन्य जगहों पर लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली। आरोपियों की पहचान कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने दिल्ली में मिले जनादेश को किया स्वीकार

- मबजूती और एकजुटता के साथ मेहनत करने पर कांग्रेस कार्यकताओं का किया धन्यवाद
- देवेन्द्र यादव ने लोकसभा चुनाव में कांग्रेस उम्मीदवारों के पक्ष में वोट करने पर दिल्ली की जनता का भी आभार व्यक्त किया

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने कहा कि लोकसभा चुनाव में सभी सातों सीटों पर भीष्ण गर्मी के बावजूद कठिन परिश्रम और एकजुटता से काम करने के लिए मैं कांग्रेस नेताओं और कार्यकताओं का धन्यवाद करता हूं। उन्होंने कहा कि चुनाव के नतीजे जो भी रहे परंतु यह बहुत अहम है कि कांग्रेस कार्यकताओं ने पूरे चुनाव में इंडिया गठबंधन सहयोगियों के साथ मिलकर सभी सीटों पर मजबूती के साथ लड़ाई लड़ी। उन्होंने कहा कि चुनाव में एक की जीत और दूसरे की हार होती है, कांग्रेस पार्टी दिल्ली में मिले जनादेश को स्वीकार करती है।

देवेन्द्र यादव ने लोकसभा चुनाव में कांग्रेस उम्मीदवारों के पक्ष में वोट करने पर दिल्ली की जनता का भी आभार व्यक्त किया, जो पार्टी के साथ मजबूती के साथ खड़ी है। श्री यादव ने कांग्रेस कार्यकताओं और नेताओं का आव्हान किया कि तानाशाही और प्रशासनिक हठधर्मिता के खिलाफ हमें लम्बी लड़ाई लड़नी है और कांग्रेस पार्टी यह संघर्ष तब तक जारी रखेगी, जब तक हम अंतिम व्यक्ति तक को न्याय नही दिला देते। उन्होंने कहा कि हमने लोकतांत्रिक आदर्शों के साथ पारम्परिक और गतिशील विचारधारा के साथ चुनाव लड़ा। देवेन्द्र यादव ने कहा कि पिछले चुनावों के मुकाबले इस चुनाव में जनता ने कांग्रेस उम्मीदवारों को कुछ विधानसभा क्षेत्रों में मिले मतदान से साफ संदेश मिला है कि कांग्रेस दिल्ली में वापसी करेगी। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी के जमीनी स्तर के कार्यकर्ता ने मतदाता तक पहुँचकर कांग्रेस की विचारधारा को उन तक पहुँचाया है। उन्होंने कहा कि हम संगठन को और अधिक मजबूत करेंगे और आने वाले समय में दिल्ली में मजबूती के साथ वापसी करेंगे।

डॉ.महेश शर्मा की पूरे यूपी में सबसे बड़ी जीत, लगातार तीसरी बार सांसद बनकर लगाई हैट्रिक

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

डॉ.महेश शर्मा की जीत केवल गौतमबुद्ध नगर नहीं बल्कि पूरे यूपी में सबसे बड़ी जीत है। डॉक्टर महेश शर्मा इकलौते सांसद हैं, जिन्होंने पूरे यूपी में हैट्रिक लगाई है। वह करीब साढे 5 लाख वोटों से भी ज्यादा मतों से जीते हैं। यह अपने आप में ही बहुत बड़ी बात है। डॉ.महेश शर्मा लगातार तीसरी बार सांसद चुने गए हैं। वह पहली बार वर्ष 2014 और फिर वर्ष 2019 में सांसद बने थे। अब गौतमबुद्ध नगर की जनता ने एक बार फिर उनको सांसद बनाया है। अब ऐसे में चर्चा चल रही है कि वह केंद्रीय मंत्रीमंडल में जगह ले सकते हैं।

5,59,472 वोटों के जीते डॉ.महेश शर्मा

लोकसभा चुनाव 2024 में डॉ.महेश शर्मा का कुल 8,57,829 वोट मिले। वहीं दूसरे स्थान पर इंडिया गठबंधन से प्रत्याशी महेंद्र नागर को 2,98,357 वोट मिले हैं। तीसरे नंबर पर बसपा उम्मीदवार राजेंद्र सोलंकी को 2,51,615 वोट मिले हैं। कुल मिलाकर डॉ.महेश शर्मा ने 5,59,472 वोटों के मार्जन से जीत हासिल की।

बने तीसरी बार सांसद, मिले 8,57,829 वोट

गौतमबुद्ध नगर लोकसभा सीट से डॉक्टर महेश शर्मा तीसरी बार सांसद बने हैं। यह डॉ डॉ.महेश शर्मा की सबसे बड़ी जीत है। डॉ.महेश शर्मा को 8,57,829 वोट मिले हैं। विपक्ष उनके सामने आधे में भी नहीं टिक पाया। जिले में कुल 14,35,720 वोट पड़े थे। जिसमें से आधे से ज्यादा वोट डॉ.महेश शर्मा को मिले।

वर्ष 2014 में पहली बार बने थे सांसद

डॉ.महेश शर्मा ने पहली बार वर्ष 2009 में चुनाव लड़ा था। उस चुनाव में उनको हार का सामना करना पड़ा था। भाजपा से डॉक्टर महेश शर्मा और बसपा से सुरेंद्र सिंह नागर के बीच कांटे की टक्कर हुई थी, जिसमें सुरेंद्र सिंह नागर सांसद बन गए थे। उसके बाद वर्ष 2014 में हुए लोकसभा चुनाव में डॉक्टर महेश शर्मा ने जीत हासिल की। उन्होंने समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार नरेंद्र भाटी को हरा दिया था। नरेंद्र भाटी अब भाजपा में हैं और एमएलसी हैं।

अब तक की सबसे बड़ी जीत

वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की टिकट पर डॉ.महेश शर्मा का मुकाबला बहुजन समाज पार्टी के उम्मीदवार सतवीर गुर्जर से हुआ। जिसमें डॉक्टर महेश शर्मा को 8,30,812 वोट मिले। जबकि, सतवीर गुर्जर को 4,93,890 वोट मिले थे। महेश शर्मा ने बड़ी जीत हासिल की थी। अब चौथी बार डॉ.महेश शर्मा से उससे भी बड़ी जीत हासिल की है।

मानसून को देखते हुए गाद निकालने का कार्य जारी : एमसीडी

दो चरणों में हटाई जा रही है गाद

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

मानसून को देखते हुए गाद निकालने का कार्य जारी है। दिल्ली नगर निगम प्रशासन ने सोमवार को यह जानकारी साझा करते हुए कहा कि एमसीडी सफलतापूर्वक गाद निकालने और नालों की सफाई का काम कर रही है और मानसून की शुरूआत से पहले अपने अधिकार क्षेत्र के सभी नालों की सफाई के लक्ष्य को पूरा करने के लिए लगातार काम कर रही है। गाद निकालने की वर्तमान कार्य योजना के अनुसार 713 नालों (4 फीट और उससे अधिक) से करीब 1 लाख, 27 हजार 736.03 मीट्रिक टन गाद निकालने का प्रस्ताव है। निगम प्रशासन के अनुसार गाद दो चरणों में हटाई जा रही है। पहले चरण में 78179.85 मीट्रिक टन और दूसरे चरण में 49556.12 मीट्रिक टन हटाई जाएगी। जानकारी के अनुसार पहले चरण में 62999.43 मीट्रिक टन (3 जून 2024 तक जो कि चरण-एक का 80.51 प्रतिशत है) हटाई गई है।

गाद निकालने का काम आउटसोर्सिंग एजेंसी के माध्यम से किया जा रहा निगम प्रशासन ने बताया कि चरण एक में पूरी गाद उठाने की संभावित समय सीमा 15 जून है। अधिकांश नालों की गाद निकालने का काम आउटसोर्सिंग एजेंसी के माध्यम से किया जा रहा है। इस ऑपरेशन में एजेंसियां गाद निकालने के लिए खुदाई करने वाली मशीनों/जेसीबी, पोकलेन, मैनुअल लेबर का इस्तेमाल करती हैं और परिवहन की गई गाद को एसएलएफ साइटों पर डंप किया जाता है। दिन-प्रतिदिन तैरती हुई सामग्री की हटाने का कार्य नाला बेलदार करते हैं।

संक्षिप्त खबरें

पौधरोपण के बाद पौधों को नहीं हो रही है देखभाल

जमुई/गिद्धौर। जिले में जल जीवन-हरियाली अभियान अंतर्गत मनरेगा से मुख्य रूप से निजी भूमि जल संरचनाओं के किनारे एवं ग्रामीण कार्य विभाग की सड़कों के किनारे पौधारोपण को प्राथमिकता दी गई है। बता दें कि सरकार के जल जीवन हरियाली अभियान अंतर्गत पौधारोपण पर विशेष जोर दिया जा रहा है।पिछले वर्ष भी गिद्धौर में करीब हजारों पौधे लगाए गए थे। सरकार की ओर से पौधारोपण भी करोड़ों रुपए खर्च किए जा रहे हैं। बुद्धिजीवियों का कहना है कि लगाए गए पौधे की उचित देखभाल नहीं होने से योजना पूरी तरह सार्थक नहीं हो पा रही है।

सर्पदंश से एक अधेड़ महिला की हुई मौत

मुरलीगंज थाना क्षेत्र के सिंगयान पंचायत वार्ड एक गुदर चकला गांव में बीती रात सर्पदंश से एक महिला की इलाज के क्रम में मौत हो गई। बताया गया कि श्रवण ठाकुर की पत्नी शोभा देवी (35) वर्ष सर्पदंश के कारण मौत हुई है। पीड़ित परिजन ने बताया कि सोमवार की रात करीब दस बजे सांप काट लेने की बात कही। तत्काल मुरलीगंज सीएचसी पहुंचाया। जहां से चिकित्सक ने बेहतर इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज अस्पताल रेफर कर दिया। वहां इलाज के क्रम में मौत हो गई। पीड़ित परिवार शव की पोस्टमार्टम नही करवाया। और ना ही पुलिस के संज्ञान में दिया।

वीणा ने मतदाताओं को दी बधाई

मुजफ्फरपुर। वैशाली लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से दूसरी बार अपनी जीत दर्ज कराने के बाद वीणा देवी ने क्षेत्र के मतदाताओं को बधाई दी है। उन्होंने कहा है कि वैशाली उनका घर है और वे यहां की बहू हैं। वैशाली की जनता अपने बहू का सम्मान करना अच्छी तरह जानती है।इस चुनाव में उसने यह दिखा दिया है। कुछ लोग उनके विरुद्ध वातावरण बनाने की कोशिश में लगे थे।यहां के मतदाताओं ने उनकी चाल को विफल कर दिया।उन्होंने कहा है कि क्षेत्र के बहुमुखी विकास के लिए वे सदैव तत्पर रहीं हैं। आगे भी वे विकास कार्यों को पूरी प्रथमिकता देते हुए क्षेत्र की जनता की उम्मीद पर खड़ी उतरने की कोशिश करेगी।

हाजीपुर लोक सभा सीट से चिराग पासवान भारी मतों के हुए विजेता

प्रात : किरण, संवाददाता

हाजीपुर।हाजीपुर संसदीय लोकसभा सीट से एनडीए प्रत्याशी लोजपा आर के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान भारी मतों के अंदर से चुनाव जीत गए। चिराग पासवान ने महागठबंधन से राजद प्रत्याशी शिवचंद्र राम को पराजित किया। शिवचंद्र राम हाजीपुर लोकसभा सीट से लगातार तीसरी बार पराजित हो गए। चिराग पासवान ने लगभग 165000 से अधिक मतों से विजय श्री प्राप्त किया। हाजीपुर के राज नारायण कॉलेज में आज सुबह निर्धारित समय पर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच मतगणना कार्य शुरू हुआ। जिला निर्वाचित पदाधिकारी जिलाधिकारी यशपाल मीणा और एसपी हरीकिशोर राय पहले सुबह ही मतगणना केंद्र पर पहुंचकर मतगणना कार्य में लगे कर्मियों को दिशा निर्देश दिया ।निर्धारित समय पर मतगणना कार्य शुरू हुआ। हाजीपुर सीट पर चिराग पासवान और रजत के सिकंदर राम के बीच कांटे की टक्कर होने की चर्चाएं तेज थी। लेकिन एनडीए प्रत्याशी चिराग पासवान सभी छःविधानसभा सीटों से पहले राउंड से ही बढ़त बनाये रखे। चिराग पासवान हाजीपुर, लालगंज ,महनार,राजापाकर और महुआ विधानसभा सीट पर अपना बढ़त लगातार बनाये रखा। प्रत्येक राउंड के बाद उनके जीत का अंतर बढ़ता ही गया। लेकिन 15 वे राउंड तक राघोपुर सीट से लगातार बढ़त बनाए रहने के बाद 16 में राउंड से चिराग पासवान पीछे होने लगे । पोस्टल वोट में अवश्य चिराग पासवान लगभग 395 वोट से पीछे हुए ।चिराग पासवान को पोस्टल वोट के माध्यम से 2612 वोट मिले जबकि उनके निकटतम प्रतिद्वंदी शिवचंद्र राम को 3007 वोट मिले। दसवीं राउंड के मतगणना के बाद मां गठबंधन से जुड़े कार्यकर्ता के चेहरे पर निराशा और बेचैनी के भाव दिखने लगे थे लेकिन अंतिम चरण के मतगणना तक सभी उम्मीद के साथ डटे रहे । हाजीपुर विधानसभा सीट से चिराग को 40162 मतों से बढ़त मिली जबकि सबसे अधिक बढ़त लालगंज विधानसभा क्षेत्र से मिली। यहाँ चिराग पासवान ने शिवचंद्र राम को 53264 मतों के अंतर से पछाड़ा ।महुआ विधानसभा क्षेत्र से चिराग 27166 वोट से, महनार विधानसभा क्षेत्र में चिराग 33221 वोट से और राजा पकड़ विधानसभा क्षेत्र से चिराग पासवान 23800 वोट से बढ़त बनाएं ।जबकि राघोपुर में चिराग पासवान शिवचंद्रराम से 11248 मतों के अंतर से पीछे रह गए ।इस तरह चिराग पासवान 165000 से अधिक मतों के अंतर से अपने निकटतम प्रतिद्वंदी शिवचंद्र राम को पराजित किया। चिराग पासवान के समर्थक को में काफी उत्साह देखा जा रहा था ।मतगणना परिषद में बनाए गए मीडिया को सॉन्ग में लगे टेलीविजन को देखने के लिए सुरक्षित कर्मी और पुलिसकर्मी डटे रहे ।सबकी निगाहें टेलीविजन पर चल रहे न्यूज पर थी और राजनीतिक चर्चाएं करने में सभी व्यस्त थे। मतगणना केंद्र परिसर के बाहर चिराग समर्थकों ने जमकर होलिया खेलीऔर मिठाइयां बाटी।

अच्छे अंक वाले शिक्षकों को ही मिलेगा शहर का विद्यालय

- सक्षमता परीक्षा: 10-15 जून के बीच होगी काउंसलिंग

प्रात : किरण, संवाददाता

गिद्धौर। सक्षमता परीक्षा उत्तीर्ण नियोजित शिक्षकों की काउंसिलिंग के बाद नए स्कूलों में पदस्थापित किया जाना है।नये स्कूल में योगदान देने के साथ ही में विशिष्ट शिक्षक कहलाएंगे। ऐसे में इन शिक्षकों को नये सिरे से नियुक्ति पत्र भी दिया जाएगा।शिक्षा विभाग इसकी तैयारी में जुट गया है। डीईओ राजेश कुमार ने बताया कि विशिष्ट शिक्षक बनते ही नियोजित शिक्षकों को सरकारी कर्मी का दर्जा मिल जाएगा। इसलिए उन्हें नया नियुक्ति-पत्र भी दिया जाएगा।विभाग की तैयारी है कि 10-15 जून के बीच सक्षमता परीक्षा उत्तीर्ण शिक्षकों की काउंसिलिंग शुरू करा दी जाएगी 10 दिनों के अंदर सब की काउंसलिंग संबंधित जिले में ही कराई जाएगी।दस दिनों के अंदर सबकी काउंसलिंग सबंधित जिलों में ही करायी जाएगी। विभाग का लक्ष्य है की 30 जून तक सभी इच्छुक शिक्षकों का पदस्थापन उनके आवंटित जिले के किसी स्कूल में कर दिया जाए। विभाग ने पहले ही यह साफ कर दिया है कि सक्षमता परीक्षा में बेहतर अंक लाने वाले शिक्षकों को शहरी क्षेत्र के स्कूलों में पदस्थापित किया जाएगा। इसको देखते हुए ही शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूलों के रिक्त पदों की अलग-अलग सूची तैयार की जा रही है। शिक्षकों को स्कूल आवंटन सॉफ्टवेयर के माध्यम से होना है। इसके पहले रिक्त पदों और शिक्षकों की सूची को क्रमवार सॉफ्टवेयर में अपलोड किया जा रहा है। विभाग से मिली जानकारी के अनुसार आचार संहिता खत्म होने के तुरंत बाद ही नियोजित शिक्षकों की काउंसिलिंग आदि को लेकर दिशा-निर्देश जारी कर दिया जाएगा।

जीएनएम और एएनएम की मांग को लेकर प्रबंधक ने स्वास्थ्य विभाग को लिखा पत्र

प्रात : किरण, संवाददाता

जमुई [झाझा] रेफरल अस्पताल झाझा में स्वास्थ्य सुविधा को और बेहतर करने के लिए एएनएम और जीएनएम की कमी को पूरा करने के लिए अस्पताल की ओर से स्वास्थ्य विभाग को पत्र लिखा गया। इस संदर्भ में जानकारी देते हुए अस्पताल प्रबंधक नवनीत कुमार ने बताया कि अस्पताल में 6 एएनएम और 9 जीएनएम की मांग पत्र के माध्यम से जमुई स्वास्य विभाग को पत्र लिखा गया। दरअसल सोमवार को बीपी जांच काउंटर पर एएनएम की अनुपस्थिति पर मरीजों ने बबाल काटा था। इसी आलोक में प्रबंधक ने बताया कि अस्पताल में एएनएम और जीएनएम की कमी होने के कारण स्वास्थ्य से जुड़ी कई कार्य करने में अस्पताल में कई कार्य प्रभावित होते है। कम एएनएम और जीएनएम होने के कारण किसी तरह अस्पताल के कार्य को करवाया जा रहा है। अगर 6 एएनएम और 9 जीएनएम अस्पताल में मुहैया हो जाती है तो स्वास्थ्य सुविधा बेहतर हो जाएगा।

दूध बेचने के लिए गई महिला को अज्ञात वाहन ने मारी टक्कर, चिकित्सक ने मृत घोषित किया

प्रात : किरण, संवाददाता

जमुई [झाझा] दूध देने गई एक महिला को अज्ञात वाहन के टक्कर मार देने से महिला की मौत हो गई। घटना धमना गांव के समीप हुई है। मृतिका की पहचान थानाक्षेत्र के छापा धपरी गांव की रहने वाले बिरेंची यादव की 45 वर्षीय पंचवा देवी के रूप में हुई। घटना की जानकारी परिजनों को मिलने के बाद परिजन मौके स्थल पर पहुंचकर ई रिक्शा से घर लाया और उसके बाद निजी वाहन से रेफरल अस्पताल लाया जहां चिकित्सक डॉ. अरूण कुमार ने जांच के बाद मृत घोषित कर दिया। मृतिका के चचेरे देवर विनोद यादव ने बताया कि कई वर्षो से पैदल ही दूध बेचने के लिए धमना की ओर जाती थी। दिन में स्थानीय लोगों के द्वारा मृतिका के छोटे बेटे कांग्रेस कुमार को फोन आया और बताया कि उसकी मां सड़क किनारे घायल अवस्था में गिरी पड़ी है जिसके बाद कांग्रेस ने घर में सूचना दिया जिसके बाद मौके स्थल पर पहुंचा और तो देखा कि सिर में काफी चोट लगा हुआ और खून से लतपथ होकर सड़क पर गिरी पड़ी है जिसके बाद वहां से ई रिक्शा से उठाकर घर लाने के बाद अस्पताल लाया।

मृतिका के छोटे बेटे ने बताया कि मेरी मां कई सालों से दूध बेचने के लिए धमना गांव की ओर पैदल ही जाती थी। मंगलवार को भी वह घर में कामकाज करने के बाद सुबह आठ बजे दूध देने के लिए निकली थी और दोपहर में घटना के बारे में स्थानीय लोगों के द्वारा सूचना दिया गया। वही घटना के बाद मृतिका के परिजनों ने अस्पताल में कागजी कार्रवाई करने के बाद शव को अपने घर लेकर चला गया। घटना के बाद परिजनों में कोहराम मचा हुआ है।

विद्यार्थियों के आधार कार्ड बनाने में फजीहत कर रहे हैं ऑपरेटर

आधार केंद्र में नहीं बन पा रहा है आधार कार्ड

प्रात : किरण, संवाददाता

जमुई/गिद्धौर।शिक्षा विभाग का निर्देश है कि सभी बच्चों के डाटा की इंट्री ई शिक्षा कोष पोर्टल में होगी। इसके लिए सभी प्रधानाध्यापकों को निर्देश जिला शिक्षा पदाधिकारी द्वारा दिए गए हैं। आदेश है कि 15 जून तक सभी छात्रों की डाटा इंट्री 15 जून तक हरहाल में कर लिया जाए।ई शिक्षा कोष पोर्टल में इंट्री के लिए सभी छात्रों का आधार होना भी अतिआवश्यक है। अन्यथा इंट्री नहीं होगी, और ई शिक्षा कोष पोर्टल में इंट्री नहीं होगी तो संबंधित छात्र विभाग के सभी योजनाओं से वंचित हो जाएंगे। छात्रों का आधार कार्ड आसानी से बनाई जा सके इसके लिए शिक्षा विभाग द्वारा प्रत्येक प्रखंड के दो दो माध्यमिक विद्यालय में आधार केंद्र बनाया गया है। लेकिन शिक्षा विभाग के स्तर से बनाया गया आधार केंद्र छात्रों की सुविधा से अधिक परेशानियों का सबब बन गया है।इस बाबत अभिभावकों ने बताया कि शिक्षा विभाग के आधार केंद्र में आधार कार्ड बनवाने के लिए जन्म प्रमाणपत्र की मांग किया जा रहा है।अभिभावकों का कहना है कि विद्यालय के प्रधानाध्यापक द्वारा सत्यापित आवेदन फार्म से आधार बनाया जाए। लेकिन विद्यालयों में छात्रों की सुविधा के लिए बने आधार केंद्र में प्रधानाध्यापक के सत्यापित आवेदन फार्म को नहीं माना जा रहा है। विकट स्थिति यह है कि आधार कार्ड बनवाने में शिक्षा विभाग के आधार केंद्र ऑपरेटर जन्म प्रमाणपत्र मांग रहे हैं और जन्म प्रमाणपत्र बनवाने के लिए आरटीपीएस द्वारा आधार कार्ड मांगा जा रहा है। स्थिति यह है कि न जन्म प्रमाण पत्र बन पा रहा है और ना बच्चे का आधार कार्ड बनाया जा रहा है। अभिभावकों ने कहा कि इस बाबत स्थानीय स्तर पर बीपीएम एवं बीईओं से शिकायत किया जा रहा है लेकिन कोई सुनवाई नहीं हो रही है।

डॉक्टर मरीज की पर्ची नहीं आईडी खोलकर इलाज करेंगे

भव्या एप पर मिलेगा मरीजों का डाटा जांच रिपोर्ट ढोने से मिलेगा छुटकारा

प्रात : किरण, संवाददाता

जमुई/गिद्धौर।सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में अब मुख्यमंत्री डिजिटल हेल्थ योजना के तहत स्वास्थ्य विभाग द्वारा तैयार बिहार हेल्थ एप्लीकेशन विजनरी योजना का फॉर ऑल सॉफ्टवेयर (भव्या) एप में मरीजों का निबंधन किया जाएगा। बता दें कि अब तक जिस एप पर मरीज का निबंधन होता था।उससे काटी गई पर्ची पर ओपीडी में डॉक्टर प्रिस्क्राइब करते थे। जांच रिपोर्ट पर्ची के पिछले हिस्से में प्रिंटेड होता था। नई व्यवस्था में मरीजों की सारी जानकारी एकत्रित होकर डिजिटल रहेगी। अब मरीज को पर्ची व जांच रिपोर्ट लेकर अस्पताल आने की जरूरत नहीं होगी। मरीज की आईडी खोलकर डॉक्टर मरीज का सारा डाटा देखकर इलाज करेंगे। इसके अलावा स्वास्थ्य विभाग के वरीय पदाधिकारी भी कहीं से भी चाहे तो इस ऐप के जरिए मरीजों की मॉनीटरिंग कर सकते हैं।

1 जून से शुरू हुई सुविधा

1 जून से यह सुविधा सुचारू रूप से आरंभ किया गया। इसके जरिए मरीजों को बहुत लाभ होगा।इस एप में जांच,इलाज के साथ दी जाने वाली दवा सहित सारी हेल्थ फैसिलिटी संबंधित जानकारी एकत्रित की जाएगी।मरीजों के निबंधन के बाद ओपीडी में डॉक्टर भी इस एप पर ही मरीजों की सभी तरह की जांच दवा लिखेंगे। भव्या ऐप पर मरीज की जांच रिपोर्ट में भी अपलोड की जाएगी। इसके साथ ही मरीजों को अस्पताल से उपलब्ध की जा रही दवा की जानकारी भी अपलोड किया जाएगा। दवा कैसे और कब लेनी है,यह भी लिखा मिलेगा।इस तरह आप किसी भी मरीज की सारी जानकारी एप पर डिजिटल तरीके से सुरक्षित रहेगी।

एक ही प्लेटफार्म पर रोगियों का डेटा संग्रह करना उद्देश्य

स्वास्थ्य विभाग से मिली जानकारी के अनुसार डिजिटल कामकाज को बढ़ावा देने व एक ही प्लेटफार्म पर रोगियों का डेटा संग्रह करने के लिए यह लागू किया गया है। भव्या में निबंधन कराने के लिए रोगी को अपना आधार नंबर एवं इसके लिंक मोबाइल नंबर बताना होगा। निबंधन काउंटर पर बैठा स्वास्थ्य कर्मी संबंधित जानकारी दर्ज करेंगे तो मोबाइल पर एक ओटीपी आएगा। इसे डालते ही भव्या वेब पोर्टल पर 14 अंकों का आभा नंबर मिल जाएगा। दवा कैसे और कब लेनी है,यह ही एप पर लिखा मिलेगा।

पप्पू यादव की जीत पर हाजीपुर में जश्न

प्रात : किरण, संवाददाता

हाजीपुर। गरीबों के मसीहा, शोषित, पीड़ितों की मदद के लिए चौबीस घँटे तत्पर रहने वाले बिहार में लोगों के एकमात्र सेवक पप्पू यादव की पूर्णिया लोकसभा सीट से भारी जीत पर हाजीपुर में जश्न का माहौल है। कांग्रेस में विलय जाप के प्रदेश नेता रहे, सांसद पप्पू यादव के करीबी मनीष कुमार उर्फ पिंटू यादव के नेतृत्व में गोलू सिंह, सुजीत कुमार उर्फ भोला यादव, नीलेश कुमार,रूपक भोला,चंदन गुप्ता,टाइगर यादव मुकेश कुमार, पप्पू कुमार समेत दर्जनों युवा कार्यकताओं ने जमकर जीत का जश्न मनाया। पिंटू यादव ने लोगों के बीच जीत के उपलक्ष्य में जमकर मिठाईयां बांटी। युवाओं ने जमकर गुलाल उड़ाए। इस दौरान खुशी का इजहार करते हुए कहा कि हमारे नेता पप्पू यादव की जीत अपने आप में बेमिशाल है। उन्होंने राजद पर परोक्ष रूप से निशाना साधते हुए कहा कि उन लोगों ने हमारे नेता को हराने के लिए कोई कोर कसर बाकी नहीं रखी। आश्वासन मिलने के बाद ही नेताजी ने कॉंग्रेस में जाप का विलय किया था। राजद जे कोटे में पूर्णिया सीट चली गई। लोगों को मालूम है कि कॉंग्रेस नेतृत्व की पहल के बाद भी राजद ने आनन-फानन में अपने उम्मीदवार उतार दिए। पूर्णिया की महान जनता ने दिखा दिया कि पप्पू के अलावा कुछ भी स्वीकार नहीं है। दलीय प्रतिबद्धताओं से ऊपर उठकर निर्दलीय चुनाव मैदान में उतरे अपने सेवक पप्पू यादव की भारी जीत सुनिश्चित कर दी। पूर्णिया की जनता न केवल बिहार बल्कि पूरे देश को संदेश दिया है कि नेता नहीं सेवक को चुनना चाहिए।

जमुई लोकसभा क्षेत्र से अरुण भारती अपने निकटतम प्रतिद्वंदी अर्चना रविदास को एक लाख से अधिक मतों से हराया

प्रात : किरण, संवाददाता

जमुई सु. लोकसभा क्षेत्र से लोजपा (आर)के उम्मीदवार अरुण भारती ने अपने निकटतम प्रतिद्वंदी राजद प्रत्याशी अर्चना रविदास को 1,12,483 मतों से हराया। अरुण भारती को 5,08,179 मत प्राप्त हुए, वहीं अर्चना रविदास को 3,95,696 मत प्राप्त हुए। वहीं तीसरे स्थान पर नोटा को 26,148 मत मिले। जिले के नामचीन केकेएम कॉलेज परिसर में सुबह 8:00 बजे से मतगणना प्रारंभ हुआ।जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिलाधिकारी राकेश कुमार ने सर्वप्रथम छः विधानसभा के सहायक निर्वाचन को मतगणना केन्द्रों पर गोपनीयता की शपथ दिलाई। तत्पश्चात सभी सहायक निवार्चनी पदाधिकारी ने अपने अपने विधानसभा में सभी पदाधिकारियों एवं कर्मियों को गोपनीयता की शपथ दिलाई।

मतगणना स्थल पर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था थी। निष्पक्ष और शांतिपूर्ण तरीके मतगणना कार्य प्रारंभ हुआ। शुरूआत से ही लोजपा (आर) के अरुण भारती अपने निकटतम प्रतिद्वंदी अर्चना रविदास पर बढ़त बनाए हुए आगे चल रहे थे।

अंतिम राउंड में लोजपा (आर) के अरुण भारती को 5,08,179 मत मिले। वहीं इंडिया गठबंधन समर्थित राजद उम्मीदवार अर्चना रविदास को 3,95,696 मत मिले।इस प्रकार एनडीए समर्थित लोजपा (आर) उम्मीदवार अरुण भारती ने अपने निकटतम प्रतिद्वंदी अर्चना रविदास को 1,12,483 मतों से पराजित किया।

अन्य उम्मीदवारों में सुभाष पासवान को 13841मत, सकलदेव दास को 12313 मत, श्रवण कुमार को 8604 मत, जगदीश प्रसाद को 6532 मत, संतोष कुमार दास को 6025 मत प्राप्त हुए। वहीं नोटा बटन पर कुल 26,148 मत प्राप्त हुए और तीसरे स्थान पर रहे।

कल्याण ज्वैलर्स ने कैंडेरे में शेष हिस्सेदारी खरीदने की घोषणा की

प्रात : किरण, संवाददाता

पटना : कल्याण ज्वैलर्स इंडिया लिमिटेड ने कल्याण ज्वैलर्स की सहायक कंपनी (एनोवेट लाइफस्टाइल प्राइवेट लिमिटेड) के संस्थापक रूपेश जैन के साथ उनके शेष 15 प्रतिशत का अधिग्रहण करने के लिए एक डेफिनिटिव एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर करने की घोषणा की। 42 करोड़ रुपए के इस हिस्सेदारी अधिग्रहण के परिणाम स्वरूप कैंडेरे कल्याण ज्वैलर्स की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी बन जाएगी, क्योंकि यह ई-कॉमर्स से ओमनी चौनल कॉमर्स की ओर अग्रसर हो रही है। कल्याण ज्वैलर्स ने ई-कॉमर्स कारोबार में कदम रखने के तहत 2017 में कंपनी में मैज्योरिटी हिस्सेदारी हासिल की थी। कैंडेरे ने वित्त वर्ष 2023-24 में 130.3 करोड़ का वार्षिक रेवेन्यू दर्ज किया। अधिग्रहण की घोषणा पर टिप्पणी करते हुए, कल्याण ज्वैलर्स के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री टी एस कल्याणरमन ने कहा, कल्याण ज्वैलर्स ने ग्राहकों की बदलती जरूरतों के प्रति सजग रहते हुए साइज और स्केल के साथ एक हाइपर-लोकल कंज्यूमर ब्रांड विकसित करने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया है। कैंडेरे के साथ, हम ज्वैलरी उद्योग के भीतर एक उभरते मार्केट सेगमेंट का पता लगाने के लिए उत्साहित हैं। यह एक ऐसा सेगमेंट है, जो हल्के, फैशन-फॉरवर्ड और यूनिवर्सल तौर पर आकर्षक डिजाइनों पर ध्यान केंद्रित करता है। हम कैंडेरे को एक शानदार पोजीशन पर पहुंचाने के लिए रूपेश जैन के जुनून और उनकी प्रतिबद्धता को पहचानते हैं और इसके लिए उन्हें धन्यवाद देते हैं। हमारा मानना है कि महत्वपूर्ण रिटेल मौजूदगी और ओमनी चौनल कॉमर्स के साथ हम विकास के अगले चरण की ओर तेजी से आगे बढ़ेंगे। एनोवेट लाइफस्टाइल के फाउंडर रूपेश जैन ने कहा, कैंडेरे का अब तक का सफर जीवन भर का रोमांच रहा है, जो अपार सीख और बेजोड़ वैल्यू क्रिएशन से भरा है। कई मायनों में, यह कहावत को दोहराता है, कि ह्यसपने सच होते हैंह्न। लगभग सात साल पहले जब कल्याण ज्वैलर्स इसमें शामिल हुआ, तो कैंडेरे को बहुत फायदा हुआ। जैसे-जैसे यह विकास के अगले चरण में प्रवेश कर रहा है, मुझे यकीन है कि कैंडेरे, अपने नाम के अनुरूप, चमकता रहेगा और भारतीय उपभोक्ताओं के मन में अपनी विशेष पहचान को और मजबूत करेगा। कैंडेरे 2013 से तेजी से बढ़ते किफायती और एक्सेसेबल ज्वेलरी सेगमेंट का हिस्सा रहा है। 2017 में कल्याण ज्वैलर्स द्वारा अधिग्रहण के बाद, ब्रांड ने अपनी ऑफरिंग, ग्राहक पसंद और लीडिंग मार्केट प्लेस में उपस्थिति में लगातार प्रगति की है। पिछले सोलह महीनों में, कैंडेरे ने उभरती उपभोक्ता जरूरतों के अनुरूप ओमनी-चौनल कॉमर्स के लिए एक रणनीतिक तैयारी की है। इस परिवर्तन के अनुरूप, परिचालन और प्रबंधन दोनों स्तरों पर अनुभवी प्रतिभाओं को शामिल किया जा रहा है। पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान, कैंडेरे ने देश भर में 11 फिजिकल शोरूम लॉन्च किए और इस वित्तीय वर्ष के दौरान अपनी ऑफलाइन उपस्थिति को चार गुना करने की योजना बना रहा है।

शेरघाटी में भाजपा कार्यकताओं ने मनाया जश्न

जीतन राम मांझी ने गया से किया बड़ी जीत

प्रात : किरण, संवाददाता

शेरघाटी।शहर के राम मंदिर स्थित एनडीए के मिली बड़ी जीत के बाद एनडीए कार्यकताओं ने मनाया जश्न एक दूसरे को मिठाई खिलाकर एवं पटाखा फोड़ कर जश्न मनाया है।

बता दे की गया से संसदीय क्षेत्र से हम पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी के हुए बड़ी जीत के बाद एवं देश भर में एनडीए के हुए कार्यकर्ताओ में खुशी के माहौल बना हुआ है।वही शेरघाटी एनडीए कार्यकर्ताओ ने जोश खरगोश के साथ एक दूसरे को मिठाई खिलाकर एवं गले मिलकर अबीर गुलाल लगाकर खुशी बांटी उक्त दौरान कार्यकर्ताओं ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तीसरी बार देश के सता पर कायम होंगे और देश हित मे काम करेंगे।

उक्त दौरान मौजूद कार्यकताओं ने यह भी कहा कि कड़ी टसल के बाद गया जिला संसदीय क्षेत्र से राजद प्रत्याशी कुमार सर्वजीत को टक्कर देते हुए हम पार्टी के अध्यक्ष व प्रत्याशी जीतन राम मांझी ने 484492 मत प्राप्त किया जबकि कुमार सर्वजीत को 383550 मत प्राप्त हुआ तदोपरांत जीतन राम मांझी ने 100942 मतों से राजद प्रत्याशी को हरा दिया। इधर जीत होते ही कार्यकर्ताओ में खुशी का माहौल देखा गया। उक्त दौरान हम के जिला उपाध्यक्ष लाला सिंह, भाजपा प्रखड अध्यक्ष रवि रंजन सिंह,अरुण चंद्रवंशी,सुशील गुप्ता,गुगुन सिंह, राजेश मालाकार, पशुपतिनाथ पाठक,मुकेश पाठक, दीनानाथ पांडे समेत सैकड़ो कार्यकर्ता मौजूद थे।

आसनसोल - झाझा - पटना - डीडीयू-प्रयागराज-आगरा फोर्ट के रास्ते' हावड़ा और खातीपुरा के मध्य स्पेशल ट्रेन का परिचालन

प्रात : किरण, संवाददाता

हाजीपुर। ग्रीष्मकालीन अवकाश में यात्रियों की सुविधा के मद्देनजर कई समर स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा है । इसी क्रम में आसनसोल-झाझा-पटना-डीडीयू- प्रयागराज-आगरा फोर्ट के रास्ते हावड़ा और खातीपुरा (जयपुर) के मध्य गाड़ी सं.03007/03008 स्पेशल ट्रेन का परिचालन किया जाएगा । गाड़ी सं. 03007 हावड़ा-खातीपुरा (जयपुर) स्पेशल 09.06.2024 से 30.06.2024 तक प्रत्येक रविवार को हावड़ा से 18.00 बजे खुलकर सोमवार को 03.25 बजे पटना जं. रूकते हुए मंगलवार को 01.00 बजे खातीपुरा (जयपुर) पहुंचेगी।वापसी में 03008 खातीपुरा (जयपुर)-हावड़ा स्पेशल 11.06.2024 से 02.07.2024 तक प्रत्येक मंगलवार को खातीपुरा (जयपुर) से 05.30 बजे खुलकर बुधवार को 02.05 बजे पटना जं. रूकते हुए 12.30 बजे हावड़ा पहुंचेगी । इस स्पेशल में द्वितीय वातानुकूलित श्रेणी के 01, तृतीय वातानुकूलित श्रेणी के 05, शयनयान श्रेणी के 09 एवं साधारण श्रेणी के 04 कोच होंगे ।

एनडीए की सरकार बने पर कार्यकताओं में हर्ष

प्रात : किरण, संवाददाता

सराय।- भारतीय जनता पार्टी क्रीड़ा प्रकोष्ठ के तत्वाधान मे भाजपा एक बार फिर सरकार बनाने को लेकर भाजपा कार्यकर्त्ताओ ने खुशी जाहिर करते हुए अबीर गुलाल लगाकर एक दूसरे को मिठाई खिला कर तीसरी बार केंद्र मे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कि सरकार बनने पर बधाई एवं शुभकामनायें दिया। साथ ही एनडीए से हाजीपुर से चिराग पासवान,उजियारपुर से नित्यानंद राय,वैशाली से वीणा देवी सहित सभी को बधाई दिया है । भाजपा क्रीड़ा प्रकोष्ठ के बिहार प्रदेश प्रवक्ता कुणाल कुमार गुप्ता ने कहा कि देश एक बार फिर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कि काम को पसंद करते हुए तीसरी बार उन्हें प्रधानमंत्री पद पर विश्वास जताया है। वही भाजपा क्रीड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश के सह संयोजक सौरभ कुमार सिंह ने कहा कि पुनः जनता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कि सरकार को देखना पंसद करती दिख रही है. देश एक बार फिर से तरक्की कि ओर बढ़ेगा । खुशी जाहिर करने वालो मे भाजपा क्रीड़ा प्रकोष्ठ के बिहार प्रदेश प्रवक्ता कुणाल कुमार गुप्ता,भाजपा क्रीड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश के सह संयोजक सौरभ कुमार सिंह, भाजपा क्रीड़ा प्रकोष्ठ के जिला प्रवक्ता सोनू कुमार सिंह,भाजपा के जिला उपाध्यक्ष पंकज यादव,भाजपा क्रीड़ा प्रकोष्ठ के साकेत सिंह,भाजपा के मण्डल अध्यक्ष विश्वजीत सिंह,भाजपा अति पिछड़ा प्रकोष्ठ के मण्डल अध्यक्ष चितरंजन भगत,भाजपा अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य मोङ्ग कैसर अली,हरिनारायण केसरी,भाजपा यूवा मोर्चा के पूर्व मण्डल उपाध्यक्ष निर्भय कुमार अमरोही आदि ने बधाई दी ।

@Pratahkiran
www.pratahkiran.com
नई दिल्ली, बुधवार, 05 जून, 2024

सम्पादकीय

आखिर क्यों जरूरी है वृक्षारोपण

मनुष्य के जीवनधारण और उत्कर्ष में जिन अन्य जीवधारियों का प्रमुख सहयोग है, उनमें पशुओं और वृक्षों की गणना प्रमुख है। गौमाता के गुण गाते-गाते हम नहीं अघाते, क्योंकि उसके द्वारा प्राप्त होने वाले दूध, गोबर, बैल, चर्म आदि सभी उपकरणों द्वारा पौष्टिक आहार तथा दूसरी सुविधाओं की प्राप्ति होती है। ठीक ऐसा ही अनुदान वृक्षों से प्राप्त होता है। उसके द्वारा प्राप्त होने वाले लाभों की कोई गणना नहीं। वे बोलते भर नहीं, जीव तो उनमें भी है और वह जीव भी ऐसा है, जो संतों जैसी गरिमा रोम-रोम में भरा बैठा है। वृक्ष यदि संसार में न होते तो संभवतः हमारे लिए जीवित रहना ही संभव न हुआ होता। घांसपात और वनस्पतियों की महिमा तो लोग पशुओं के आहार, औषधि, अन्न, रस्सी, फूंस आदि के रूप में जानते हैं, पर वृक्षों की उपयोगिता की कम ही जानकारी लोगों के ध्यान में आई है। आमतौर से इतना ही जाना जाता है कि वृक्षों की छाया या फल-फूल काम में आते हैं। हमें यह भी जानना चाहिए कि मनुष्य की सांस से निकलने वाली विषैली कार्बनडाइ ऑक्साइड गैस को सोखकर निरंतर वायु को शुद्ध करते रहने का श्रेय वृक्षों को ही है, वे दिन भर यही काम करते हैं। रात को वे थोड़ी कार्बनडाइ ऑक्साइड गैस निकालते तो हैं, पर वह मनुष्य शरीर से निकलने वाली विष वायु जैसी हानिकारक नहीं होती। दिन भर वृक्ष ऑक्सीजन नामक प्राण वायु उगलते हैं। मनुष्य के लिए यही जीवनधारा है। ऑक्सीजन की कमी पड़ जाने से मनुष्य का जीवन संकट में पड़ जाता है और वह अन्न, जल से भी अधिक उपयोगी है। ऐसा बहुमूल्य आहार जिसकी पल-पल पर जरूरत पड़ती है और जो रक्त में लालिमा से लेकर जीवन धारक अनेक साधन जुटाता है, वृक्ष ही देते रहते हैं। वृक्ष न हों तो ऑक्सीजन की सारे संसार में कमी पड़ जाए और शरीर से तथा आग जलने से निकलने वाली विषैली वायु कार्बनडाइ ऑक्साइड सारे आकाश को दूषित कर ऐसी घुटन पैदा कर दे कि प्राणियों का जीवन धारण ही संभव न रहे। हर दृष्टि से वृक्षों को जीवनदाता कहा जाए तो अत्युक्ति न होगी। वृक्षों में एक ऐसा विशिष्ट आकर्षण है, जो बादलों को खींच कर लाता है और वर्षा की परिस्थितियां पैदा करता है। जहां वृक्ष अधिक होते हैं वहां वर्षा भी अधिक होती है। वृक्ष रहित प्रदेश में स्वयमेव वर्षा की कमी हो जाती है। वृक्षों की अभिवृद्धि का अर्थ अपने सुख-साधनों को बढ़ाना है।

विपक्ष की तिलमिलाहट

संजय गोस्वामी

आज विपक्ष की सारी खिसियाहट की ढ़ीकरा ईडी पर फूट रहा है और घेरे में है पीएम मोदी। विपक्ष की तिलमिलाहट कह रही है कि यह सबकुछ मोदी जी के इशारे पर हो रहा है आखिर! क्यों बीजेपी के नेताओं के घर ईडी नहीं पहुंच पा रही? विपक्ष कह रहा हैं कि बीजेपी इस समय सबसे बड़ी वॉशिंग मशीन है जहां जो भी नेता जाये उसके पीछे कोई ऐजेंसी नहीं पड़ती। वहीं बीजेपी का कहना है कि हमारे नेता शराब घोटाले में नामजद नहीं है और जो हैं वो बख्शे नहीं जायेगें, यानि बीजेपी का इशारा केजरीवाल की तरफ है। वहीं केजरीवाल का कहना है कि बीजेपी, दिल्ली में जीत कर दिखाये। यह मान लो कि पक्ष विपक्ष में दो धारी तलवारें खिचीं हैं अब देखना यह होगा कि रिजल्ट क्या रंग दिखाता है। वैसे तो गत वर्ष नवंबर में हुए विधानसभा चुनाव में तीन राज्यों में जीत हासिल करने के बाद यह स्पष्ट हो गया था कि केंद्र की भाजपा सरकार भ्रष्टाचार को लेकर विपक्षी दलों पूर्व मुख्यमंत्री सोरेन की गिरफ्तारी के बाद विपक्षी दलों के कई बड़े नेताओं पर गिरफ्तारी की तलवार लटक रही है। हेमंत सोरेन की गिरफ्तारी के बाद खतरे की घंटी सबसे तेज तो दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के आस पास ही बज रही है। आम आदमी पार्टी के संयोजक और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल दिल्ली शराब नीति घोटाला मामले का सामना कर रहे हैं। इस मामले में ईडी ने केजरीवाल को चार समन भेजे हैं लेकिन वो अभी तक केंद्रीय जांच एजेंसी के सामने पेश नहीं हुए हैं। वहीं केंद्रीय एजेंसियों की रडार पर करीब एक दर्जन से अधिक विपक्षी नेता हैं। देर-सवेर इनका भी बच पाना मुश्किल है। तेलंगाना के मुख्यमंत्री और कांग्रेस नेता रेवंत रेड्डी पर मनी लॉन्ड्रिंग का मामला है। के नेताओं को बख्शेगी नहीं। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की जमीन घोटाले में हुई गिरफ्तारी से यह बात साबित हो गई। आश्चर्य यह है कि विपक्षी दल सोरेन की गिरफ्तारी पर भाजपा पर राजनीतिक विद्वेषता से कार्रवाई करने का आरोप तो लगा रहे हैं किन्तु यह एक बार भी नहीं बताया कि देश से भ्रष्टाचार खत्म करने के लिए उनके पास क्या रोड मैप है। जिन राज्यों में विपक्षी दलों का शासन है, उनमें भ्रष्टाचार के खिलाफ क्या ठोस कदम उठाए गए हैं। इसके विपरीत केंद्र की भाजपा सरकार को समझ में आ गया है कि देश के मतदाता भ्रष्टाचार के खिलाफ उसकी मुहिम के समर्थन में हैं। कांग्रेस सहित अन्य विपक्षी दलों ने केंद्र की भाजपा सरकार को भ्रष्टाचार के आरोपों में घेरने की काफी कोशिश की, किन्तुलेकर विपक्षी दलों सुप्रीम कोर्ट में याचिका तक दायर की। सुप्रीम कोर्ट ने इन्हें सारहीन मान कर खारिज कर दिया। इससे भाजपा का नैतिक बल बढ़ गया। भाजपा ने भ्रष्टाचार की मुहिम को तेज करने के साथ ही सोरेने जैसे नेताओं के खिलाफ गिरफ्तारी की कार्रवाई की। विपक्ष भ्रष्टाचार पर बदले की नीयत का आरोप लगा रहा है किन्तु प्रवर्तन निदेशालय और केंद्रीय जांच ब्यूरो द्वारा नेताओं की गिरफ्तारी के ज्यादातर मामलों में अदालतों से जमानत तक नहीं मिल सकी। इससे जाहिर होता है कि ईडी और सीबीआई ने ठोस सबूतों के आधार पर कड़ी कार्रवाई की है। तृणमूल कांग्रेस और आप सहित कई पार्टियों के नेता जमानत नहीं मिलने के कारण महीनोंसालों से जेल में बंद हैं। अदालतों ने यह माना है कि इन नेताओं के खिलाफ भ्रष्टाचार में लिप्त होने के पर्याप्त सबूत मिले हैं। यही वजह है इनको जमानत नहीं मिल सकी, ताकि सबूतों और गवाहों को प्रभावित नहीं किया जा सके। गौरतलब है कि कांग्रेस सहित १४ दलों ने ईडी और सीबीआई पर दुर्भावना से कार्रवाई करने का आरोप लगाते हुए सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी। याचिका में जांच एजेंसियों को लेकर भविष्य के लिए दिशानिर्देश जारी करने की मांग की गई थी। विपक्षी दलों का तर्क था कि २०१३-१४ से २०२१-२२ तक सीबीआई और ईडी के मामलों में ६०० प्रतिशत की वृद्धि हुई है। ईडी की ओर से १२१ राजनीतिक नेताओं की जांच की गई है, जिनमें से ९५ प्रतिशत विपक्षी दलों से हैं। सीबीआई की ओर से १२४ जांचों में से ९५ प्रतिशत से अधिक विपक्षी दलों से हैं। सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा कि विशेष मामले के तथ्यों के बिना सामान्य दिशानिर्देश निर्धारित करना संभव नहीं है। सीजेआई ने कहा कि जब आपके पास व्यक्तिगत आपराधिक मामला हो तो हमारे पास वापस आएं। मामले के तथ्यों से संबंध रखे बिना सामान्य दिशा निर्देश देना खतरनाक होगा। इस पर विपक्षी दलों ने याचिका वापस ले ली। अब, ज्यादातर विपक्षी दलों के नेताओं को जमानत नहीं मिलने और सुप्रीम कोर्ट से विपक्षी दलों को मिली हार के बाद भाजपा के हौसले बुलंद हो गए। यही वजह है कि विगत विधानसभा चुनाव और उसके बाद सार्वजनिक तौर प्रधानमंत्री नरेन्द्र, गृहमंत्री अमित शाह सहित कई वरिष्ठ भाजपा नेता भ्रष्टाचार के खिलाफ हुंकार भरते रहे हैं। पूर्व मुख्यमंत्री केजरीवाल व सोरेन की गिरफ्तारी के बाद विपक्षी दलों के कई बड़े नेताओं पर गिरफ्तारी की तलवार लटक रही है। आम आदमी पार्टी और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल दिल्ली शराब नीति घोटाला मामले केजरीवाल जेल गए और चुनाव के लिए अंतरिम जमानत पर वापस आएंगे ऐसा लगा शायद 2 जनवरी की जगह कुछ और दिन मिल जाए तो 4 जून को अगर इंडी गठबंधन की किसी तरह की सरकार बन गई तो जेल से सदा के लिए छूट जाएंगे जो सुप्रीम कोर्ट से बीमारी पर याजिका की सुनवाई होती नहीं दिख रही है। वहीं केंद्रीय एजेंसियों की रडार पर करीब एक दर्जन से अधिक विपक्षी नेता हैं। देर-सवेर इनका भी बच पाना मुश्किल है। तेलंगाना के मुख्यमंत्री और कांग्रेस नेता रेवंत रेड्डी पर मनी लॉन्ड्रिंग का मामला है। आरोप है कि रेवंत जब टीडीपी में थे, तो उन्होंने साल २०१५ में विधान परिषद के चुनाव के दौरान अपने पक्ष में वोट देने के लिए एक विधायक को कथित तौर पर पचास लाख रुपये रिश्वत के तौर पर दिये थे। आंध्र प्रदेश के चीफ मिनिस्टर और वाईएसआर कांग्रेस के मुखिया जगन मोहन रेड्डी पर भी प्रवर्तन निदेशालय की नजर है। उन पर यूपीए शासन के दौरान ही कई मामले दर्ज हो गए थे। ईडी ने जगन मोहन के खिलाफ २०१५ में मनी लॉन्ड्रिंग का नया मामला दर्ज किया था। यह मामला जगन के स्वामित्व वाली भारती सीमेंट्स के पैसों के लेने-देने के आरोप से जुड़ा है। मौजूदा समय में वामदल की सरकार सिर्फ केरल में बची है और वहां भी राज्य के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन के खिलाफ ईडी मनी लॉन्ड्रिंग मामले की जांच कर रही है। मामला विजयन के बिजली मंत्री रहने के दौरान का है। सीबीआई ने १९९५ एसएनसी लवलीन केस में चार्जशीट दायर की थी। यह मामला इडुक्की में जलविद्युत परियोजनाओं के आधुनिकीकरण के लिए कनाडाई फर्म एसएनसी लवलिन को दिए गए अनुबंध में कथित भ्रष्टाचार से जुड़ा है। कांग्रेस नेता और कर्नाटक के डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार पर कई सालों से सीबीआई, ईडी और आयकर विभाग की नजर है। साल २०१३ से २०१८ के बीच ७४ करोड़ रुपये की आय को लेकर सीबीआई ने २०२० में कांग्रेस नेता पर केस दर्ज किया।

विश्व पर्यावरण दिवस : ग्लोबल वार्मिंग : खतरे में पर्यावरण

जन जीवन और जीव-जंतु की सांस अटकती जा रही है। ऐसे में सोशल मीडिया पर पेड़ों की कटाई और वातानुकूलित के बढ़ते जाल को सवालों के घेरे में लिया जा रहा है। आक्रोश वाजिब है, लेकिन जिम्मेदार कौन है? विकास के नाम पर पेड़ो को काटा जाना। हर शहर में औद्योगिक क्षेत्र स्थापित करना, बाग-बगीचा की परिपाटी को खत्म कर कंक्रीट का जंगल उगा देना। शहरी और ग्रामीण इलाकों में तेजी से कंक्रीट के नई बस्ती का बसना लेकिन पेड़ नहीं लगाना। घर के आगे मिटटी को कंक्रीट से पाट सड़क बना देना, परती जमीन या खेत में पेड़ नहीं इमारते खड़ी होना, सरकारें और इन्सान को सवालों के घेरे में ले रही हैं । आरोप के मद्देनजर ग्लोबल वार्मिंग पेड़ों के काटने और वातानुकूलित के बढ़ते जाल से तो हैं ही, साथ ही और भी गंभीर कारण है। बिहार के गया में 14 मई 1970 को तापमान 47.1 डिग्री पहुंचा था। और 2024 में 54 साल बाद तापमान ने सारे रिकॉर्ड को ध्वस्त कर दिया। बिहार के 10 जगहों पर 30 मई 2024 को तापमान 48, 49, 50 डिग्री सेल्यिसय तक पहुंच गया। अगर देखें तो आज की तुलना में 1970 कितने वातानुकूलित थे? उस वक्त भयानक तापमान की वृद्धि हुई थी। बिहार में उस वक्त तापमान 47.1 डिग्री तक पहुँच गया था जाहिर है सिर्फ बिहार में ही यह नहीं हुआ होगा देश-विदेश में तापमान बढ़ा होगा। और उस वक्त वातानुकूलित का जलवा आज की तरह नहीं था। लेकिन दूसरे कारणों से वैश्विक तापमान में वृद्धि जारी थी। जलवायु परिवर्तन हो रहा था। पेड़ों के काटे जाने पर, उठते सवाल के बीच वरिष्ठ पत्रकार प्रमेन्द्र सोशल मीडिया पर लिखते हैं, क्या आप और हम काटते हैं पेड़ ? हमारी गलती से बढ़ रही है गर्मी? जवाब भी देते हैं बिल्कुल नहीं। वे लिखते हैं, गर्मी बढ़ रही है और सोशल मीडिया पर लगातार आम जनता को गालियां दी जा रही हैं कि तुम्हारे ही पेड़ काटने से गर्मी बढ़ रही है।

संजय कुमार
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

ग्लोबल वार्मिंग से पिछले सारे तापमान के रिकॉर्ड टूटते जा रहे हैं वहीं, पर्यावरण खतरे में पड़ता जा रहा है। तापमान के बढ़ने से देश-दुनिया का हाल बेहाल है। जन जीवन और जीव-जंतु की सांस अटकती जा रही है। ऐसे में सोशल मीडिया पर पेड़ों की कटाई और वातानुकूलित के बढ़ते जाल को सवालों के घेरे में लिया जा रहा है। आक्रोश वाजिब है, लेकिन जिम्मेदार कौन है? विकास के नाम पर पेड़ो को काटा जाना। हर शहर में औद्योगिक क्षेत्र स्थापित करना, बाग-बगीचा की परिपाटी को खत्म कर कंक्रीट का जंगल उगा देना। शहरी और ग्रामीण इलाकों में तेजी से कंक्रीट के नई बस्ती का बसना लेकिन पेड़ नहीं लगाना। घर के आगे मिटटी को कंक्रीट से पाट सड़क बना देना, परती जमीन या खेत में पेड़ नहीं इमारते खड़ी होना, सरकारें और इन्सान को सवालों के घेरे में ले रही हैं । आरोप के मद्देनजर ग्लोबल वार्मिंग पेड़ों के काटने और वातानुकूलित के बढ़ते जाल से तो हैं ही, साथ ही और भी गंभीर कारण है। बिहार के गया में 14 मई 1970 को तापमान 47.1 डिग्री पहुंचा था। और 2024 में 54 साल बाद तापमान ने सारे रिकॉर्ड को ध्वस्त कर दिया। बिहार के 10 जगहों पर 30 मई 2024 को तापमान 48, 49, 50 डिग्री सेल्यिसय तक पहुंच गया। अगर देखें तो आज की तुलना में 1970 कितने वातानुकूलित थे? उस वक्त भयानक तापमान की वृद्धि हुई थी। बिहार में उस वक्त तापमान 47.1 डिग्री तक पहुँच गया था जाहिर है सिर्फ बिहार में ही यह नहीं हुआ होगा देश-विदेश में तापमान बढ़ा होगा। और उस वक्त वातानुकूलित का जलवा आज की तरह नहीं था। लेकिन दूसरे कारणों से वैश्विक तापमान में वृद्धि जारी थी। जलवायु परिवर्तन हो रहा था।

पेड़ों के काटे जाने पर, उठते सवाल के बीच वरिष्ठ पत्रकार प्रमेन्द्र सोशल मीडिया पर लिखते हैं, क्या आप और हम काटते हैं पेड़ ? हमारी गलती से बढ़ रही है गर्मी? जवाब भी देते हैं बिल्कुल नहीं। वे लिखते हैं, गर्मी बढ़ रही है और सोशल मीडिया पर लगातार आम जनता को गालियां दी जा रही हैं कि तुम्हारे ही पेड़ काटने से गर्मी बढ़ रही है। आम आदमी भी बेचारा शर्म के मारे कुछ बोल नहीं रहा ..उसे लग रहा है कि सही में उसने ही इतना बड़ा अपराध कर दिया है की गर्मी बढ़ रही है और वही लू से मर रहा है ...यानी दोहरी मार-शर्म की मार और लू की मार। यह नया ट्रेंड है कि हर बात के लिए आम आदमी को दोषी ठहरा दिया जाना। आप गौर से देखेंगे तो आम आदमी जितने पेड़ जिंदगी में काटा होगा उससे ज्यादा लगा चुका होता है। जो पेड़ कट रहे हैं हजारों लाखों की संख्या में यह आम आदमी नहीं काट रहा। यह सरकारें काट रही हैं। बड़ी-बड़ी कंपनियां काट रही हैं। जंगल बचाने के जिम्मेदार अधिकारी काट रहे हैं। 800 वर्ग फुट में रहने वाला, पेड़ भी नहीं लगा सकता, उसके पास जमीन भी नहीं है। जमीन है सरकारों के पास, इंडस्ट्रीज के पास, बड़ी-बड़ी कंपनियों के पास वहां क्यों नहीं पेड़ लगा रहे ? जहां पेड़ लगे हैं वहां काट के पार्क बना दे रहे हैं और दोषी हो गया आम आदमी? रेलवे हो, बिजली बोर्ड हो, दूरसंचार विभाग हो, एनटीपीसी ऐसे कितने विभाग हैं जो लाखों करोड़ों हेक्टेयर जमीन दबा कर बैठे हैं। काहे नहीं पेड़ लगा रहे हैं? भर दो पेड़ों से। एक नेता/ अधिकारी के पीछे दर्जनों गाड़ियां - यह प्रदूषण नहीं है जो आपकी एक स्कूटी के प्रदूषण को लेकर के आपको दोष दिया जा रहा है? आपके घर में एक एसी लगा है तो आपको कोस रहे हैं और हालात यह है कि जिनके लैट्रिन बाथरूम तक में एसी लगा है वह आराम से बैठे हैं। इस नेरेटिव से बचिए की दोषी आम लोग हैं। हम लोग दोषी नहीं है। सच है ग्लोबल वार्मिंग एक दिन या वर्ष की घटना नहीं है। कह सकते हैं कि ग्लोबल वार्मिंग का तात्पर्य वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों की बढ़ती सांद्रता के कारण पृथ्वी की सतह के तापमान में दीर्घकालिक वृद्धि से हुआ है। जब जीवाश्म ईंधन जलते हैं, तो ग्रीनहाउस गैसें वायुमंडल में छोड़ी जाती हैं, जो ग्रह के चारों ओर कंबल की तरह लिपट जाती हैं, पृथ्वी की गर्मी को रोक लेती है, जिससे सतह का तापमान बढ़ जाता है। ग्लोबल वार्मिंग में सबसे बड़ा योगदान देने वाली ग्रीनहाउस गैसें कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड हैं, जिनकी एक महत्वपूर्ण मात्रा ज्वालामुखी विस्फोट, परिवहन, विनिर्माण, निर्माण, कृषि और तेल व गैस उद्योगों से आती है। रिपोर्ट बताती है कि ग्लोबल वार्मिंग के लिए मानवीय गतिविधियाँ ही जिम्मेदार रही हैं। मुख्य रूप से तेल, कोयला, रेफ्रीजरेटर, एयर-कंडीशनर और गैस जैसे जीवाश्म ईंधन को जलाने की गति ने नाजुक हालात पैदा कर रहे हैं। 1800 के उत्तरार्ध से पृथ्वी की औसत सतह का तापमान 1.1 डिग्री सेल्सियस बढ़ गया था। वर्तमान में मानवीय गतिविधियों के कारण उत्पन्न ग्रीनहाउस गैसों के प्रभाव स्वरूप पृथ्वी के दीर्घकालिक औसत तापमान में हुई वृद्धि को वैश्विक तापमान/ग्लोबल वार्मिंग कहा जाता है। 1880 से 2012 की अवधि के दौरान पृथ्वी के औसत सतही तापमान में 0.85त्ध की वृद्धि दर्ज की गयी है। इसके बाद लगातार बढ़ ही रही है। वैश्विक तापमान बढ़ने से ग्लेशियर पिघलने लगते हैं और जल सागरों में मिलता है तो समुद्री जल स्तर में वृद्धि हो जाती है। ग्लेशियरों से कई बारहमासी नदियां निकलती है और ग्लेशियर के जल को अपने साथ बहाकर ले जाती हैं। ताप में वृद्धि के कारण वर्षा-प्रतिरूप या पैटर्न भी बदल जाता है अर्थात कहीं वर्षा पहले से कम होती है तो कहीं पहले से ज्यादा। वर्षा की अवधि में भी बदलाव आया है। समुद्री-जल के ताप बढ़ने से प्रवाल भित्ति (समुद्र के भीतर स्थित चट्टान हैं जो प्रवालों द्वारा छोड़े गए कैल्सियम काबोर्नेट से निर्मित होती हैं) का विनाश होने लगता है। साथ ही समुद्री जल प्राथमिक जीव का विनाश होने लगता है। ताप में वृद्धि होने से सागरीय जलस्तर ऊपर उठंगे, ऐसे में तटीय क्षेत्र व द्वीप जलमग्न होने की संभवना बढ़ जाती है। वैश्विक तापमान चुनौतीपूर्ण हो सकता है लेकिन इसे रोका जा सकता है। इसके लिए संयुक्त प्रयास जरुरी है और ग्लोबल वार्मिंग को रोका जा सकता है। आम-खास लोगों और सरकारों को मिल कर कदम उठाने होंगे। वैश्विक तापमान को बढ़ने से रोकना है, तो सबसे पहले हमें पेड़ लगाने होंगे। कोशिश हो की मिनी जंगल लगाया जाए। वैसे एक एकल पेड़ अपने जीवनकाल में एक टन कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करता है। हर व्यक्ति अपने अपने घर के आगे एक पेड़ लगाये तो कुछ हद तक तस्वीर बदल सकती है। खाली जमीनों पर सरकार पहल करें। नीम पीपल तुलसी अभियान के संयोजक धर्मेंद्र कुमार कहते हैं तापमान बढ़ने का अभास 1972 से अन्य देश को हुआ। सभी देश के लोग मिलकर विश्व पर्यावरण दिवस, पृथ्वी दिवस, जल दिवस, वन दिवस, अंतरराष्ट्रीय जैव-विविधता दिवस मानते रहे हैं, अंतरराष्ट्रीय दिवस मनाते आ रहे पर सरकार द्वारा संचालित नर्सरी में पौराणिक पौधा बरगद, पीपल, गुलर, पाकड़, नीम के पौधा तैयार नहीं की जाती हैं । सभी नर्सरी में पौराणिक पौधा युद्ध स्तर पर तैयार हो, पौराणिक पौधा का संरक्षण, संरक्षक की जाए तभी तापमान में वृद्धि को रोका जा सकता है । वैश्विक तापमान को रोकने के लिए हमें वाहन का प्रयोग कम करना होगा। सार्वजनिक परिवहन या कारपूल को चुना जा सकता हैं। पैदल या साईकिल का प्रयोग भी करें। विकल्प के तौर पर इलेक्ट्रिक वाहन आ गए है। रीसाइक्लिंग को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। घरेलू कचरे को रिसाइकिल करके प्रति वर्ष 2,400 पाउंड कार्बन डाइऑक्साइड बचाया जा सकता है। सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग बंद करना होगा, प्रतिबंध के बावजूद कई शहरों में यह प्रचलन में हैं। इससे वातावरण प्रदूषित होता है। सिंगल यूज प्लास्टिक को जलाने से निकलने वाला धुआं हृदय रोग का खतरा बढ़ाता है और सांस की समस्याओं को बढ़ाता है। इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से भी कार्बन डाइऑक्साइड निकलता है।

कृति एवं पर्यावरण में जहर घोलने से बढ़ी जानलेवा गर्मी

हीटवेव या यों कहें कि लू के थपेड़ों ने जनजीवन को मौत के मुहाने पर खड़ा कर दिया है। लू या हीटवेव या तापघात के कारण देश के विभिन्न हिस्सों में मौत के समाचार भी आ रहे हैं। तस्वीर का एक पहलू यह है कि अभी तक सही मायने में हमारे देश में हीटवेव को डिजास्टर मैंनेजमेंट में पूरी तरह से शामिल नहीं किया गया है। वैज्ञानिक बता रहे हैं कि शहरों में हीट आइलैंड बन रहे हैं, जिसके लिए मुख्य रूप से सीमेंट-तारकोल और कृत्रिम वातानुकूलित (एसीवाली) जीवनशैली जिम्मेदार है। कंक्रीट और तारकोल के जंगलों का विस्तार करने को जब तक हम अपनी जरूरत समझते रहेंगे तब तक हरे-भरे जंगलों को कटने से कोई नहीं रोक सकेगा। दुनिया की तीसरी आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर देश जब तक जीडीपी से विकास को मापेगा, बेहिसाब औद्योगीकरण एवं शहरीकरण की होड़ रहेगी, तब तक पर्यावरण असंतुलन एवं गर्मी का प्रकोप ऐसे ही विनाश का कारण बनता रहेगा। इस बार बढ़ती गर्मी ने सारे रेकॉर्ड तोड़ दिये हैं जो हमारे लिए चौंकाने से ज्यादा गंभीर चिंता की बात है। राजधानी दिल्ली के एक इलाके में अधिकतम पारा 52 .9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया जो देश के इतिहास का सबसे ज्यादा तापमान है। राजस्थान के चुरु और फलोदी आदि का पारा तो 50 के आसपास या ऊपर ही चल रहा है।

ललित गर्ग
लेखक शिक्षाविद है

लोकसभा चुनाव के प्रचार की गर्मी भले ही समाप्त हो गयी हो लेकिन प्रकृति से जुड़ी गर्मी सौ-डेढ़ सौ वर्षों का रिकार्ड तोड़ते हुए कहर बरपा रही है। दिल्ली का पारा 50 डिग्री से तो ज्यादा ही रहा है। देश के 17 से अधिक शहरों में तापमान उच्चतम स्तर पर चल रहा है। यह एक तरह का प्राकृतिक आपातकाल है। हीटवेव या यों कहें कि लू के थपेड़ों ने जनजीवन को मौत के मुहाने पर खड़ा कर दिया है। लू या हीटवेव या तापघात के कारण देश के विभिन्न हिस्सों में मौत के समाचार भी आ रहे हैं। तस्वीर का एक पहलू यह है कि अभी तक सही मायने में हमारे देश में हीटवेव को डिजास्टर मैंनेजमेंट में पूरी तरह से शामिल नहीं किया गया है। वैज्ञानिक बता रहे हैं कि शहरों में हीट आइलैंड बन रहे हैं, जिसके लिए मुख्य रूप से सीमेंट-तारकोल और कृत्रिम वातानुकूलित (एसीवाली) जीवनशैली जिम्मेदार है। कंक्रीट और तारकोल के जंगलों का विस्तार करने को जब तक हम अपनी जरूरत समझते रहेंगे तब तक हरे-भरे जंगलों को कटने से कोई नहीं रोक सकेगा। दुनिया की तीसरी आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर देश जब तक जीडीपी से विकास को मापेगा, बेहिसाब औद्योगीकरण एवं शहरीकरण की होड़ रहेगी, तब तक पर्यावरण असंतुलन एवं गर्मी का प्रकोप ऐसे ही विनाश का कारण बनता रहेगा। इस बार बढ़ती गर्मी ने सारे रेकॉर्ड तोड़ दिये हैं जो हमारे लिए चौंकाने से ज्यादा गंभीर चिंता की बात है। राजधानी दिल्ली के एक इलाके में अधिकतम पारा 52.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया जो देश के इतिहास का सबसे ज्यादा तापमान है। राजस्थान के चुरु और फलोदी आदि का पारा तो 50 के आसपास या ऊपर ही चल रहा है। जैसलमेर आदि स्थानों पर गर्मी इतने तेज है कि धरती तवे की तरह तप रही है, लोगों ने पापड़ सेक कर या आमलेट बनाते हुए दृश्य सोशल मीडिया पर दिखाये हैं। पानी की कमी, बिजली कटौती और गर्म लू के कारण बीमारी के हालात गंभीर होते जा रहे है। इतनी तेज गर्मी में पेयजल की उपलब्धता, बिजली की आपूर्ति व ट्रिपिंग की समस्या से निजात पाना मुश्किल हो रहा है। सवाल यह है कि इस भीषण लू या यों कहें कि हीटवेव के लिए बहुत कुछ हम और हमारा विकास का नजरिया भी जिम्मेदार है। आज शहरीकरण और विकास के नाम पर प्रकृति को विकृत करने में हमने कोई कमी नहीं छोड़ी है। पेड़ों की खासतौर से छायादार पेड़ों की अंधाधुंध कटाई एवं गांवों में हो या शहरों में आंख मींचकर कंक्रिट के जंगल खड़े करने की होड़ के दुष्परिणाम प्रकृति एवं पर्यावरण की विकरालता के रूप में सामने हैं। जल संग्रहण के परंपरागत स्रोतों को नष्ट करने में भी हमने कोई गुरेज नहीं किया। अब विकास एवं सुविधाओं और प्रकृति के बीच सामंजस्य की और ध्यान देना होगा नहीं तो आने वाले साल और अधिक चुनौती भरे होंगे। कंक्रिट के जंगलों से लेकर हमारे दैनिक उपयोग के अधिकांश साधन एवं विकास की भ्रामक सोच तापमान को बढ़ाने वाले ही हैं।

विडंबना यह है कि ग्लोबल वार्मिंग की दस्तक देने के बावजूद विकसित व संपन्न देश पर्यावरण संतुलन के प्रयास करने तथा आर्थिक सहयोग देने से बच रहे हैं। ऐसा नहीं है कि मौसम की मार से कोई विकसित व संपन्न देश बचा हो, लेकिन प्राकृतिक संसाधनों के क्रूर दोहन से औद्योगिक लक्ष्य पूरे करने वाले ये देश अब विकासशील देशों को नसीहत दे रहे हैं। निश्चित रूप से बढ़ता तापमान उन लोगों के लिये बेहद कष्टकारी है, जो पहले ही जीवनशैली से जुड़े रोगों एवं समस्याओं से जूझ रहे हैं। जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता असाध्य रोगों की वजह से चूक रही है। ऐसा ही संकट वृद्धों के लिये भी है, जो बेहतर चिकित्सा सुविधाओं व सामाजिक सुरक्षा के अभाव में जीवनयापन कर रहे हैं। वैसे एक तथ्य यह भी है कि मौसम के चरम पर आने, यानी अब चाहे बाढ़ हो, शीत लहर हो या फिर लू हो, मरने वालों में अधिकांश गरीब व कामगार तबके के लोग ही होते हैं। जिनका जीवन गर्मी में बाहर निकले बिना या काम किये बिना चल नहीं सकता। निष्कर्षतः कह सकते हैं कि उन्हें मौसम नहीं बल्कि गरीबी मारती है। जलवायु परिवर्तन का असर अब ज्यादा स्पष्ट तौर पर दिखने लगा है। अगर गर्मी पड़ रही है तो पिछले कई दशक के रिकॉर्ड तोड़ रही है। अगर बारिश हो रही है तो कुछ घंटों में ही पूरे मॉनसून की बरसात के बराबर पानी गिर रहा है। सर्दी भी साल-दर-साल नए रिकॉर्ड बना रही है। कुल मिलाकर हर मौसम अब अप्रत्याशित क्रूरतम रुख दिखा रहा है। वैज्ञानिकों के मुताबिक, अल नीनो और कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन की दोहरी मार के कारण धरती के तापमान में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। इससे धरती पर मौजूद सभी जीव-जंतुओं, वनस्पति और इंसानों को भीषण गर्मी का सामना करना पड़ रहा है। अनेक लोगों की भीषण गर्मी में जान चली गयी, बिहार की स्कूली छात्राएं बड़ी संख्या में बेहोश हो गयी। इन जटिल स्थितियों को देखते हुए गर्मी के मौसम में काम के घंटों का निर्धारण एवं स्कूलों में गर्मी की छुट्टियों की अवधि मौसम की अनुकूलता के अनुरूप ही होनी चाहिए। आसन्न संकट को महसूस करते हुए दीर्घकालीन रणनीति, इस चुनौती से निपटने के लिये बनाने की जरूरत है।

रूढ़िवादी परम्पराओं के नाम पर महिलाओं का शोषण!

सोनम लववंशी

पश्चिमी अफ्रीका में स्थित सबसे छोटा देश गाम्बिया आजकल पूरी दुनिया में चर्चा का केंद्र बना हुआ है। कहने को इस देश की आबादी महज 26 लाख है, लेकिन यहां की संसद में एक ऐसा विधेयक लाया गया है। जो काफी हैरान करने वाला है। इस विधेयक के अनुसार महिलाओं के खतना करने की बात कही गई है। जबकि साल 2015 में ही महिलाओं के खतना पर रोक लगा दी गई थी। लेकिन बीते दिनों 8 नाबालिग बच्चियों का खतना करने को लेकर विवाद इतना गरमाया कि इस मामले में तीन महिलाओं को सजा देनी पड़ी। ऐसे में इस बहस ने पूरे देश के जनमत को दो हिस्सों में बांट दिया। एक पक्ष महिलाओं के खतना करने के पक्ष में खड़ा हो गया। जो समाज, संस्कृति और परम्परा के नाम पर महिलाओं का शोषण करने की वकालत कर रहा है जबकि दूसरा पक्ष महिलाओं का पक्षधर है जो इस प्रथा का विरोध कर रहा है। विडंबना देखिए कि अगर ये विधेयक कानून बन गया तो इस कुप्रथा को अपनाने वाला गाम्बिया दुनिया का पहला देश बन जाएगा और अगर ऐसा होता है तो सौ फीसद मुमकिन है कि दुनिया के अन्य हिस्सों में भी इसे मजहब के नाम पर महिलाओं के शोषण के हथियार के तौर पर देखा जाने लगेगा।

महिलाओं के प्रति पुरुषों की सोच आज भी अधिनायकवादी है। यही वजह है कि कहने को तो हम आधुनिक हो चले हैं, लेकिन हमारे समाज में अब भी कुछ रूढ़िवादी परम्पराएं हैं जो सदियों से जस की तस चली आ रही हैं। इनमें महिलाओं का फीमेल जेनिटल म्यूटिलेशन (एफजीएम) यानी खतना भी शामिल है। वैसे देखा जाए तो परम्पराओं के नाम के पर महिलाओं का शोषण सदियों से होता आया है। हमारे रीति रिवाज को आगे बढ़ाने का काम महिलाओं के जिम्मे ही रहा है। खास कर खतना जैसी कुप्रथा के पीछे भले ही धार्मिक चोला पहनाया जाता रहा हो, लेकिन असल मकसद महिलाओं की यौन इच्छाओं पर नियंत्रण करना है। वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन कि माने तो बच्चियों का कम उम्र में ही खतना कर दिया जाता है। इस प्रक्रिया में एक्सटर्नल प्राइवेट पार्ट के उन हिस्सों को कट किया जाता है, जिनसे यौन इच्छाओं का संबंध होता है। इसके पीछे महिलाओं के शादी के पहले संबंध न बनाने, या फिर यौन सुख से दूर रखने की सोच होती है। विडंबना देखिए कि इस दर्दनाक प्रक्रिया के दौरान न तो बेहोश किया जाता और न ही कोई डॉक्टर निगरानी के लिए मौजूद होता है। इस दर्दनाक प्रक्रिया के दौरान कई मासूम लड़कियों की मौत तक हो जाती है।

हमारा समाज आज भी एक लड़की को वस्तु की तरह ही देखता आया है। लड़की को छोटी सी उम्र से ही ये अहसास दिलाया जाता है कि वे पराया धन है उन्हें शादी करके दूसरा घर बसाना है। यहां तक कि खुद से बड़ी उम्र के पुरूष के लिए सम्भावित दुल्हन के रूप में देखा जाने लगता है। उन्हें शारीरिक पवित्रता की परीक्षा देने के लिए मजबूर किया जाता है। एक लड़की को बचपन से ही पितृसत्तात्मक समाज के ढांचे में फिट रहने की कवायद शुरू कर दी जाती है। उसके उठने, चलने या बोलने से लेकर शारिरिक जरूरत तक को कंट्रोल करने का काम किया जाता है। घर की इज्जत मान मयार्दा को जोड़कर बंदिशें लागू कर दी जाती है। गाम्बिया का यह प्रकरण देश दुनिया की महिलाओं के लिए एक सीख लेकर आया है। महिला अधिकारों की बातें करना और उसे हकीकत में लागू करना इन दोनों ही बातों में जमीन आसमान का फर्क है। महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए सदियों से संघर्ष करना पड़ा है। आज भी पितृसत्तात्मक समाज महिलाओं को अपने हाथों की कठपुतली बनाकर रखना चाहता है तभी तो उन्हें मिले अधिकारों को भी छिनने की कोशिश की जाती रही है। गाम्बिया की महिलाएं भी अभी ऐसे ही दर्द को झेलने पर मजबूर है। महिलाओं की राजनीति में बराबर की भागीदारी होना बहुत जरूरी है वरना कब उन्हें बंदिशों में बांध दिया जाए कोई नहीं कह सकता।

संक्षिप्त खबरें

3 अभियुक्त गिरफ्तार,25 लीटर देशी शराब, 01 मोटरसाईकिल बरामद

बगहा।बगहा पुलिस जिला में सोमवार को विगत 24 घंटा में 03 अभियुक्त की गिरफ्तारी की गई है।कुल-07 वारंट का निष्पादन किया गया हैं।जिसमें जमानतीय 04 अजमानतीय 03 है। उक्त जानकारी पुलिस अधीक्षक,बगहा सुशांत कुमार सरोज ने दिया। उन्होंने बताया कि भैरोगंज थाना द्वारा शराब के काण्ड में 02 तथा वारंट में 01 अभियुक्त को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया साथ ही 25 लीटर देशी शराब, 01 मोटरसाईकिल बरामदगी की गई।एसपी ने बताया कि बगहा पुलिस द्वारा अपराध नियंत्रण हेतु वाहन जॉच किया गया।जॉच के क्रम में रामनगर थाना द्वारा-38,500, यातायात थाना द्वारा-25,000, धनहाँ थाना द्वारा-9,000, चौतरवा थाना द्वारा-4,000, बगहा थाना द्वारा-2,000 इस प्रकार कुल-78,500 रुपए का जुमार्ना लगाया गया।

दाउदपुर पुलिस ने देशी शराब के साथ एक चार पहिया वाहन किया जब्त

माँझी दाउदपुर छपरा-सिवान मुख्य मार्ग पर स्थित बनवार फलाई ओवर ब्रिज के पातुकिया मोड़ के समीप मंगलवार की सुबह दाउदपुर थाना पुलिस ने भारी मात्रा में देसी शराब के साथ एक चार पहिया वाहन को जब्त किया है। थानाध्यक्ष नवलेश ने बताया कि स्थानीय थाना पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि एक देसी शराब लदी कार उक्त मार्ग से गुजरने वाली है। जिसपर तत्काल पहल करते हुए पुलिस बल की एक टीम गठित कर ओवर ब्रिज के पातुकिया मोड़ के समीप तैनात कर दिया गया। इसी बीच छपरा की ओर से आ रही एक कार को रुकने का इशारा किया गया तो चालक पकड़े जाने के डर से कार को सड़क किनारे खड़ा कर फरार हो गया। जब वाहन की तलाशी ली गई तो उसके अंदर से करीब एक हजार दस लीटर देसी शराब बरामद किया गया। उसके बाद पुलिस ने देसी शराब समेत तत्काल वाहन को जब्त कर लिया। फिलहाल पुलिस जब्त वाहन की कागजत की जांच पड़ताल कर आगे की कानूनी कार्यवाई करने में जुटी है।

राजीव प्रताप रूढ़ी के लगातार पांचवीं बार जीतने पर कार्यकताओं में उत्साह का माहौल

मढ़ौरा ग्रामीण सारण लोक प्रिय सांसद राजीव प्रताप रूढ़ी ने लोक सभा चुनाव में लगातार तीसरी बार जीत का परचम लहराया है। उन्होंने ने लगातार तीसरी बार जीत दर्ज कराई है।जिसको लेकर कार्यकताओं में खुशी की लहर है।स्थानीय कार्यकताओं ने एक दूसरे को अबीर गुलाल लगाकर और मिठाई बांटकर अपनी खुशी का इजहार किया है। उधर भाजपा कार्यकर्ता शैलेश राय कहां की यह जीत जनता की जीत है। बीजेपी के वरिष्ठ नेता पिंटू सिंह,शैलेश राय, हर्षवर्धन दीक्षित, ठाकुर, अमर सिंह,नीतू सिंह, भानु सिंह,रंजीत सिंह,सहित साइक्लो कार्यकताओं ने बढ़ाई दी है।

बाइक से घूमने निकले भाई-बहन की वाहन की चपेट में आने से मौत

प्रात: किरण, संवाददाता

भेल्दी(सारण)।बाइक से बाजार घूमने के लिए निकले मौसेरे भाई व बहन की सड़क हादसे में दर्दनाक मौत हो गई।मृतक अभिषेक कुमार दीक्षित(18) भेल्दी थाने के भेल्दी टोला गांव के शंभूनाथ दीक्षित का पुत्र बताया जाता है वहीं मृतका स्नेहा कुमारी उर्फ खुशी(19) भेल्दी थाने के सिरसा खेमकरण गांव के अखिलेश सिंह की पुत्री बताई जाती है।

मिली जानकारी के अनुसार भेल्दी थाने के भेल्दी टोला गांव के इंटर का छात्र अभिषेक कुमार दीक्षित अपने ममहर सोनपुर थाने के दामोदरपुर गांव से सोमवार की शाम अपने मसौरी बहन स्नेहा कुमारी उर्फ खुशी के साथ बाइक से बाजार घूमने के लिए निकला था।दोनों बाइक से सोनपुर थाने के दरिहारा-शिकारपुर मार्ग पर पहुंचे तभी वाहन की चपेट में दोनों गंभीर रूप से जख्मी हो गए।इलाज के दौरान दोनों की मौत हो गई। स्नेहा गर्मी की छुट्टी में कोलकता से आई थी घर और मंगलवार को फिर जाने वाली थी कोलकता स्नेहा उर्फ खुशी कुछ ही दिन पहले गर्मी की छुट्टी बिताने के लिए कोलकता से अपने परिजनों के साथ भेल्दी थाने के सिरसा खेमकरण गांव आई थी और तीन दिन पूर्व अपने ममहर दामोदरपुर गई हुई थी।स्नेहा सोमवार को ही अपने मौसेरे भाई अभिषेक के साथ बाइक पर सवार होकर बाजार घूमने जा रही थी तभी वाहन की चपेट में आने से दोनों की मौत हो गई।

अभिषेक पटना में रहकर करता था पढाई अभिषेक कुमार दीक्षित उर्फ तुलसी अपने गांव से इसी साल मैट्रिक पास करने के बाद पटना में रहकर पढ़ाई कर रहा था और तीन दिन पहले वह भी अपने ममहर दामोदरपुर पहुंचा था।सोचा कि कल मेरी बहन स्नेहा कोलकता चली जाएगी इस लिए आज बाजार घूम लें ?मगर भगवान को कुछ और ही मंजूर था।

दो की मौत के बाद भेल्दी टोला व सिरसा खेमकरण गांव में पसरा मातमी सन्नाटा मौसेरे भाई-बहन की मौत के बाद भेल्दी टोला व सिरसा खेमकरण गांव में मातमी सन्नाटा पसरा हुआ है।अभिषेक का शव भेल्दी टोला गांव में पहुंचते ही परिजनों में चीख-पुकार मच गई।मृतक अभिषेक की मां संगीता दीक्षित व दादी उर्मिला दीक्षित शव देखते ही दहाड़ मारकर रोने लगी।भाई अंशु पिता शंभूनाथ दीक्षित व दादा राधेकृष्ण दीक्षित के आंखों से सूखने का नाम नहीं ले रहा था।वहीं सिरसा खेमकरण गांव में इंटर की छात्रा स्नेहा उर्फ खुशी का शव पहुंचते ही गांव के लोग जुट गए।पुत्री खुशी का शव देखते ही मां बेबी देवी मूर्छित होकर गिर पड़ी वह जब भी होश में आती पुत्री के शव से लिपटकर रोने लगती।बहन तूषी कुमारी व पिता अखिलेश सिंह का रो-रोकर बुरा हाल है।अखिलेश सिंह को महज दो ही पुत्री थी जिसे बेटे की तरह मानते थे।गांव वाले ने बताया कि काफी मन्नत के बाद 12 साल बाद पुत्री हुई थी।स्नेहा का दाह-संस्कार गांव में ही किया गया।

सिंग्रीवाल के प्रचंड जीत पर बोली जनता एनडीए पर लोगों ने जताया भरोसा

प्रात: किरण, संवाददाता

माँझी सारण चार जून मंगलवार को मतगणना को लेकर प्रखंड के सभी लोग टीवी या मोबाइल के सहारे चुनावी मतगणना का पल पल अपडेट जनने को इक्षुक दिखे वही अपने अपने पार्टी के समर्थकों की टोली भी परिणम जानने को बेचैन रहे वही महारजगंज लोक सभा क्षेत्र का परिणाम सुनने के बाद भाजपा नेताओ ने कहा कि महारजगंज की जनता ने आदरणीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संकल्प को लेकर अबकी बार-एनडीए 300 के करीब के आंकड़े के करीब पहुचाया देश की जनता ने यह बता दिया है कि उन्हें सिर्फ एनडीए पर भरोसा है। उन्होंने कहा की एनडीए को एकतरफा परिणाम मिलता देख विपक्ष बेचैनी में है। विपक्ष में शामिल पार्टियां बहुमत का ख्वाब देख रही थीं, लेकिन चार जून जब महारजगंज में चौकाने वाला परिणाम आया तो सबकी बोलती बंद हो गई। भाजपा समर्थकों ने कहा की लगातार तीसरी बार इस क्षेत्र में एनडीए को बढ़त हासिल करना यह गौरव की बात है चुनाव शुरू होने से पहले ही जहां, एनडीए की जीत पक्की थी, अबकी बार जनता ने महागठबंधन के मंसूबों पर पानी फेर फिर से एनडीए को सरकार बनाने के लिए एकतरफा जनादेश दिया है। 2024 का परिणाम अविश्वसनीय ही नहीं, बल्कि ऐतिहासिक है।देश के सभी राज्यों में भाजपा और एनडीए का प्रदर्शन स्वर्णिम भारत का संकेत है। आने वाला पांच साल आदरणीय प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश एक बार फिर दुनिया में कीर्तिमान स्थापित करने का काम करेगा और तीसरी आर्थिक महाशक्ति की ओर बढ़ने को अग्रसर होगा।

चुनाव में प्रचंड जीत जनता का एनडीए पर भरोसा: श्याम बिहारी अग्रवाल

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। भाजपा निमीडिया प्रभारी श्याम बिहारी अग्रवाल ने कहा कि जनता ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संकल्प अबकी बार-एनडीए 300 पार को सिद्धि तक पहुँचा यह बता दिया कि उन्हें सिर्फ एनडीए पर भरोसा है। वहीं एनडीए को एकतरफा परिणाम मिलता देख विपक्ष ने हायतौबा मचाना शुरू कर दिया है। विपक्ष में शामिल पार्टियां बहुमत का ख्वाब देख रही थीं, लेकिन चार जून को चौकाने वाला परिणाम आया और इंडी गठबंधन में शामिल पार्टियो की बोलती बंद हो गई। प्रत्येक चुनाव में अपनी हार के बाद इवीएम में दोष ठहराना कांग्रेस समेत तमाम विपक्ष की नियति बन गई है। अग्रवाल ने कहा कि अब परिणाम आ गया है, लेकिन इंडी गठबंधन एक बार फिर अपनी हार का ठीकरा इवीएम पर फोड़ निर्वाचन आयोग से गुहार लगा रहा है। यह कोई पहला मौका नहीं है। चुनाव शुरू होने से पहले ही जहाँ एनडीए की जीत पक्की थी, ठीक उसी तरह यह भी फाइनल था कि अपनी हार के बाद इंडी गठबंधन का इवीएम में गड़बड़ी बताना तय है। इंडी गठबंधन सरकार बनाने को लेकर कितना बेचैन थी, लेकिन जनता ने इनके मंसूबो पर पानी फेर फिर से एनडीए को सरकार बनाने के लिए एकतरफा जनादेश दिया है। 2024 का परिणाम अविश्वसनीय ही नहीं, बल्कि ऐतिहासिक है और पिछले सभी रिकार्ड को तोड़ दिया है। श्याम बिहारी ने कहा कि उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूरब से लेकर पश्चिम तक जनता ने इंडी गठबंधन को पूरी तरह से नकार दिया है। यहीं नहीं जो पार्टियां एनडीए गठबंधन से अलग होकर चुनाव लड़ी जनता ने उन्हें भी सबक सिखाने का काम किया है। देश के सभी राज्यों में भाजपा और एनडीए का प्रदर्शन स्वर्णिम भारत का संकेत है। आने वाला पाँच साल आदरणीय प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश एक बार फिर दुनिया में कीर्तिमान स्थापित करने का काम करेगा और तीसरी आर्थिक महाशक्ति की ओर बढ़ने को अग्रसर होगा। इंडी गठबंधन चुनाव आयोग से कितना भी शिकायत करें लेकिन लोकतंत्र में जनमत को झुठलाया नहीं जा सकता है।

कानून की रक्षा के लिए संघर्ष जारी रहेगा : सुनील कुमार राव

प्रात: किरण, संवाददाता

बेतिया मोहन सिंह। महागठबंधन के भाकपा माले के तरफ से सुनील कुमार राव ने बाल्मिकीनगर और पश्चिम चंपारण संसदीय क्षेत्र से एन डी ए के प्रत्यशियों सुनील कुमार और संजय जायसवाल की जीत की बधाई और शुभकामनाएं दिया है। वहीं अपने दल भाकपा माले के आरा और काराकाट लोकसभा चुनाव क्षेत्र से सुदामा प्रसाद और राजा राम सिंह के जीत पर खुशी जाहिर किया और कहा कि लोकतंत्र में जनता मालिक है। देवतुल्य जनता का आशीर्वाद सर्वमान्य है।

जनता ने बेरोजगारी, महंगाई, लोकतंत्र और संविधान की रक्षा का जनादेश दिया। हम उसे सहर्ष स्वीकारते है और इनकी रक्षा के लिए संघर्ष जारी रहेगा।

फेयर प्राइस डीलर्स एसोसिएशन बगहा एक ने अनुमंडल पदाधिकारी को सौपा आवेदन

गोदाम से डीलर्स के बोरा का मार्जिन दिलाने की किये मांग

प्रात: किरण, संवाददाता

बगहा। फेयर प्राइस डीलर्स एसोसिएशन प्रखंड बगहा एक काफी सख्त है तथा गोदाम से डीलर्स के बोरा का मार्जिन 5.80 ग्राम दिलाने को लेकर बगहा अनुमंडल पदाधिकारी को एक आवेदन पत्र सौपा है। जिसमें बोरा के मार्जिन दिलाने की मांग की है। एसडीएम को दिये गये आवेदन पत्र में फेयर प्राइस डीलर्स एसोसिएशन बगहा एक के संरक्षक लाल साहेब चौबे,प्रखंड अध्यक्ष पासपत पांडेय,सचिव राजेन्द्र राम,उपाध्यक्ष हेमराज प्रसाद व मिथिलेश प्रसाद, उप सचिव सत्येन्द्र प्रसाद केसरी, कोषाध्यक्ष दशरथ प्रसाद, कार्यकारी अध्यक्ष मो मुस्तफा, संगठन मंत्री मुरारी सिंह व सुरेश यादव, सह मंत्री उमाशंकर शाही व एसोसिएशन के मीडिया प्रभारी मदन मोहन प्रसाद समेत दर्जनों की संख्या में डीलर्स ने दिये गये आवेदन पत्र में आरोप लगाते हुए कहा है कि गोदाम से डीलर्स को खाद्यान्न बोरा का उचित मार्जिन नहीं मिल रहा है। जिससे डीलर्स एसोसिएशन में काफी आक्रोश है। साथ ही डीलर्स एसोसिएशन ने एसडीएम से कहा है कि गोदाम पर जो राशन आ रहा है। गुणक पूर्ण नहीं होने के कारण डीलर्स को लाभूकों के बीच वितरण करने में परेशानी हो रही है। डीलर्स एसोसिएशन बगहा एक ने एसडीएम से उल्लेखित बिंदुओं पर सहानुभूति पूर्वक विचार करने की मांग करते हुए कहा है कि शीघ्र ही समस्या का निदान किया जाये अन्यथा बाध्य होकर डीलर्स गोदाम से 8 जून के बाद राशन उठाव नहीं करेंगे।

भारत विकास परिषद की अन्नपूर्णा रसोई सेवा से जरूरतमंदों को मिल रही है राहत

प्रात: किरण, संवाददाता

रक्सौल। शहर के मुख्य पथ स्थित डाकघर के सामने भारत विकास परिषद के सदस्यों के परस्पर सहयोग से आज लगातार 13 वें महीने अन्नपूर्णा रसोई सेवा के माध्यम से 500 से अधिक लोगों के बीच निःशुल्क भोजन वितरित किया गया। परिषद के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह ने बताया कि परिषद के द्वारा गत वर्ष मई महीने की चार तारीख से लगातार तेरहवें महीने अन्नपूर्णा रसोई सेवा के माध्यम से लोगों के बीच भोजन वितरित किया गया। साथ ही परिषद इस सेवा को प्रत्येक महीने की चार तारीख को जारी रखने के लिए संकल्पबद्ध है !वहीं परिषद के सचिव सह मीडिया प्रभारी रजनीश प्रियदर्शी ने बताया कि परिषद प्रयासरत है कि गरीब, वंचित वर्ग, असहाय लोगों एवं भिक्षुकों को यह सेवा निरंतर मिले। भोजन वितरण में परिषद के उमेश सिकारिया, अजय मस्करा, सुनील कुमार, नरेश मित्तल, हरीश खत्री, अजय कुमार, सुरेश धानोठिया, बिट्टू गुप्ता, रजनीश प्रियदर्शी, विष्णु मस्करा, विवेक मित्तल, विकास कुमार समेत परिषद के कई सदस्यों ने उल्लेखनीय योगदान दिया । इसकी जानकारी परिषद के सचिव सह मीडिया प्रभारी रजनीश प्रियदर्शी ने दी है ।

एमओयू पर हुए हस्ताक्षर विश्वविद्यालय के लिए आज का दिन रहा ऐतिहासिक

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। जय प्रकाश विश्वविद्यालय के लिए आज मंगलवार, का दिन भी ऐतिहासिक बन गया जब उत्तरप्रदेश के एक नामचीन विश्वविद्यालय के साथ शैक्षणिक एवं शोध संबंधी कार्यों में एक-दूसरे का सहयोग और मार्गदर्शन करने के लिए एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। जयप्रकाश विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. परमेंद्र कुमार बाजपेई की व्यक्तिगत पहल से यह संभव हो सका है। अब जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा और बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी शैक्षणिक एवं अनुसंधान गतिविधियों में एक-दूसरे का मार्गदर्शन और सहयोग करेंगे। इसके लिए एमओयू पर हस्ताक्षर किया गया। जय प्रकाश विश्वविद्यालय छपरा से माननीय कुलपति प्रो. परमेंद्र कुमार बाजपेयी और बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से माननीय कुलपति प्रो मुकेश पाण्डेय ने इस एमओयू पर हस्ताक्षर किए। इस एमओयू से दोंनो विश्वविद्यालयों के छात्रों एवं शिक्षकों को अनेक शैक्षणिक लाभ प्राप्त होंगे। इस समझौता ज्ञापन के अनुसार दोनों विश्वविद्यालयों के मध्य लघुकालिक पाठ्यक्रम, सेमिनारों, सम्मेलनों, शिक्षण और अनुसंधान परियोजनाओं, गतिविधियों का आदान प्रदान किया जायेगा। दोनों विश्वविद्यालयों ने विभिन्न क्षेत्रों में शैक्षणिक और अनुसंधान विकास के लिए अपनी विशेषज्ञता का आदान-प्रदान करने के लिए संयुक्त रूप से सहमति जताई है। इस अवसर पर बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के कुलसचिव विनय कुमार, डीन अकादमिक प्रो एस पी सिंह, नोडल समन्वयक डॉ संजीव कुमार श्रीवास्तव और नोडल सह समन्वयक डॉ अनुपम व्यास उपस्थित रहे।

सांसद जनार्दन सिंह सिग्रीवाल ने लगाई जीत की हैट्रिक, कार्यकताओं ने दी बधाई

प्रात: किरण, संवाददाता

तरैया महराजगंज सांसद जनार्दन सिंह सिग्रीवाल ने लोक सभा निर्वाचन में जीत की हैट्रिक लगाई है।उन्होंने ने लगातार तीसरी बार जीत दर्ज कराई है।जिसको लेकर कार्यकताओं में खुशी की लहर है।स्थानीय कार्यकताओं ने एक दूसरे को अबीर गुलाल लगाकर और मिठाई बांटकर अपनी खुशी का इजहार किया है।भाजपा नेताओं ने कहा कि महाराजगंज में चौकाने वाला परिणाम आया है।बीजेपी के वरिष्ठ नेता संजय कुमार सिंह,ओम प्रकाश सिंह, ठाकुर संजय सिंह,सुरेंद्र सिंह, श्रीनिवास सिंह,एसपी सिंह, श्रीकांत सिंह,दिलीप राम, गुड्डू सिंह कुशवाहा,अवनीश सिंह, टुल्लू सिंह,रणविजय सिंह, अशोक राम,मुन्ना तिवारी सहित अन्य ने बढ़ाई दी है।

मुझे आशीर्वाद देकर महाराजगंज की जनता ने इतिहास रचा : सिग्रीवाल

प्रात: किरण, संवाददाता

छापरा ' महाराजगंज लोकसभा से हैट्रिक लगाने के बाद सांसद जनार्दन सिंह सिग्रीवाल ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि मेरी जीत महाराजगंज जनता की जीत है ' उन्होंने कहा कि महाराजगंज के मतदाता अडिंग और सटीक होकर भारत को विकसित बनाने को लेकर मुझे अपना आशीर्वाद दिया है, मैं महाराजगंज की जनता को दिल से नमन करता हूं ' उन्होंने कहा कि मेरे मतदाताओं को पर्लोभन मिलने के बावजूद मुझे अपना आशीर्वाद दिया है ' महाराजगंज की मतदाताओं ने सही समय पर सही निर्णय करने वाले हैं, और किसी के प्रलोभन और बहकावे में नहीं आने वाले हैं ' यहां की जनता ने मुझे जिताकर महाराजगंज का इतिहास रचने का काम किया है '

सारण - महाराजगंज लोकसभा चुनाव की मतगणना शांतिपुरपूर्ण माहौल में संपन्न

जिलाधिकारी स्वयं करते रहे मॉनिटरिंग और लेते रहे पल-पल की खबर

- एनडीए प्रत्याशी सिंग्रीवाल हेक्टिक लगाने में रहे कामयाब

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा । कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच महाराजगंज एवं सारण लोकसभा क्षेत्र की मतगणना स्थानीय बाजार समिति के प्रांगण में सुबह 8:00 बजे से प्रारंभ हुई ' मतगणना को लेकर जिला प्रशासन द्वारा व्यापक रूप से तैयारी की गई थी ' जिलाधिकारी अमन समीर अपने सहयोगी पदाधिकारी के साथ लगातार मॉनिटर करते नजर आए । चुनाव आयोग निर्धारित समय अनुसार मंगलवार को सुबह 8:00 बजे से मतगणना प्रारंभ हुई । मतगणना को लेकर सुबह 7:00 से मतगणना अभिकर्ता बाजार समिति गेट पर लंबी-लंबी कतार में खड़ी नजर आए । बता दें कि प्रशासन द्वारा मतगणना अभिकताओं को 7:00 बजे से ही प्रवेश करने की अनुमति दी गई थी । सारण एवं महाराजगंज लोकसभा में छः -छः विधानसभा शामिल है । आयोग के दिशा- निदेर्शानुसार सुबह 8:00 बजे से सर्वप्रथम बैलेट पेपर की मतगणना शुरू हुई । लगभग दो घंटा बैलट पेपर की मतगणना के बाद विधानसभा वाइज इवएम की मतगणना शुरू हुई । मतगणना को लेकर सुरक्षा का पोख्ता व्यवस्था किया गया था । बाजार समिति के चप्पे -चप्पे आर्ं अर्ध सैनिक बल, सैफ के जवान और पैरामिलिट्री फोर्स को को तैनात किया गया था । बाजार समिति गेट से 100 मीटर की दूरी पर बार्केटिंग लगाकर वाहनों को आने- जाने पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया गया था ' जैसे-जैसे काउंटिंग चल रही थी, वैसे-वैसे मतगणना का रुझान मिल रहा था, और कार्यकताओं उत्साहित नजर आ रहे थे । सारण लोकसभा से राजीव प्रताप रूढ़ी शुरूआती दौर से ही अपने निकटतम प्रत्याशी राजद के रोहिणी आचार्य से बढ़त बनाते हुए 17 राउंड तक बढ़त बनाए रखा ' एनडीए प्रत्याशी रुढ़ी ने वैलेट पेपर से 244 वोटो से बढ़त बनाते हुए लगभग 16000 से अधिक मतों से बढ़त बनाने में कामयाब रहे ' इस बीच एनडीए प्रत्याशी द्वारा बढ़त बनाए जाने से समर्थकों में काफी उत्साह दिख रहा था ' सारण लोकसभा में राजीव प्रताप रूढ़ी एवं रोहिणी आचार्य के बीच कांटे की टक्कर चल रही है, मतगणना अभी भी जारी है । वहीं महाराजगंज लोकसभा से एनडीए प्रत्याशी जनार्दन सिंह सिग्रीवाल भी शुरूआती दौर से अपनी बढ़त बनाए रखा और अंत-अंत तक 80000 से भी ज्यादा बढ़त बना ली ' जनार्दन सिंह सिग्रीवाल तीसरी बार अपनी जीत दर्ज की है । औपचारिक घोषणा अभी बाकी है ' मतगणना को लेकर जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिलाधिकारी ने सुरक्षा व्यवस्था का पोख्ता इंतजाम कर रखा था ' सारण गोली कांड को लेकर जिलाधिकारी और गंभीर थे । उन्होंने स्वयं बाजार समिति में हर विधानसभा में अपने सहयोगी पदाधिकारिओं के साथ मॉनिटरिंग कर रहे थे । सुरक्षा व्यवस्था का ऐसा नजारा था, कि 100 मीटर के दायरे में सड़कों पर सन्नाटा छाया हुआ था । सड़कों पर अर्ध सैनिक बल व पैरामिलिट्री फोर्स नजर आ रहे थे ' जिला प्रशासन की व्यवस्था से इस बार मतगणना स्थल के बाहर भी समर्थक दूर-दूर तक बिल्कुल नजर नहीं आए । इससे पहले के चुनाव को याद किया जाए तो मतगणना केंद्र के बाहर समर्थकों का हुजूम लगा रहता था । सारण व महाराजगंज लोकसभा की मतगणना जिला प्रशासन की सख़्ती से पूरी तरह शांतिपूर्ण माहौल में संपन्न हो गया । जीत के बाद भी प्रत्याशियों के समर्थक बिल्कुल शांति मुद्रा में नजर आ रहे थे ' शायद छपरा चुनावी रंजिश का असर दिख रहा था ।

सारण में रूढ़ी ने लगाए पांचवीं बार जीत लगातार हैट्रिक

- चिर प्रतिद्वंद्वी लालू प्रसाद की बेटी को रूढ़ी ने हराया

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा सदर। पूरे बिहार में हॉट सीट माने जाने वाले सारण संसदीय निर्वाचन क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी राजीव प्रताप रूढ़ी ने पांचवी बार जीत दर्ज कर लिया जिसमे लगातार तीन बार जीत दर्ज किया। अपने चिर प्रतिद्वंद्वी लालू प्रसाद यादव की पुत्री डॉ रोहिणी आचार्य को उन्होंने हरा करके सारण लोक सभा संसदीय क्षेत्र में हैट्रिक लगाया। रूडी की राजनीतिक जीवन उनके पढ़ाई के समय से ही छात्र नेता के रूप में शुरू होती है । आइए डालते हैं राजीव प्रताप रूढ़ी के राजनीतिक जीवन के सफर पर एक नजर राजीव प्रताप रूड़ी की राजनीतिक यात्रा 2018 में उन्हें पार्टी अध्यक्ष अमित शाह द्वारा भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता के रूप में नियुक्त किया गया। 2017 में उन्हें कैबिनेट फेरबदल के बाद कौशल विकास और उद्यमिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) के पद से हटा दिया गया। 2014 में उन्होंने राजद की राबड़ी देवी को हराया और बिहार में सारण निर्वाचन क्षेत्र के सांसद बने। उन्होंने 40,948 मतों के अंतर से जीत दर्ज की। उन्हें नरेंद्र मोदी की सरकार में कौशल विकास और उद्यमिता के लिए राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) नियुक्त किया गया था। 2008 में उन्हें राज्यसभा के सदस्य के रूप में चुना गया। 2001 में वे केंद्रीय राज्य मंत्री, वाणिज्य और उद्योग मंत्री चुने गए। 1999 में उन्हें छपरा निर्वाचन क्षेत्र से दूसरे कार्यकाल के लिए फिर से चुना गया, जहां उन्होंने राजद के हीरा लाल राय को 49,553 मतों के अंतर से हराया। 1996 में वे भाजपा के टिकट पर छपरा निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा के लिए चुने गए। उन्होंने लाल बाबू राय को 1,66,363 मतों के अंतर से हराया। 1990 में रुडी को जनतादल के टिकट के साथ तरैया निर्वाचन क्षेत्र से विधान सभा के सदस्य के रूप में चुना गया, जहाँ उन्होंने भाजपा के राम दास रॉय को 8753 मतों के अंतर से हराया। उनके राजनीतिक जीवन की शुरूआत छात्रसंघ के एक नेता के रूप में हुई। सबसे पहले वे गवर्नमेंट कॉलेज, चंडीगढ़ के अध्यक्ष चुने गए, बाद में पंजाब विश्वविद्यालय छात्रसंघ के महासचिव निर्वाचित हुए। विश्वविद्यालय राजनीति के पश्चात वे बिहार लौटे और दूरदराज के एक ग्रामीण क्षेत्र में एक दशक तक काम किया। पश्चात भारतीय जनता पार्टी की युवा शाखा के सक्रिय सदस्य बने। भारतीय जनता युवा मोर्चा (बीजेयाईएम) के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष का पद प्राप्त किया। 1990 में महज 26 की उम्र में वे बिहार राज्य विधानसभा के विधायक चुने गए। उनका शुमार सबसे कम उम्र के विधायकों में किया जाता है। 1996 में बिहार के छपरा से भारतीय जनता पार्टी के प्रतिनिधि के रूप में संसद के लिए निर्वाचित हुए। 1999 में फिर चुने गए और अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली राजग सरकार में वाणिज्य एवं उद्योग राज्यमंत्री के रूप में शामिल हुए। इसके बाद उन्हें पदोन्नत कर एक स्वतंत्र प्रभार के साथ नागरिक उड्डयन मंत्री बनाया गया। भाजपा महासचिव की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य होने के साथ-साथ भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता हैं। दिल्ली स्थित मूक-बधिरों की राष्ट्रीय संस्था के अध्यक्ष भी रहे हैं। वाजपेयी सरकार (1998-2004) में उन्होंने वाणिज्य मंत्री और बाद में नागरिक विमानन मंत्री के रूप में सेवा की। भाजपा के लिए उन्होंने गोवा प्रभारी के रूप में भी कार्य किया था।

लड़की को भगाने के विवाद में युवक ने लड़की के पिता को मारपीट कर किया घायल

प्रात: किरण, संवाददाता

तरैया थाना क्षेत्र के अफजलपुर गांव में एक लड़की को भगाने के विवाद को लेकर एक युवक ने लड़की के पिता को मारपीट कर घायल कर दिया।जिसको लेकर लड़की के पिता ने स्थानीय थाने में उक्त युवक व उसके मौसी पर प्राथमिकी दर्ज कराई है।जिसमें आरोपी युवक जलालपुर निवासी नितेश कुमार व अफजलपुर की पूनम देवी को आरोपित किया गया है।दर्ज प्राथमिकी में कहा गया है कि आरोपी युवक जो वर्तमान में अफजलपुर में अपने मौसी पूनम देवी के घर रहता है।मेरी पुत्री को भगा कर ले गया था।अब मेरी पुत्री वापस घर आ गई है।तो युवक मेरे दरवाजे पर आकर गाली गलौज करने लगा।और मेरी पत्नी और बेटी को उठा लेने की धमकी देने लगा।जिसका विरोध किया तो मेरे साथ मारपीट किया।पुलिस प्राथमिकी दर्ज कर मामले की जांच कर रही है।

स्थानीय छात्रों के लिए डिजाइन थिंकिंग और प्रशिक्षण कार्यशालाओं की शुरूआत

प्रात: किरण, संवाददाता

नई दिल्ली। सैमसंग ने सिक्किम के मंगन के चुनिंदा स्कूलों में पहली बार डिजाइन थिंकिंग और प्रशिक्षण कार्यशालाओं की शुरूआत की। सैमसंग के कल के लिए समाधान कार्यक्रम का हिस्सा यह अनूठी पहल मानव-केंद्रित डिजाइन थिंकिंग ढांचे के माध्यम से छात्रों के बीच समस्या-समाधान, आलोचनात्मक सोच, जांच और रचनात्मकता जैसे आवश्यक कौशल को बढ़ाने पर केंद्रित है। कल के लिए समाधान एक राष्ट्रीय शिक्षा और नवाचार प्रतियोगिता है, जिसका उद्देश्य अगली पीढ़ी के बीच नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देना है। सैमसंग साउथवेस्ट एशिया के कॉर्पोरेट उपाध्यक्ष एसपी चुन ने कहा, यह पहल अगली पीढ़ी को सशक्त बनाने और देश में नवाचार का एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के हमारे दृष्टिकोण का हिस्सा है। कार्यशालाओं का उद्देश्य डिजाइन-सोच शिक्षा को शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में एकीकृत करना है, 14 वर्ष से अधिक उम्र के छात्रों को अभिनव समाधानों के माध्यम से सामाजिक मुद्दों से निपटने के लिए प्रोत्साहित करना है।

संक्षिप्त खबरें

बुनकर कल्याण संघ अध्यक्ष द्वारा सांसद को दी बधाई

गया।गोपाल प्रसाद पटवा अध्यक्ष बिहार प्रदेश बुनकर कल्याण संघ सह बुनकर तुर्क सुबह से ही जीतन राम मांझी पूर्व मुख्यमंत्री एनडीए प्रत्याशी के मतगणना में शामिल रहने के उपरांत प्रचंड मतों से विजय होने पर मानपुर पटवाटोली निर्मित अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया है।जीतन राम मांझी को जीत कि बधाई और शुभकामना दिया है। मानपुर में स्वागत अभिनंदन समारोह में शिरकत करने के लिए आमंत्रित किया।गया लोकसभा क्षेत्र के विकास की लकीर खींचने का सुझाव देते हुए केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल होने के अग्रिम बधाई और शुभकामनाएं दी।

मेग्नेटिक एनालाइजर द्वारा रविवार को होगा जांच शिविर आयोजित

गया।गया जी पहली बार मेग्नेटिक एनालाइजर से पुरे शरीर का जांच रौनीयार समाज के जिलाध्यक्ष राजु गुप्ता एवं धर्मशाला के अध्यक्ष जगत किशोर गुप्ता, अमिताभ गुप्ता, राहुल महाजन,अरूण कुमार गुप्ता, महिला अध्यक्ष नीलम गुप्ता एवं गया जिला के सभी समाज के पदाधिकारियों के कारण आने वाले नौ जुन को मेग्नेटिक एनालाइजर से पुरे शरीर के हर कोने कोन बीमारी के पुरी जानकारी दी जाएगी वरिष्ठ डा श्याम जी, राजीव साहा द्वारा पुरी अच्छी तरीके से पुरी शरीर के क्या कमी है क्या बढा हुआ है और क्या करना होगा इसकी पुरी जानकारी दी जाएगी और घरेलु एवं आयुर्वेद इलाज के द्वारा हर बिमारी का समाधान किया जाएगा आप सभी हर लोग इस शिविर में आए और अपने शरीर के बारे में जानकारी प्राप्त करे।गया रौनीयार धर्मशाला गया गंगा महल में।सुबह दस बजे से शाम सात बजे तक।

अंग्रेजी शराब के साथ एक कारोबारी गिरफ्तार

दिनारा(रोहतास) : पुलिस ने अंग्रेजी शराब के साथ एक कारोबारी को गिरफ्तार कर जांच के उपरांत जेल भेज दिया ।दिनारा थानाध्यक्ष विनय कुमार ने बताया कि दिनारा गांव से गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी कर 33 पीस 180 एमएल का 8 पी एम कंपनी का अंग्रेजी शराब के साथ श्रीराम पासवान को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया ।थानाध्यक्ष ने बताया कि गिरफ्तार कारोबारी के विरुद्ध संबंधित मामला दर्ज करते हुए जांच के उपरांत जेल भेज दिया गया ।

पुलिस ने बालू लदे एक ट्रैक्टर को किया जब्त

नसरीगंज(रोहतास) : नसरिगंज पुलिस ने अवैध बालू लदे एक ट्रैक्टर को जब्त कर लिया है ।नासरीगंज थानाध्यक्ष अमित कुमार ने बताया कि थाना क्षेत्र के नासरीगंज धुस से अवैध बालू लदे एक ट्रैक्टर को जब्त किया गया है ।उन्होंने बताया कि उक्त मामले में कानूनी कार्रवाई करते हुए संबंधित विभाग केवरीय अधिकारियों के पास रिपोर्ट भेज दी गई है ।उन्होंने बताया कि उक्त मामले में ट्रैक्टर चालक एवं मालिक पर प्राथमिकी दर्ज किया गया है ।उन्होंने कहा कि जब्त ट्रैक्टर को स्थानीय पुलिस की निगरानी में रखा गया है ।

पूर्व कांड का एक अभियुक्त गिरफ्तार

दिनारा(रोहतास)।पुलिस ने पूर्व कांड के एक अभियुक्त को गिरफ्तार कर जांच के उपरांत जेल भेज दिया । दिनारा थानाध्यक्ष विनय कुमार ने बताया कि थाना क्षेत्र के चमराहा टोला निवासी जिंदल चौधरी को पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर गिरफ्तार कर लिया ।उन्होंने कहा कि गिरफ्तार अभियुक्त के विरुद्ध स्थानीय थाना में कांड संख्या 490/23 के आलोक में लड़की भगाने का मामला दर्ज था।

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के जीत पर मनाई गई खुशी

बिक्रमगंज(रोहतास)। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के जीत पर मिठाई एवं लड्डू बांटकर सामूहिक रूप से खुशी मनाई गई।इस शुभ अवसर पर काराकाट लोक सभा संयोजक श्री नवीन चंद्र शाह मिडिया प्रभारी नवनीत शाह शक्ति केंद्र ,प्रभारी श्री चौधरी ,शंभू कुमार सिंह, महावीर शाह ,दसई शर्मा ,संतोष गुप्ता ,मुन्ना गुप्ता, सत्यम, शिवम ,गुल्लू, मनोज गुप्ता ,सहित सभी ग्रामीण भाई बहनों को मिठाई खिलाई गई। मोदी सरकार की मंगलमय भविष्य की कामना की गई हैट्रिक लगाने पर विशेष बधाई दी गई।यह कार्यक्रम काराकाट विधानसभा की बिक्रमगंज प्रखंड अंतर्गत घुसिया खुर्द में सम्पन्न हुई।सभी लोगों ने मोदी को बधाई दिया ।

पूर्व मुख्यमंत्री को तीसरी बार बहुमत आने पर डॉ. मनीष पंकज मिश्रा ने दी बधाई

प्रात : किरण संवाददाता

गया।एणडीए गठबंधन लगातार तीसरी बार बहुमत मिलने पर तीसरी बार देश के ओजस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी के नेतृत्व में जीत का परचम लहराया गया ऐतिहासिक जीत के शुभ अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के किसान मोर्चा के सह जिला प्रभारी डॉ मनीष पंकज मिश्रा के द्वारा नूतन नगर भाजपा कार्यालय में जशन मनाया गया,एक दूसरे को गुलाल लगाकर और एक दूसरे को मीठाई खिलाकर आतिशबाजी कर खुशी का इजहार किया है। इस अवसर पर डॉ मनीष पंकज मिश्रा ने कहा भारतीय जनता पार्टी के लिए यह एक ऐतिहासिक दिन है। ओजस्वी प्रधानमंत्री मोदी तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री बनेंगे नरेंद्र भाई मोदी के नेतृत्व में कश्मीर से 370 एवं 35 ए हटाकर जो देश हित में निर्णय लिया गया गया से एण्डीए गठबंधन की उम्मीदवार श्री जीतराम मांझी जी के भारी मतों से विजयी होने उनके आवास पर जाकर माला फूल एवं अंग वस्त्र देकर भाजपा नेताओं के द्वारा बधाई एवं शुभकामना दी इस अवसर पर मांझी ने सभी कार्यकर्ताओं और नेताओं का अभिवादन बारी बारी - स्वीकार किया है।विजय गाथा को ऐतिहासिक बनाते हुए देश के ओजस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी से देश के राजनीतिक चाणक्य कहे जाने वाले गृह मंत्री अमित शाह को एवं भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा जी को बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा की देश के ओजस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी के नेतृत्व में भारत विकसित राष्ट्र के श्रेणी में एक दिन अवश्य आएगा।भारतीय जनता पार्टी के जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अधिवक्ता ने कहा यह जीत कोई मामुली जीत नहीं है यह देश के आम जनों का जीत है।मोदी जी ने कई महत्वपूर्ण योजनाओं की शुरूआत की है, जैसे कि जन धन योजना, जिसका मकसद बैंकिंग सेवाओं को सभी तक पहुंचाना था। प्रधानमंत्री आवास योजना ने गरीब लोगों को घर प्राप्त करने में मदद की है। स्वच्छ भारत अभियान ने सार्वजनिक स्वच्छता को प्रोत्साहित किया है। आयुष्मान भारत योजना ने गरीबों को मुफ्त चिकित्सा सुविधा प्रदान की। उज्ज्वला योजना ने गरीब महिलाओं को गैस सिलेंडर प्रदान करके उनकी जीवन गुणवत्ता में सुधार किया। खुशी का इजहार करने वालों में राजेंद्र प्रसाद अधिवक्ता राणा रणजीत सिंह सुनील बंबईया जिला मीडिया प्रभारी संतोष ठाकुर व्यापार प्रकोष्ठ के संयोजक दीपक पांडे विधि प्रकोष्ठ के सह संयोजक एस राजेश आनंद अधिवक्ता नमामि गंगे के सह संयोजक धनंजय

एक लाख के अंतर से जीतन राम मांझी ने बाजी मारी, जिलाधिकारी ने दिया सार्टीफिकेट

प्रात : किरण संवाददाता

गया। गया लोकसभा चुनाव की मतगणना की जिला निर्वाचन पदाधिकारी डां एस त्यागराजन के देखरेख में सुचारु रूप सही ढंग से सम्पन्न कराया गया है शुरू से ही जिला निर्वाचन अधिकारी और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एवं सुचना जनसंपर्क अधिकारी के देख रेख में सुबह आठ बजे शुरू हुई।

जहां शुरू मे कुछ कम अंतर से पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी एणडीए प्रत्याशी हार जीत में थे जब बोधगया विधानसभा के काउंटिंग शुरू हुआ था काफी बढ़त बना ली,अत्रीम26 राउंड में 102381 वोट जीत हासिल कर ली,वही बैलेट की गीनती में भी पूर्व मुख्यमंत्री राजद प्रत्याशी से आगे चल रहे थे। सबसे ज्यादा इस गया लोकसभा चुनाव में दिलचस्प की बात तीसरे स्थान पर नोटा का कब्जा रहा मतदाताओं ने नोटा पर 17177 मत मिले वहीं पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी जीतने पर सबसे पहले बधाई देने वाले मे अजय कुशवाहा के साथ धीरज रौनीयार ने बधाई दी फिर अनिल स्वामी,अनंत धीश अमन, कृष्ण कुमार सिंह उर्फ कुमार बाबु, धनराज शर्मा,हरे राम सिंह,कोशल शर्मा,हम के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजेश पाण्डेय ने बधाई दी।

7 जून को रिलीज से पहले फिल्म 'रंग दे बसंती' के निर्देशक प्रेमांशु सिंह ने किया बड़ा दावा, बताया क्यों लोगों को देखनी चाहिए उनकी फिल्म

प्रात : किरण संवाददाता

पटना।7 जून को रिलीज होने वाली एसआरके म्यूजिक प्रस्तुत निमार्ता रौशन सिंह और सुपर स्टार खेसारीलाल यादव की फिल्म "रंग दे बसंती" को लेकर फिल्म के निमार्ता प्रेमांशु सिंह ने बड़ा दावा किया। रिलीज से पहले प्रेमांशु सिंह ने बताया है कि फिल्म क्यों भोजपुरी ही नहीं, भारतीय सिनेमा के लिए खास है! उन्होंने कहा कि फिल्में अगर अच्छी बनेगी तो यह थियेटरों में चलेगी भी और अच्छा भी करेगी। उन्होंने कहा कि इसका उदाहरण हमारी नई फिल्म रंग दे बसंती है, जो मल्टीप्लेक्स में भी रिलीज हो रही है। हमारी यह फिल्म बिहार यूपी में अभी रिलीज हो रही है। आपको याद होगा लास्ट साल 2017 में आई खेसारीलाल यादव की फिल्म ने थियेटर में शानदार प्रदर्शन किया था, उसके बाद अब यह फिल्म दर्शकों को थिएटर तक लेकर आने वाली है। प्रेमांशु सिंह ने दावा किया कि भारत पाकिस्तान के संबंधों पर यह एक अनूठी कहानी पर बनी फिल्म है, जिसके एंगल को अभी तक हिंदी फिल्मों में भी नहीं छुआ गया गया। भारतीय सिनेमा में बनने वाली यह अपने आप में रंग दे बसंती अलग फिल्म है। इस फिल्म में हमने कहानी से लेकर संगीत तक वर्ल्ड क्लास रखा है। बॉलीवुड म्यूजिक इंडस्ट्री के दिग्गज इस फिल्म के गानों को समृद्ध बना रहे हैं। इस फिल्म का विजन बहुत बड़ा है। हमने फिल्म के लोकेशन पर बहुत वर्क किया है। अमूमन भोजपुरी फिल्मों लोकेशन पर काम कम देखने को मिलता है। लेकिन हमारी फिल्म में देखने को मिलेगी। कहानी में अगर कश्मीर की डिमांड थी तो हमने हड्डी जमा देने वाली ठंड में जाकर कश्मीर में फिल्म को शूट किया और वहीं आजम गढ़ के गांव की तपती दुपहरी में भी फिल्म की शूटिंग की है। शूटिंग के दौरान भगवा की जरूरत थी, तो हम सच में अयोध्या गए और वहां जाकर फिल्म शूट किया। इस फिल्म में सब कुछ रीयल है और यह दर्शक महसूस भी करेंगे। यह फिल्म हर तरह से पारिवारिक और मनोरंजक फिल्म है। यह मेरे हिसाब से बेस्ट भोजपुरी फिल्म है। खेसारीलाल यादव के रति पांडेय और डायना खान की लाजवाब अदाकारी फिल्म में देखने को मिलेगी। मैंने जो सपना देखा था, उसे पूरा करने में रौशन सिंह का पूरा साथ मिला। उनके बिना मैं यह फिल्म बना भी नहीं पाता। आपको बता दें कि भोजपुरी इंडस्ट्री में हमेशा गायकों और अभिनेताओं का बोलबाला रहा है। लेकिन प्रेमांशु सिंह ऐसे निर्देशक हैं, जिन्होंने अपनी फिल्म से इंडस्ट्री में अलग पहचान बनाई है। उन्होंने अपने प्रोजेक्ट्स से दर्शकों के मन मस्तिष्क पर हमेशा गहरी छाप छोड़ी और बॉक्स ऑफिस पर अपनी फिल्मों से नया मुकाम बनाया है। सिवान के रहने वाले प्रेमांशु सिंह ने अपने भोजपुरी फिल्म करियर की शुरूआत इंडस्ट्री के सबसे बड़े निमार्ता आलोक कुमार की पावर स्टार पवन सिंह की फिल्म "भैया की साली ओढनिया" वाली से की। यह ब्लॉकबस्टर फिल्म साबित हुई। उसके बाद प्रेमांशु सिंह की चल पड़ी और ट्रेंडिंग स्टार खेसारी लाल यादव को लेकर पहली फिल्म बनाई "साजन चले ससुराल", जो खूब चली। इसके बाद उन्होंने देवरा पर मनवा डोले, बंधन, छपरा एक्सप्रेस बनाई। फिल्म दूध का कर्ज में निरहुआ और खेसारी को वो पहली बार साथ लेकर आए थे। लाडला, लाडला 2, बलमजी लव यू, प्रेम रोग जैसी फिल्में भी वे लेकर आए। निरहुआ के साथ सिपाही, निरहुआ 2, ससुराल 2, पवन सिंह के साथ सनक, प्रदीप पांडेय चिंटू के साथ उनकी लाइफ की बिगेस्ट फिल्म विवाह 2 किया। और अब वे निमार्ता रौशन सिंह के साथ मिलकर "रंग दे बसंती" लेकर आ रहे हैं। इस के निमार्ता रौशन सिंह, सह निमार्ता शर्मिला आर सिंह हैं। यह फिल्म महाराष्ट्र, गुजरात, बिहार, झारखण्ड, प्रकाश जैश, ज्योति कलश, संजय महानंद, रीना रानी, श्रद्धा नवल, सुजान सिंह, सोनू पांडेय, रितु चौहान, रिंकू भारती, नेहा पाठक, खुशबू यादव, संजय वर्मा, अखिलेश कुमार अक्की, सूर्या द्विवेदी, निकिता भारद्वाज और चाहत प्रमुख भूमिका में हैं।

नीतीश को विकास ने फिर दिलाई जीतः गौरव सिन्हा

प्रात : किरण संवाददाता

गयाः बिसार तालाब स्थित जदयू कार्यालय में बिहार में एकबार फिर से नीतीश कुमार में लोगों के आस्था जताने के लिए और बड़ी संख्या में लोकसभा चुनाव में जीत दिलाने के लिए युवा जदयू के जिलाध्यक्ष कुमार गौरव उर्फ गौरव सिन्हा ने बधाई दी है। इस मौके पर युवा जदयू कार्यालय में पटाखा छोड़कर जीत का जश्न मनाया है। इस मौके पर सिन्हा ने कार्यकताओं के बीच मिठाई का वितरण भी किया तथा एक दूसरे को खिलाकर अभिवादन किया है।

सिन्हा ने कहा कि जदयू की यह जीत नीतीश कुमार के विकास का नतीजा है। नीतीश कुमार बोलते कम हैं लेकिन इनका विकास सर चढ़कर बोलता है आज भी जो जदयू को जीत मिली है इसके लिए मैं पुनः बधाई देता हूँ। जिस बिहार में लोग विकास की राह वर्षों से देख रहे थे उस बिहार को विकास की राह पर दौड़ाने वाले नीतीश कुमार आज भी किसी पर टिक्का टिप्पणी करने से बचते हैं और विकास के काम को करने में विश्वास करते हैं। इतना ही नहीं महिलाओं का विकास तो किया ही हर वर्ग का विकास करने का नतीजा है कि आज यह जीत पुनः दर्ज करा पाए हैं। इस मौके पर दिनेश यादव, शंकर, यश यादव,शिवा पांडे,राजी यादव,रोबिन वर्मा,उत्तम बनर्जी, मुन्ना ठाकुर, सोनू कुमार आदि उपस्थित रहे।

काराकाट में भाकपा माले का बजा डंका, राजाराम सिंह जीते

प्रात : किरण संवाददाता

काराकाट(रोहतास) : काराकाट लोक सभा चुनाव 2024 के परिणाम आने के बाद महागठबंधन के कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर दौड़ गई । काराकाट लोक सभा सीट से महागठबंधन से भाकपा माले के प्रत्याशी राजाराम सिंह चुनावी मैदान में थे ।जहां उन्होंने निर्दलीय प्रत्याशी पवन सिंह व एनडीए प्रत्याशी उपेंद्र कुशवाहा को मात देकर काराकाट लोकसभा सीट से जीत दर्ज किया । जीत दर्ज करने पर महागठबंधन के कार्यकर्ताओं में हर्ष व्याप्त हो गया । जीत दर्ज के बाद कार्यकर्ता आपस में एक दूसरे को रंग-गुलाल लकारक बधाई देने लगे ।

काराकाट लोकसभा के महागठबंधन प्रत्याशी राजा राम सिंह को अबतक 3 लाख 9 हजार 340 मत ,दूसरे स्थान पर निर्दलीय प्रत्याशी पवन सिंह को 2 लाख 20 हजार 71 तथा तीसरे स्थान पर एनडीए प्रत्याशी उपेंद्र कुशवाहा को 2 लाख 12 हजार 888 मत के साथ मतगणना जारी।भाकपा माले पार्टी व राजद सहित महागठबंधन के सभी कार्यकर्ताओं ने राजाराम सिंह को बधाई दी । बधाई देने वालों में भाकपा माले के राजेन्द्र यादव, भैयाराम पासवान, राजद के राजीव रंजन सिंह, विश्वामित्र सिंह, वीरेंद्र सिंह यादव, श्रीनिवास सिंह, संतोष सिंह, प्रभाकर सिंह, सहित कई पार्टी कार्यकर्ताओं ने बधाई दी ।

भाकपा(माले) की जीत संविधान व लोकतंत्र और भोजपर के जनता की जीत

आरा। भाकपा(माले) के राज्य सचिव कुणाल ने आरा और काराकाट संसदीय सीटों और अगिआंव विधानसभा उपचुनाव में इंडिया गठबंधन समर्थित भाकपा(माले) प्रत्याशियों क्रमशः सुदामा प्रसाद, राजाराम सिंह और शिवप्रकाश रंजन कि जीत देश के संविधान और लोकतंत्र और भोजपुर के जनता की जीत कहा है।उन्होंने कहा कि नालंदा संसदीय सीट पर भी पार्टी के युवा प्रत्याशी संदीप सौरभ के पक्ष में जोशीला चुनाव अभियान चलाया गया लेकिन हमें जीत हासिल नहीं हो पायी।उन्होंने कहा कि तीनों सीटों पर आखिरी चरण में मतदान हुआ और विपरीत मौसम में भी भारी तादाद में चुनाव प्रचार में शामिल होकर, आर्थिक सहयोग देकर और सर्वोपरि मतदान केंद्रों पर पहुंच अपना बेशकीमती मत देकर लोगों ने पार्टी प्रत्याशियों को जो समर्थन दिया वह आविस्मरणीय रहेगा। उन्होंने राजद, कांग्रेस,वीआइपी, आप, भाकपा, माकपा समेत इंडिया गठबंधन के तमाम दलों व नेताओं तथा विभिन्न तबकगत व सामाजिक संगठनों से मिले समर्थन के प्रति भी आभार जताया है।

पूर्व मुख्यमंत्री जीतने पर गया जिले के स्वाभिमान में चार चांद लगाया : राजू बर्नवाल

प्रात : किरण संवाददाता

गया।जी.बी रोड, रमना स्थित समर्पण भवन में जदयू महानगर के जिलाध्यक्ष राजू बरनवाल के आवास पर गया लोकसभा चुनाव परिणाम टीवी पर पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी का लगभग 1 लाख 20 हजार वोटों से विजयी होते हुए बिहार नहीं बल्कि पूरा देश उत्साहित है बरनवाल के आवास पर बिहार सरकार के मंत्री संतोष कुमार सुमन, जदयू जिला अध्यक्ष द्वारिका प्रसाद , लालजी बाबू, इकबाल भाई, गोपाल , उमर नूरानी साहब,नीरज वर्मा,शंभू, प्रभात राउत, दीपक नटराजन, अरविंद प्रियदर्शी, ओम प्रकाश , बबलू , अमरनाथ धोकड़ी जी,जूली मेहता, रवि वर्मा, सुनील कुमार सिन्हा, जुबेर अंजुम, वैद्यनाथ सिंह उर्फ मुन्ना कमलेश , अखिलेंद्र , अवध बिहारी अरुण राव पटेल , मिंता देवी सहित सैंकड़ों एनडीए के समर्थक उपस्थित थे सभी लोगों ने पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी की जीत सुनिश्चित होने से एनडीए गठबंधन के सभी साथियों ने मिलकर एक दूसरे को मिठाई खिलाकर खुशियां मनाई साथ ही पूरे बिहार में एनडीए गठबंधन की जीत पर बिहार के विकासपुरुष व बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को सभी लोगों ने बधाई दी, बरनवाल ने इस खुशी के मौके पर कहा कि जीतन राम मांझी सांसद बनकर गया जिले के स्वाभिमान में चार चांद लगाने का काम करेंगे, सभी लोगों ने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि इस बार पुनः भाई नरेंद्र मोदी जी तीसरी बार मजबूत प्रधानमंत्री बनकर पूरे दुनिया में भारत का नाम रोशन करेंगे, बरनवाल ने कहा कि जीत के लिए जुनून चाहिए, आत्मविश्वास रंगों में खूब चाहिए, ये आसमान भी आएगा जमीन पर बस इरादों में जीत की गूंज चाहिए।

अवैध हथियार बिक्री की सूचना पर पुलिस ने तीन लोगों को किया गिरफ्तार , केस दर्ज

मुंगेर। सोमवार को कोतवाली पुलिस ने अवैध हथियारों की खरीद बिक्री के मामले में तीन लोगों को हिरासत में लिया है। पुलिस ने इन सभी के पास से दो पिस्टल चार मैगजीन व एक मोबाइल बरामद की है। बताया जाता है कि पुलिस को देखकर हथियार खरीदने वाला कारोबारी फरार हो गया। पुलिस फरार कारोबारी की खोजबीन शुरू कर दी है। पुलिस सुपरिटेंडेंट सैयद इमरान मसूद ने बताया कि उन्हें गुप्त सूचना मिली थी कि कोतवाली थाना क्षेत्र के भूसा गली स्थित संध्या होटल के पास कुछ लोग इकट्ठा हुए। हैं और अवैध हथियार की खरीद बिक्री कर रहा है। इस सूचना पर कोतवाली थाना अध्यक्ष राजीव कुमार तिवारी के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया और संध्या होटल के पास से तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया। उसे तीन हथियार तस्कर की तलाशी करने पर हथियार ब्राह्मण की गई। एसपी ने बताया कि इस मामले में मोहम्मद महताब मोहम्मद अशद उर्फ मोहम्मद साजिद और मोहम्मद अरमान को गिरफ्तार किया गया है। मोहम्मद महताब और मोहम्मद अरमान पूर्व में हथियार खरीद बिक्री में जेल जा चुका है।

कोर्ट से मुकदमा उठाने को लेकर विरोधी ने चलाई गोली, मुकदमा दर्ज

तारापुर (मुंगेर)। मुकदमा उठाने की बात को लेकर थाना क्षेत्र के कमरगामा में युवक अंकुश राज पर गोली चलाए जाने की शिकायत दर्ज कराने के लिए युवक के पित विनय कुमार तारापुर थाना पहुंचे। आवेदन के साथ प्रमाण के लिए पुलिस को एक खोखा को सॉपते हुए पीड़ित के पिता ने बताया कि उनका बेटा अंकुश राज रविवार की शाम तारापुर बाजार जा रहा था। रास्ते में अपने दोस्त सौरभ कुमार के घर के समीप रुका। जहां पर पिंटू चौधरी बिट्टू चौधरी गांधी सिंह पहुंचे और पुराने केस मुकदमा को उठाने को लेकर गाली गलौज करने लगा। जिसका विरोध मेरे बेटे द्वारा किए जाने पर इन लोगों ने अंकुश राज पर गोली चला दी।

बिहार की जनता ने विकास और सुशासन की राजनीति पर विश्वास जताया : उमेश सिंह कुशवाहा

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। लोकसभा चुनाव में एनडीए की जीत पर बिहार जनता दल (यू0) के माननीय प्रदेश अध्यक्ष श्री उमेश सिंह कुशवाहा ने खुशी जताते हुए कहा कि जनता ने विकास और सुशासन के पक्ष में जनादेश दिया है। एनडीए की ताकत के आगे इंडी गठबंधन पूरी तरह से धराशाई हो गया।

प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि जनता ने वोट की ताकत से झूठ और दुष्प्रचार की राजनीति करने वाले को सबक सिखाने का काम किया है। उन्होंने कहा कि लगातार तीसरी बार पूर्ण बहुमत के साथ श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र में एनडीए की मजबूत सरकार बनने जा रही है।

प्रदेश अध्यक्ष ने जदयू सहित एनडीए के तमाम कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया।

उन्होंने कहा कि एनडीए गठबंधन के तमाम कार्यकर्ताओं ने आपसी समन्वय बनाकर धरातल पर शानदार काम किया। एनडीए की शानदार जीत हमारे कार्यकर्ताओं के पसीने का प्रतिफल है। उन्होंने कहा कि माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में विगत 18 वर्षों में जो विकास के अभूतपूर्व काम हुए उसके आधार पर जनता ने एनडीए को वोट दिया है। डबल इंजन की सरकार होने से आने वाले दिनों में बिहार के विकास को नई रफ्तार मिलेगी। श्री उमेश सिंह कुशवाहा ने कहा कि एनडीए गठबंधन की सरकार पूरी एकजुटता से अगले 5 वर्षों तक बिहार व देश के जनता की सेवा करेगी। विकसित भारत और विकसित बिहार के निर्माण को लेकर हम पूरी तरह से संकल्पबद्ध हैं। देश और बिहार की जनता ने एनडीए के ऊपर जो भरोसा जताया है उसे पूरा करने में हम कोई कोर कसर नहीं छोड़े गे। एनडीए की जीत मोदी-नीतीश की करिश्माई जोड़ी पर जनता के अटूट विश्वास की जीत है। प्रदेश अध्यक्ष ने बिहार सहित पूरे देश की जनता का आभार प्रकट किया और कहा कि जन आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए एनडीए सरकार पूरी ईमानदारी से काम करेगी।

राहुल गांधी के खटाखट वाला दांव चल गया : सल्लू खान

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। पूरे देश में राहुल गांधी अपने दम पर जिस तरह के रिजल्ट में सुधार नजर और कांग्रेस के प्रदर्शन में सुधार दिख रहा उ। कहा यही जा रहा कि राहुल गांधी का खटाखट वाला दांव चल गया। ऐसा इसलिए क्योंकि कांग्रेस पार्टी इस चुनाव में 100 का आंकड़ा का अकरा पर कर लिया। इससे पहले 2014 में कांग्रेस को लोकसभा चुनाव में 44 सीटें आई थी। वहीं 2019 में 52 सीटें अपने नाम की थी।

इस तरह से कांग्रेस का प्रदर्शन इस बार काफी अच्छा रहा राहुल गांधी का भारत जोड़ना यात्रा पैदल मार्च आज जाकर काम आया है। लोकसभा चुनाव के नतीजों से उत्साहित कांग्रेस नेता सल्लू खान ने कहा कि कांग्रेस पार्टी सिर्फ भाजपा के खिलाफ चुनाव नहीं लड़ रहे थे, हम हिंदुस्तान की तमाम सस्थाओं के खिलाफ चुनाव लड़ रहे थे। मोदी और शाह ने इन सभी संस्थाओं को डराया धमकाया। कांग्रेस की लड़ाई संविधान को बचाने की थी। कांग्रेस के दिमाग में पहले से था, जब इन्होंने हमारा नेता राहुल गांधी की बैंक अकाउंट सीज किया। मुख्यमंत्रियों को जेल में डाला तभी लगने लगा था कि हिंदुस्तान की जनता इनके खिलाफ एक साथ खड़ी हो जाएगी।

लोकसभा चुनाव के मंगलवार की सुबह गिनती होते साथ कांग्रेस पार्टी के तमाम खर्च करता काफी उत्साहित देखें और सड़कों पर पार्टी के अच्छे प्रदर्शन के साथ मिठाइयां बताकर एक दूसरे को खिलाकर बधाइयां दी जिसका नेतृत्व अखिल भारतीय राहुल गांधी यूथ ब्रिगेड प्रदेश अध्यक्ष मो शहनवाज रहमान उर्फ सल्लू खान के नेतव्व में एक दूसरे को मिठाईयां खिलाकर बधाई दी और कार्यकताओं ने जमकर राहुल गांधी जिंदाबाद देश का अगला पीएम राहुल गांधी जिंदाबाद, सुनैना गांधी, जिंदाबाद प्रियंका गांधी जिंदाबाद, निखिल कुमार जिंदाबाद, आजम खेड़ा जिंदाबाद का नारा देते हुए एक दूसरे को गाली रखकर बधाइयां दी। सल्लू खान ने कहा कि यह जीत हिंदुस्तान की आम जनता की है यह कांग्रेस पार्टी की जीत नहीं है।

बिगड़ते पर्यावरण के लिए केवल और केवल मानव जिम्मेदार

सुरेश सिंह बैस 'शाश्वत'

विश्व की सभी महाशक्तियां और ताकतवर देश संयुक्त राष्ट्र संघ एवं सुरक्षा परिषद द्वारा बनाएं नियम तो हैं ही, लेकिन प्रकृति के नियमों का भी उल्लंघन और अवहेलना कर रहे हैं ये शक्तिशाली देशों के नित परमाणु परीक्षणों, विस्फोटों के कारण अतिवृष्टि, अनावृष्टि और दूषित वायुमंडल हमें चेतावनी दे रहे है। और यह लोग उल्टे दुनिया को तबाह करने वाले परमाणु बमों का विशाल भण्डार रखकर दुनिया को धमका रहे हैं, और मनमानी कर रहे हैं। इसी का ताजा तरीन उदाहरण है कि आज रू -यूक्रेन युद्ध की तबाही पिछले पंद्रह महीने से अधिक हो जाने के बाद भी रुक नहीं रही है । इसके दुष्प्रभाव से सारी दुनिया आक्रांत हो चुकी है।

पर्यावरण प्रदूषण को हम निम्न प्रकार से देखेंगें, वायुमंडलीय प्रदूषण- स्वच्छ हवा प्राणिमात्र के लिये पहली जरूरत है। इस लिहाज से आज हमारे वातारण में काफी जहर घुल चुका है। कारखानों की चिमनियों से निकलने वाला धुआं प्रदूषण का एक प्रमुख स्त्रोत है, वहीं वाहनों द्वारा छोड़ी जाने वाली गैस, धुवां आदि भी इनके जिम्मेदार है। वायुमंडल में इसके फलस्वरुप सल्फर डाइआक्साइड, कार्बन डाइआक्साइड एवं कार्बन मोनोआक्साइड जैसी विषैले गैसों की मात्रा बढ़ती जा रही है। यदि इसकी मात्रा बहुत ज्यादा हो जाय तो तेजाब की बारिश हो सकती है। कई घातक बीमारियां भी इसी वजह से फैल रही हैं।

जल प्रदूषण - हवा के बाद पानी जीवन की दूसरी मूलभूत आवश्यकता है। कारखानों में विभिन्न रसायनिक प्रकियाओं से गुजरने के बाद जल एकदम विषैला हो जाता है, जिसे हम पीने के उपयोग में ले लेते है। इसी तरह शहरी क्षेत्रों में भी मल - मूत्र सीवेज के जरिये नालों में फिर नालों के जरिये नदियों में प्रवाहित कर दिया जाता है। इस विषैले एवं प्रदूषित जल में घातक कार्बनिक एवं अकार्बनिक पदार्थ तो होते ही हैं। साथ ही कीटाणु और अन्य बीमारियां भी होती है , जो कि अनेक महामारियों का कारण बनते हैं। प्रदूषित जल के कारण कुछ वर्ष पूर्व बिलासपुर शहर एवं आसपास के काफी क्षेत्रों में आंत्रशोध, हैजा, डायरिया जैसी बीमारियों का प्रकोप हमें सहना पड़ा था। इस वर्ष भी बरसात का मौसम अब सिर पर आ रहा है। अभी से ही शासन प्रशासन एवं निगम सहित हम सभी को बचने हेतु प्रवं बचाव कार्य निपटा लेना अति अवश्यक होगा।

भूमि प्रदूषण- दतों फंजीसाइडश पेस्टीसाइड (रसायनिक खाद) के अधिकाधिक प्रयोग से हमारे यहां की मिट्टी प्रदूषित होती जा रही है। इससे जमीन की उर्वरा शक्ति पर भी विपरित प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा वर्षा में इन्हीं विनाशक पदार्थों को लेकर पानी नदियों एवं तालाबों में पहुंचता है। इस तरह भूमि का यह प्रदूषण अप्रत्यक्ष रूप से जल को भी प्रदूषित करने में सहायक है। पर्यावरण की सुरक्षा में हम देखते है कि पेड़ पौधों का बहुत अधिक महत्व है। मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पहलुओं के साथ वृक्ष अटूट रूप से जुड़े हैं।

पर्यावरण जब जब बिगड़ेगा, तब तब उसका सबसे ज्यादा खामियाजा मानव को भुगतना होगा। यह तथ्य उतना ही सत्य है जितना कि यह कि हम धरती को विनाश की ओर धकेल रहे हैं। पर्यावरण प्रदूषण कोई और नहीं फैला रहा हैं स्वंय मानव ही तो इसका पहला और अंतिम कारक है। इसलिये मानव के हित के लिये, वह स्वयं जितनी जल्दी पर्यावरण के सुधार के लिए होश में आएं ये उतना ही अच्छा सिद्ध होगा। पर्यावरण प्रदूषण का गंभीरता पूर्वक अध्ययन करने से पूर्व यह समीचीन होगा कि यह अच्छी तरह से जान लिया जाये कि पर्यावरण किसे कहते हैं?

हमारे चारो ओर की जलवायु, वनस्पति, जल और जीवधारी -आपसी सामंजस्य के साथ मिलकर ही पर्यावरण का निर्माण करते हैं। इन सबके आपसी संतुलन से जैविक विविधताओं से स्वच्छ पर्यावरण का निर्माण होता है। अपवाद स्वरुप यह होता है कि प्राकृतिक उथल पुथल से कभी कभी इसका संतुलन बिगड़ जाता है, तब पर्यावरण को संतुलित करने का दायित्व जीवधारियों में सबसे ज्यादा बुद्धियुक्त प्राणी मानव का ही होता है। वैसे भी नैतिकता का तकाजा भी यहीं कहता है।

कंगुवा के बाद अब इस अवतार में धमाका करने आ रहे हैं सूर्या

डायरेक्टर कार्तिक सुब्बाराज और एक्टर सूर्या नई फिल्म से लेकर आ रहे हैं, जिसकी शूटिंग शुरू हो चुकी है और मेकर्स ने वीडियो शेयर कर ये गुड न्यूज फैंस को दी। इसमें सूर्या को एकदम अलग रेट्रो लुक में देखा जा सकता है। इस फिल्म का नाम अभी तय नहीं हुआ है। डायरेक्टर कार्तिक सुब्बाराज और एक्टर सूर्या ने अपनी फिल्म की शूटिंग शुरू कर दी है। इस फिल्म का टाइटल अभी तय नहीं हुआ है, लेकिन अस्थाई रूप से इसका नाम सूर्या 44 है। एक्टर और डायरेक्टर दोनों ने वीडियो शेयर करते हुए शूटिंग शुरू होने की अनाउंसमेंट की। सूर्या को इस फिल्म में रेट्रो लुक में देखकर फैंस एक्साइटेड हो गए। सूर्या ने एक्स (पहले ट्विटर) पर वीडियो शेयर करते हुए लिखा, लाइट्स! कैमरा!! एक्शन!!! इस वीडियो की शुरुआत में सूर्या की पीठ कैमरे की तरफ है और वह सूटकेस लेकर समुद्र की तरफ देख रहे हैं। जैसे ही कैमरा जूम इन करता है, वह पीछे मुड़ते हैं और व्यंग्यात्मक हंसी के साथ कैमरे को नजदीक आने का इशारा करते हैं। वीडियो में सूर्या ने रंगीन धारीदार शर्ट पहनी हुई है। उन्होंने लंबे मुलेट और फू-मांचू स्टाइल के चेहरे के बाल पहने हुए हैं। कार्तिक ने सूर्या 44 के बाकी कलाकारों की घोषणा की। उन्होंने घोषणा की कि पूजा हेगड़े फिल्म की लीड एक्ट्रेस हैं। उनके अलावा फिल्म में जयराम, करुणा करण और जोजू जॉर्ज भी होंगे। सूर्या 44 में संतोष नारायणन का म्यूजिक और श्रेयस कृष्णा की सिनेमैटोग्राफी होगी।

इन फिल्मों में नजर आएंगे सूर्या

सूर्या जल्द ही शिवा की फिल्म कंगुवा में नजर आएंगे, जिसमें वो डबल रोल में हैं। वह एक क्रूर योद्धा के रूप में नजर आएंगे, जिसमें लंबे बाल, काजल से सजी आंखें और जख्म के निशान होंगे। वह सुधा कोंगरा की फिल्म सरफिरा में भी कैमियो करेंगे, जिसमें अक्षय कुमार लीड रोल में हैं।

जान्हवी ने कबूल की अपने रिश्ते की बात, बोलीं- जिस भी शिखर पर मैं हूं खुश हूं!

बॉलीवुड की खूबसूरत अदाकारा जान्हवी कपूर की फिल्म मिस्टर एंड मिसेज माही रिलीज हो चुकी है। इस फिल्म में अभिनेत्री राजकुमार राव के साथ नजर आ रही हैं। दर्शकों को जान्हवी की यह फिल्म काफी पसंद भी आ रही है। वहीं अपने फिल्म को प्रमोट करने के लिए जान्हवी और राजकुमार राव द ग्रेट इंडियन कपिल शो में भी पहुंचे। इस शो के दौरान कपिल शर्मा अपने चिर-परिचित अंदाज में जान्हवी से उनके रिलेशनशिप के बारे में सवाल करते दिखाई दिए जान्हवी कपूर द ग्रेट इंडियन कपिल शो में अपनी फिल्म मिस्टर एंड मिसेज माही के को-स्टार राजकुमार राव के साथ नजर आईं। इस शो के दौरान कपिल शर्मा ने जब जान्हवी से पूछा कि, आप अपने लिए कैसा जीवनसाथी चाहती हैं। क्या आप अभी जिस शिखर पर हैं वहीं रहना पसंद करेंगी। कपिल शर्मा के सवाल का जवाब देते हुए जान्हवी कपूर मुस्कुराती हुई कहती हैं, मैं जिस भी शिखर पर हूं खुश हूं। जान्हवी का यह जवाब सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रहा है। कुछ यूजर्स जान्हवी के जवाब को शिखर और उनके रिश्ते पर मुहर की तरह देख रहे हैं। द ग्रेट इंडियन कपिल शो में जान्हवी कपूर अपने स्कूल के दिनों के बारे में भी बातें करती नजर आईं। साथ ही साथ उन्होंने अपने करियर के बारे में भी कई खुलासे किए। अभिनेत्री ने बताया कि उनकी मां नहीं चाहती थीं कि वे फिल्मों में काम करें। जान्हवी अपनी बात जारी रखते हुए कहती हैं, मम्मा हमेशा कहती थीं कि मैं डॉक्टर बनूंगी और मैं कहती थी हां डॉक्टर बनूंगी, लेकिन एक फिल्म के किरदार में बस। बाद में मैंने कई और करियर के बारे में सोचा, लेकिन मुझे कुछ और पसंद नहीं आया। मुझे अभिनय ही पसंद था और है।

स्टॉक मार्केट ट्रेडिंग सीखते वक्त आया शो बादल पे पांव है का आइडिया

अपकमिंग सीरियल बादल पे पांव है की निर्माता सरगुन मेहता ने शो के यूनीक कॉन्सेप्ट के बारे में कहा कि स्टॉक मार्केट में ट्रेडिंग करने वाली महिला के ऊपर पहली बार किसी शो की कहानी बनाई गई है। सरगुन ने कहा, मैं बहुत लंबे समय से स्टॉक मार्केट ट्रेडिंग सीखना चाहती थी, और मेरे सभी दोस्त, मेरे पापा, मेरे भाई और यहां तक कि अब मेरी भाभी भी स्टॉक ट्रेडिंग करते हैं। जब मैं स्टॉक के बारे में सीख रही थी, तब यह आइडिया मेरे दिमाग में आया और मैं सोचने लगी कि मैं यह क्यों करना चाहती हूं और किस तरह के लोग स्टॉक मार्केट में ट्रेडिंग करते हैं। उन्होंने कहा, तभी बानी का किरदार मेरे दिमाग में आया। यह न केवल मेरे सभी शो से अलग है, बल्कि यह सभी टीवी शो से भी अलग है। सबसे पहले, यह पूरी तरह से एक अलग दुनिया है। लंबे समय तक, महिलाएं केवल सिलाई या खाना पकाने का काम करती थीं क्योंकि उनके लिए करियर के ऑप्शन कम थे। इसलिए, उनमें जो भी स्किल थी, उन्होंने जो कुछ भी सीखा.. उसे करियर में बदल दिया। सरगुन ने कहा, लेकिन आज की पीढ़ी किसी खास हुनर से बंधी नहीं है। उन्होंने अपने लिए करियर के नए रास्ते खोल लिए हैं। आज महिलाएं हर काम कर रही हैं, तो फिर शेयर बाजार में ट्रेडिंग क्यों नहीं। एक्ट्रेस अमनदीप सिद्धू द्वारा निभाए गए बानी के किरदार को लेकर सरगुन ने कहा, इस किरदार की परिकल्पना काफी हद तक इस बात पर आधारित है कि मेरी परवरिश कैसे हुई है और मेरी मां कैसी हैं। हम ऐसे लोग हैं जो वाकई बड़े सपने देखते हैं। इसलिए, यह शो ऐसी लड़की की कहानी है जो उन सबसे सवाल कर रही है जो कहते हैं कि यही हमारी किस्मत है, और हम इसी में खुश हैं। वह उस सामाजिक मानदंड को चुनौती देती है।

बानी के किरदार के लिए अमनदीप सिद्धू को चुनने पर सरगुन ने कहा, जब हमने अमनदीप का पहला ऑडिशन देखा तो मैं तुरंत उससे कनेक्ट हो गई। जब हमने उनके साथ मॉक शूट किया तो मेरे डायरेक्टर और मैं उन्हें चुनने के लिए 100 प्रतिशत राजी हो गए। हालांकि, मैं तब तक अमनदीप से नहीं मिली थी। लेकिन जब मैं पहली बार उससे मिली और उसे कुछ सीन सुनाए, तो मैंने उसकी आंखों में एक अलग चमक देखी। सरगुन ने कहा, उसने मुझे अपनी जिंदगी के कई ऐसे किस्से बताए जहां वह बिल्कुल बानी की तरह थी। उस पल, मुझे यकीन हो गया कि वह बानी ही है। अमनदीप बानी के बहुत करीब थी और मुझे लगता है कि वह बस इस किरदार को अपनाने का इंतजार कर रही थी। बादल पे पांव है 10 जून से सोनी सब पर प्रसारित होगा।

क्या है इनसाइड आउट 2 से अनन्या पांडे का कनेक्शन

एनिमेटिड फिल्म इनसाइड आउट का दूसरा भाग जल्द ही रिलीज होने वाला है। यह फिल्म नौ साल बाद एक बार फिर से दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए पूरी तरह से तैयार है। इसी बीच फिल्म को लेकर एक बहुत बड़ी जानकारी सामने आ रही है। इनसाइड आउट 2 के हिंदी वर्जन में बॉलीवुड अभिनेत्री अनन्या पांडे की आवाज सुनने मिलेगी। डिज्नी फिल्म्स ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर एक वीडियो जारी किया है। इस वीडियो में अनन्या पांडे एक स्टूडियो में जाती हुई दिख रही हैं। इस वीडियो में उन्हें हैडफोन लगाकर वॉइस ओवर करते हुए भी देखा जा सकता है। दरअसल, अनन्या पांडे ने इनसाइड आउट 2 के हिंदी संस्करण में रिले नाम की लड़की के किरदार के लिए अपनी आवाज दी है। दर्शकों की तरह अनन्या पांडे भी इनसाइड आउट 2 को लेकर उत्साहित हैं। वो खुद भी डिज्नी और पिक्सर की एनिमेटेड फिल्मों की फैन रही हैं और जब वो एक किशोरी थीं तो उन्होंने इनसाइड आउट देखी थी। अनन्या का कहना है कि डिज्नी और पिक्सर की कहानियाँ आपको एक ऐसी दुनिया में ले जाती हैं, जो बहुत मनोरंजक होती है और उन्होंने सपने में भी इसकी कल्पना नहीं की थी कि एक दिन वो भी इस कहानी का हिस्सा बन जाएगी।

फिल्म के पहले भाग ने जीता था ऑस्कर

इनसाइड आउट के सीक्वल का बेसब्री से इंतजार किया जा रहा था। फिल्म के पहले भाग ने ऑस्कर जीता था। दर्शकों को एक बार फिर से उम्मीद है कि इनसाइड आउट 2 में कॉमेडी से भरपूर एक मजेदार कहानी देखने को मिलेगी। इस फिल्म का निर्देशन केल्सी मान ने किया है। फिल्म 14 जून, 2024 को रिलीज होगी। इसे हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में रिलीज किया जाएगा। फिल्म का निर्माण पिक्सर एनिमेशन स्टूडियोज द्वारा किया गया है।

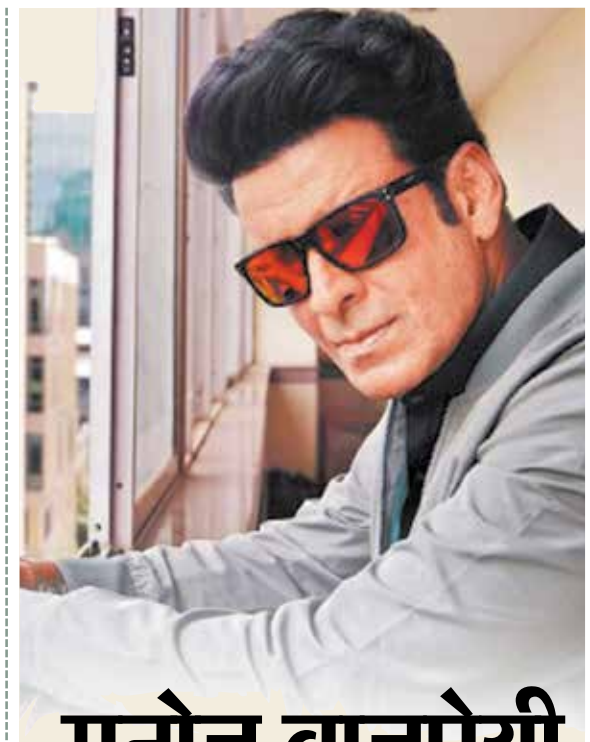

मनोज बाजपेयी ने साझा किया सफलता का मंत्र

मनोज बाजपेयी अक्सर अपनी जिंदगी से जुड़े अनुभवों को अपने फैंस के संग साझा करते दिखाई देते हैं। हाल ही में एक पॉडकास्ट शो के दौरान उन्होंने अपने संघर्ष के दिनों को याद करते हुए कहा, एक समय था जब मैं अपने करियर के सबसे मुश्किल वक्त से गुजर रहा था। मैं आर्थिक तंगी से भी परेशान था। बॉलीवुड के मशहूर अभिनेता मनोज बाजपेयी इन दिनों सुर्खियों में बने हुए हैं। उनकी फिल्म फिल्म भैया जी को दर्शक सराह रहे हैं। यह अभिनेता की 100वीं फिल्म है। यहां तक पहुंचने के लिए मनोज बाजपेयी ने काफी संघर्ष किया है। हाल ही में एक इंटरव्यू के दौरान अभिनेता अपने करियर के उतार-चढ़ाव के बारे में बाते करते नजर आए। साथ ही साथ उन्होंने यह भी बताया जिंदगी के सबसे कठिन दौर से उन्होंने क्या सीखा।

मांस और शराब का सेवन त्यागा

मनोज बाजपेयी अक्सर अपनी जिंदगी से जुड़े अनुभवों को अपने फैंस के संग साझा करते दिखाई देते हैं। हाल ही में एक पॉडकास्ट शो के दौरान उन्होंने अपने संघर्ष के दिनों को याद करते हुए कहा, एक समय था जब मैं अपने करियर के सबसे मुश्किल वक्त से गुजर रहा था। मैं आर्थिक तंगी से भी परेशान था। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं। फिर एक दिन मैंने तय किया कि अब से मैं खुद को अनुशासित करूंगा। उस दौरान मैंने मांस खाना बंद कर दिया, शराब छोड़ दी और अपनी सभी बुरी आदतें से पीछा छुड़ाने की कोशिश करने में लग गया।

खुद पर काम करना शुरू किया

मनोज बाजपेयी आगे कहते हैं, मैंने तय कर लिया था कि चाहे कोई काम दे या न दे मैं रोजाना दो डायरेक्टर्स को फोन करूंगा और अपने लिए काम की बात करूंगा। इतना ही नहीं चाहे मुझे कहीं बाहर जाना हो या नहीं मैंने अच्छे कपड़े पहनता था। यह सब मेरे लिए काम जैसा हो गया था और अब यही आदतें अब मेरी जिंदगी का हिस्सा बन चुकी हैं। मनोज बाजपेयी ने उसी पॉडकास्ट के दौरान यह भी साझा किया कि उन्होंने बतौर अभिनेता अपने विकास के लिए निर्देशक-निर्माता प्रकाश झा की फिल्म राजनीति में काम किया और यही फिल्म अभिनेता के लिए वरदान साबित हुआ। राजनीति से ही उन्होंने बॉलीवुड में अपनी धमाकेदार वापसी की। अभिनेता कहते हैं, असफलता के उस दौर में मैंने खुद को तैयार किया, खुद पर काम किया। वह समय मेरे लिए बेकार साबित नहीं हुआ।

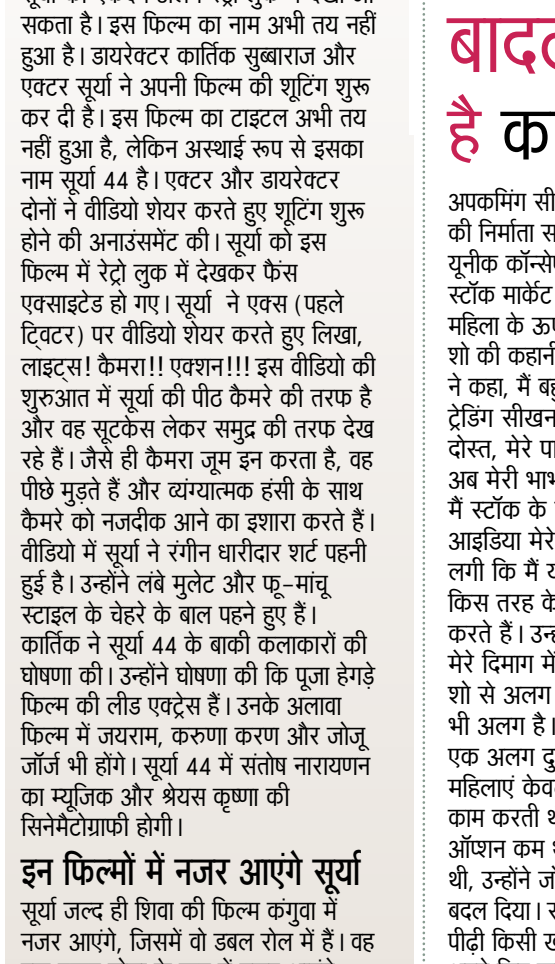

जुनैद खान की दूसरी फिल्म पर आया बड़ा अपडेट

आमिर खान के बेटे जुनैद खान जल्द ही फिल्म महाराज से हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में कदम रखने जा रहे हैं। इस फिल्म के बाद वे तमिल फिल्म लव टुडे के रीमेक में नजर आएंगे। साल 2022 की सबसे बड़ी हिट इस तमिल फिल्म के रीमेक की चर्चा फिल्मी गलियारों में लंबे समय से चल रही है। इस फिल्म में उनके साथ द आर्चीज में काम कर चुकी अभिनेत्री खुशी कपूर दिखेंगी। इस बीच फिल्म को लेकर एक बड़ी जानकारी सामने आई है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक फिल्म का नाम लवयापा रखा गया है। इसका निर्देशन सीक्रेट सुपरस्टार और लाल सिंह चड्ढा जैसी फिल्म बना चुके निर्देशक अद्वैत चंदन कर रहे हैं।

मुंबई में चल रही शूटिंग

फिल्म के नाम से ऐसा प्रतीत हो रहा है कि इसमें लव और स्यापा का संजोयन लोगों को देखने को मिल सकता है। इस फिल्म में जुनैद और खुशी प्यार में डूबे हुए युवा जोड़े के रूप में नजर आएंगे। फैंटम स्टूडियो और एजीएस एंटरटेनमेंट की ओर से निर्मित फिल्म लवयापा की शूटिंग कथित तौर पर 27 मई को शुरू हो चुकी है। बताया जा रहा है कि मौजूदा समय में इसका फिल्मांकन मुंबई के मीरा रोड पर हो रहा है। रिपोर्ट्स के दावों की मानें तो निर्माता मानसून के आने से दो सप्ताह पहले आउटडोर शूटिंग पूरी करना चाहते हैं। वहीं, जुनैद खान की डेब्यू फिल्म की बात करें तो वह वाईआरएफ की महाराज के साथ बतौर एक्टर अपनी पारी की शरुआत करने जा रहे हैं। यह फिल्म 14 जून को नेटफ्लिक्स पर रिलीज होने वाली है। उनके पास साल 2016 की थाई फिल्म वन डे का रीमेक भी है। दूसरी ओर,आर्चीज के बाद खुशी कपूर ने दूसरी फिल्म नादानियां की शूटिंग पूरी कर ली है। ओरिजिनल लव टुडे का निर्देशन प्रदीप रंगनाथन ने किया था, जिन्होंने इवाना के साथ मुख्य भूमिका भी निभाई थी। यह फिल्म नवंबर 2022 में रिलीज हुई थी।10 करोड़ से कम के बजट बनी इस फिल्म ने 80 करोड़ से ज्यादा की कमाई के साथ बॉक्स ऑफिस पर सफलता के झंडे गाड़ दिए थे।

अनन्या से ब्रेकअप की खबरों पर आदित्य ने तोड़ी चुप्पी

आदित्य रॉय कपूर अपनी जिंदगी को अपने तक रखने में विश्वास करते हैं। हाल ही में एक इंटरव्यू के दौरान अभिनेता ने कहा, सोशल मीडिया पर कौन मेरे बारे क्या बोल रहा है या क्या लिख रहा है इस बात पर मैं ज्यादा ध्यान नहीं देता हूं। मैं जिंदगी में सकारात्मक चीजों पर फोकस करना चाहता हूं। आशिकी 2 स्टार आदित्य रॉय कपूर आगे कहते हैं, मैं अपनी बातों को अपने तक रखता हूं। मैं हमेशा से ऐसा ही हूं। मैं निजी जिंदगी में भी शांत किस्म का इंसान हूं। मैं नहीं चाहता हूं मेरी जिंदगी के बारे में हर बात हर किसी को पता हो। मैं बेहद प्राइवेट इंसान हूं। आदित्य रॉय कपूर अपने रिलेशनशिप के बारे में कोई भी बात करना पसंद नहीं करते हैं। अभिनेता इस विषय पर बात करते हुए कहा,लोगों को जो बोलना है बोलते रहें। वे क्या बोल रहे हैं या क्या लिख रहे हैं मैं इस पर ज्यादा ध्यान नहीं देता हूं। उन्हें जो सोचना हैं वे वही सोचे, मैं अपनी शांति को भंग नहीं करना चाहता हूं। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो अनन्या पांडे और आदित्य रॉय कपूर इस साल मार्च में अलग हो गए हैं। दोनों अलगाव के बावजूद एक-दूसरे के साथ सौहार्दपूर्ण भावना रखने की कोशिश कर रहे हैं। वे इस स्थिति से परिपक्वता से निपटने की कोशिश कर रहे हैं। वहीं अनन्या अपने दोस्तों के साथ समय बिता कर खुद को बहलाने की कोशिश कर रही हैं। इन दिनों वे अनंत अंबानी के प्रीवेडिंग कार्यक्रम में शामिल हों के लिए इटली में हैं।

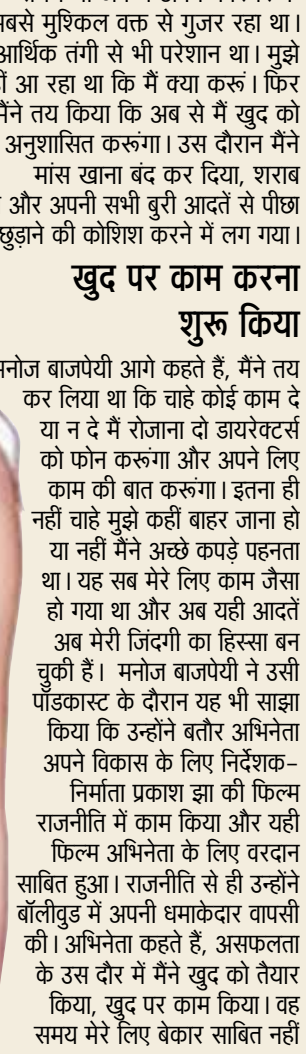

संक्षिप्त समाचार

कृष्का स्ट्रेपिंग सॉल्यूशंस ने वित्त वर्ष 24 में आय में 100 करोड़ का आंकड़ा पार कर एक महत्वपूर्ण सीमाचिन्ह हासिल किया

मुंबई, एजेंसी। हाई टेंसिल स्टील स्ट्रेप्स, स्ट्रेपिंग सील्स और स्ट्रेपिंग टूल्स की एक प्रमुख निर्माता और होलसेलर, कृष्का स्ट्रेपिंग सॉल्यूशंस लिमिटेड (एनएसई कोड : कृष्का) ने वित्त वर्ष 24 की दूसरी छमाही और वित्त वर्ष 24 के अपने ऑडिटेड वित्तीय परिणामों की घोषणा की है. वित्त वर्ष 24 की दूसरी छमाही की कुल आय 16.18 प्रतिशत छमाही बढ़कर 56.80 करोड़ हुई . एबिटडा 42 25 प्रतिशत छमाही बढ़कर 11.89 करोड़ हुआ एबिटडा मार्जिन 384 बीपीएस छमाही बढ़कर 20.94 प्रतिशत हुई . कर बाद लाभ 33.25 प्रतिशत छमाही बढ़कर 7.56 करोड़ हुआ . कर बाद लाभ मार्जिन 170 बीपीएस छमाही बढ़कर 13.32 प्रतिशत हुई .ईपीएस 23.39 प्रतिशत छमाही बढ़कर 6.33 हुई . वित्त वर्ष 24 की कुल आय 45.95 प्रतिशत वार्षिक बढ़कर 105.68 करोड़ हुई . एबिटडा 46.02 प्रतिशत वार्षिक बढ़कर 20.26 करोड़ हुआ . एबिटडा मार्जिन 1बीपीएस वार्षिक बढ़कर 19.17 प्रतिशत हुई .कर बाद लाभ 41.73 प्रतिशत वार्षिक बढ़कर 13.24 करोड़ हुआ .कर बाद लाभ मार्जिन 12.53 प्रतिशत हुई . ईपीएस 7.30 प्रतिशत वार्षिक बढ़कर 11.46 हुई . प्रदर्शन पर टिप्पणी करते हुए कृष्का स्ट्रेपिंग सॉल्यूशंस लिमिटेड के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर, श्री लेनिन कृष्णमूर्ति बालामणिकंदन ने कहा,हम आय में वित्त वर्ष 24 में 100 करोड का माइलस्टोन हासिल कर शानदार आय और लाभ वृद्धि की रिपोर्ट देकर रोमांचित है .आगे चलकर हमारी व्यूहनीति एक उच्च मार्जिन प्रोडक्ट, अल्ट्रा हाई टेंशिल की उत्पादन क्षमता बढ़ाने की है और पैकेजिंग कॉन्ट्रैक्ट में हमारी स्थिति मजबूत करने की है जिससे निकट भविष्य में हमारे वित्तीय प्रदर्शन को उल्लेखनीय बढ़ावा मिलेगा.

टाटा ने जीएसटी शुल्क पर विदेशी एयरलाइनों के खिलाफ जांच पर जताई चिंता

दुबई एजेंसी। वैश्विक एयरलाइन समूह आईएटीए ने एक भारतीय एजेंसी द्वारा कुछ विदेशी एयरलाइनों पर माल एवं सेवा कर (जीएसटी) से संबंधित कुछ शुल्कों की जांच को लेकर मंगलवार को चिंता जाहिर की। जीएसटी खुफिया महानिदेशालय (डीजीजीआई) ने भारत में परिचालन करने वाली कुछ विदेशी एयरलाइन के खिलाफ जांच शुरू कर है। आईएटीए के भारत के 'कंट्री डायरेक्टर अमिताभ खोसला ने यहां कहा कि फिलहाल 10 विदेशी एयरलाइन के खिलाफ जांच की जा रही है और यह कदम अभूतपूर्व है। उन्होंने बताया कि अंतरराष्ट्रीय हवाई परिवहन संघ (आईएटीए) ने इस मुद्दे पर भारत सरकार को एक विस्तृत प्रतिवेदन दिया है। एयरलाइनों को अक्टूबर 2023 से नोटिस मिले हैं। उत्तर एशिया एवं एशिया प्रशांत क्षेत्र (अंतरिम) के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष शी शिंगक्कान ने भी आईएटीए की वार्षिक आम बैठक के दौरान आयोजित 'ब्रीफिंग में जीएसटी मुद्दे का उल्लेख किया। बयान में कहा गया, ''भारत में एयरलाइन के शाखा कार्यालय विमान पट्टे, चालक दल और पायलट, ईंधन तथा रखरखाव लागत के लिए अनुबंध जैसे महत्वपूर्ण कार्यों में कोई भूमिका नहीं निभाते हैं। भारत से आने-जाने वाले सभी परिचालनों का निर्णय, नियंत्रण और संचालन एयरलाइनों के मुख्य कार्यालयों द्वारा लिया जाता है। भारत में शाखा कार्यालयों को किसी भी रणनीतिक और/या परिचालन जोखिम तथा कार्यों के लिए जिम्मेदार ठहराना कानूनी रूप से सही नहीं है।

एचडीएफसी बैंक ने जारी किया अलर्ट ! दो दिन नहीं काम करेंगे डेबिट-क्रेडिट कार्ड

नई दिल्ली, एजेंसी। क्रेडिट कार्ड और डेबिट कार्ड का इस्तेमाल करने वाले करोड़ों ग्राहकों को कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। देश के सबसे बड़े बैंक एचडीएफसी बैंक ने इसे लेकर अपने ग्राहकों को अलर्ट किया है और बताया है कि दो दिन उन्हें कार्ड का इस्तेमाल करने में दिक्कतें आ सकती हैं। एचडीएफसी बैंक ने इस बारे में सभी ग्राहकों को ईमेल और एसएमएस के जरिए अलर्ट किया है। बैंक की ओर से भेजे गए मैसेज में बताया गया है कि उसके क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड और प्रीपेड कार्ड कुछ समय के लिए इस्तेमाल नहीं किए जा सकेंगे। उसके ये कार्ड बताई गई अवधि के दौरान ट्रांजेक्शन के लिए अनुपलब्ध रहने वाले हैं। एचडीएफसी बैंक ने कार्ड के अनुपलब्ध रहने का जो समय बताया है, वह 4 जून (मंगलवार) को रात के साढ़े 12 बजे से ढाई बजे और 6 जून (गुरुवार) को रात के साढ़े 12 बजे से ढाई बजे का है।

313 बिलियन डॉलर हो सकता है भारत का शिक्षा और स्किल का बाजार

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत में शिक्षण और स्किल क्षेत्र से जुड़े बाजार में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। अनुमान है कि साल 2030 में यह 313 बिलियन डॉलर का हो सकता है। साल 2020 में यह 180 बिलियन डॉलर का था। यह अनुमान कैम्ब्रिज एजुकेशन लैब यानी सीईएल की तरफ से आया है। इसका कहना है कि शिक्षा और स्किल से जुड़ा क्षेत्र तेजी से बढ़ रहा है इसलिए इसमें दोगुने बढ़त की उम्मीद है। इसके साथ ही इस क्षेत्र में निवेश भी बढ़ेगा।

सीईएल का कहना है कि भारतीय शिक्षा प्रणाली में बदलाव की जरूरत है। इसलिए इस समय विदेशों से भी एक्सपर्ट भारत आ रहे हैं। खुद सीईएल ने भी भारतीय शिक्षा में योगदान करते हुए इस विकास का लाभ उठाने की योजना बनाई है। सीईएल के संस्थापक सुयश भट्ट का कहना है कि सीईएल ने भारत के साथ यूके, फिनलैंड, इंडोनेशिया और एस्टोनिया में कई शिक्षा सम्मेलन आयोजित किए हैं। और अब स्कूल लीडरों, शिक्षकों और छात्रों के लिए कई किफायती शिक्षा कार्यक्रम विकसित करने पर विचार कर रहा है। सीईएल प्रोग्राम ने जम्मू और कश्मीर से लेकर तमिलनाडु तक भारत के कई राज्यों के 60 से अधिक स्कूलों और 1,00,000 से अधिक छात्रों को सीधे तौर पर प्रभावित किया है।

छोटे शहरों में भी विस्तार

कैम्ब्रिज एजुकेशन लैब ने अब रणनीति बदल दी है। कभी बड़े शहरों पर फोकस करने वाली कंपनी ने अब देश के दूसरे और तीसरे दर्जे के शहरों तक पहुंचने की योजना बनाई है। इसके लिए सीईएल ने देश के स्कूलों के साथ समझौते करने शुरू कर दिए हैं। कैम्ब्रिज एजुकेशन लैब ने अब 9वीं से 12वीं कक्षा के भारतीय छात्रों के लिए एप्टीट्यूड टेस्ट शुरू किया है, जो खास तौर पर टियर 2 और टियर 3 शहरों को ध्यान में रखकर बनाया गया है। इसमें शीर्ष स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को कैम्ब्रिज की एक सप्ताह की एक्सप्लोरेशन ट्रिप के लिए पूरा फंड दिया जाएगा, जिसका उद्देश्य छात्रों को अंतरराष्ट्रीय अनुभव प्रदान करना है।

बढ़ेगा निवेश

सुयश भट्ट का कहना है कि जैसे-जैसे शिक्षा और स्किल सेक्टर का बाजार बढ़ेगा, इस क्षेत्र में निवेश भी बढ़ेगा। उन्होंने कैम्ब्रिज का उदाहरण देते हुए बताया कि यह कंपनी हर साल भारत में निवेश बढ़ा रही है। उनका कहना है कि उन्होंने पिछले साल भारत के 25-30 स्कूलों को आमंत्रित किया था। जबकि 30 स्कूल ऑनलाइन जुड़े थे।

इंफोसिस के सीईओ सलिल पारेख को वित्त वर्ष 24 में मिले 66 करोड़, पिछले साल से 17 प्रतिशत बढ़ा वेतन

नई दिल्ली, एजेंसी। इंफोसिस के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सलिल पारेख का सालाना वेतन वित्तीय वर्ष 2024 में 17.3 प्रतिशत बढ़कर 66.2 करोड़ रुपये तक पहुंच गया। कंपनी की वार्षिक रिपोर्ट में यह जानकारी सामने आई। पारेख ने वित्त वर्ष 23 में 56.4 करोड़ का वेतन प्राप्त किया था। पिछले वित्तीय वर्ष में उनका सालाना वेतन वित्तीय वर्ष 2022 की सैलरी 71.02 करोड़ रुपये के मुकाबले घटकर 56.4 करोड़ रुपये रह गई थी। पारेख के पारिश्रमिक में फिक्स्ड पे, वेरिएबल पे, रिटायरल बेनिफिट्स और इस अवधि के दौरान स्टॉक इंसेंटिव मूल्य शामिल है। पारेख का कुल फिक्स्ड वेतन वित्तीय वर्ष 2023 में 7.12 करोड़ से बढ़कर वित्तीय वर्ष 2024 में 7.47 करोड़ हो गया। उन्हें वित्त वर्ष 23 के 18.73 करोड़ की तुलना में वित्त वर्ष 24 में 19.75 करोड़ रुपये बोनस के रूप में दिए गए।

वित्त वर्ष 24 के लिए पारेख के वेतन में 2,58,636 ऋ (प्रतिबंधित स्टॉक यूनिट) के जरिए जुटाए गए 39.03 करोड़ रुपये भी शामिल थे। इसके विपरीत, वित्त वर्ष 23 के दौरान, पारेख के पारिश्रमिक में आरएसयू के जरिए 30.60 करोड़ रुपये जोड़े गए थे। इस बीच, कर्मचारियों का औसत वेतन क्रमशः वित्त वर्ष 2024 और वित्तीय 2023 में 9,77,868 रुपये और 9,00,012 रुपये रहा। वित्तीय वर्ष 2023 की तुलना में वित्तीय 2024 में एमआरई में वृद्धि 8.65 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। वहीं दूसरी ओर, इन्फोसिस के गैर-कार्यकारी चेयरमैन नंदन एम. नीलेकणि ने स्वेच्छा से कंपनी को दी गई अपनी सेवाओं के लिए कोई पारिश्रमिक नहीं लेने का फैसला किया।

राधाकिशन दमानी ने टाटा के मल्टीबैगर स्टॉक में घटाई हिस्सेदारी, 1 साल में पैसा डबल

नई दिल्ली, एजेंसी। बीते कुछ सालों में टाटा ग्रुप की कई कंपनियों ने शेयर बाजारों में शानदार रिटर्न दिया है। इन कंपनियों की लिस्ट में ट्रेंड भी शामिल है। महज एक साल में ही टाटा के इस स्टॉक ने 190 प्रतिशत का रिटर्न दिया है। वहीं, बीते 5 साल की बात करें तो ट्रेंड के पोजीशनल निवेशकों को 1000 प्रतिशत का रिटर्न मिला है। दिग्गज निवेशक राधाकिशन दमानी ने इस कंपनी में हिस्सेदारी घटाई है। टाटा ग्रुप के इस स्टॉक ने अपने शानदार प्रदर्शन से कई दिग्गज निवेशकों और इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स को आकर्षित किया है। इन्स्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स में एक्सिस म्युचुअल फंड, एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस आदि शामिल हैं। दिग्गज निवेशकों की बात करें तो राधाकिशन दमानी ने भी इस कंपनी में निवेश किया है। उनकी कंपनी में कुल हिस्सेदारी 1.35 प्रतिशत की है। राधाकिशन दमानी ने डेरिवेटिव ट्रेडिंह एंड रिसॉर्ट प्राइवेट लिमिटेड के जरिए टाटा ग्रुप के इस स्टॉक में निवेश किया है। हालांकि उन्होंने अपनी हिस्सेदारी टाटा की कंपनी में घटाई है।

ट्रेंड की शेयर होल्डिंग के अनुसार 31 मार्च 2024 तक राधाकिशन दमानी की कुल हिस्सेदारी घटकर 1.35 प्रतिशत रह गई थी। जबकि एक क्वार्टर पहले उनकी हिस्सेदारी 1.52 प्रतिशत थी। दिसंबर से मार्च के दौरान राधाकिशन दमानी ने ट्रेंड के 6,13,724 शेयर बेच दिए हैं। यानी उन्होंने 0.17 प्रतिशत हिस्सेदारी घटाई है। बीते 5 साल के दौरान ट्रेंड के शेयरों का भाव 403.50 रुपये से 4680 रुपये के लेवल पर पहुंच गया। वहीं, साल 2024 में कंपनी के शेयरों की कीमतों में 55 प्रतिशत की तेजी देखने को मिली है। वहीं, स्टॉक का भाव इस साल 3000 रुपये के लेवल से बढ़कर 4680 रुपये के लेवल तक पहुंच गया।

कंपनियां नहीं कर पाएंगी 100 प्रतिशत फ्रूट जूस का दावा, एफएसएसएआई ने जारी किया फरमान

नई दिल्ली, एजेंसी। असली फ्रूट जूस के नाम पर कई तरह के प्रोडक्ट बेच रहीं कंपनियों को झटका लगा है। फूड सेफ्टी रेगुलेटर एफएसएसएआई ने सभी कंपनियों को निर्देश दिया है कि वह डिब्बाबंद प्रोडक्ट पर 100 फीसदी फ्रूट जूस (100 प्रतिशत) का दावा न करें। कंपनियों को अपने प्रोडक्ट की मार्केटिंग और विज्ञापन के दौरान भी ऐसे क्लेम से बचना होगा। एफएसएसएआई ने सभी फूड बिजनेस ऑपरेटर्स से इस संबंध में तत्काल कार्रवाई करने को कहा है।

एफएसएसएआई ने अपने आधिकारिक बयान में कहा कि फूड बिजनेस से जुड़ी सभी कंपनियों फलों के जूस के डिब्बे पर लगे लेबल और विज्ञापन में से यह दावा हटाना होगा। एफएसएसएआई को जानकारी प्राप्त हुई थी कि कई कंपनियां लगातार ऐसे भ्रामक दावे कर रही हैं। इससे कस्टमर्स के स्वास्थ्य को हानि पहुंचती है। सभी एफबीओ को निर्देश दिया गया है कि वह पहले से छाप चुकी पैकेजिंग सामग्री को 1 सितंबर, 2024 से पहले खत्म कर लें।

फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स (विज्ञापन और दावे) रेगुलेशन- 2018 के अनुसार, कोई भी कंपनी 100 फीसदी फ्रूट जूस का दावा नहीं कर सकती है। इन सभी जूस में सबसे ज्यादा मात्रा में पानी होता है। इसमें थोड़ी मात्रा में फ्रूट जूस या पल्प मिला देने से यह 100 फीसदी जूस नहीं हो जाता है। एफएसएसएआई के अनुसार, ऐसे गुमराह करने वाले दावों पर पूरी तरह से रोक लगनी चाहिए।

ज्यादा शुगर होने पर अपने प्रोडक्ट को स्वीट जूस बताना होगा

सभी एफबीओ से कहा गया है कि वह फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स रेगुलेशन के नियमों के दायरे में काम करें, यदि उनके जूस में 15 ग्राम प्रति किलो से ज्यादा शुगर है तो उन्हें अपने प्रोडक्ट को स्वीट जूस के हिसाब से लेबल करना होगा। एफएसएसएआई ने कहा कि वह लगातार फूड सेफ्टी के नियमों को मजबूती से लागू करने का प्रयास करती है। हम किसी भी कंपनी को भ्रामक दावे करके कस्टमर्स को नुकसान नहीं पहुंचाने देंगे। सभी कंपनियों को फलों के जूस के संबंध में बनाए गए नियमों का पालन करना होगा।

फ्यूज हुए पावर सेक्टर के शेयर

नई दिल्ली, एजेंसी। लोकसभा चुनाव के नतीजों ने शेयर बाजार के निवेशकों का मूड बिगाड़ दिया है। दरअसल निवेशक एग्जिट पोल के अनुमानों से उत्साहित थे और यह मान कर चल रहे थे कि बीजेपी अपने दम पर बहुमत हासिल कर लेगी। हालांकि, दोपहर 11 बजे तक के रुझान से यह माना जा रहा है कि बीजेपी गठबंधन मुश्किल से बहुमत हासिल कर पाएगी। यही वजह है कि शेयर बाजार में हड़कंप मचा हुआ है और निवेशक अपने शेयर बेचकर भाग रहे हैं। इस माहौल में मंगलवार को सेंसेक्स 3800 अंक से ज्यादा टूट गया तो निफ्टी ने भी 800 अंकों से ज्यादा की गिरावट देखी। इस बिकवाली की वजह से लगभग हर सेक्टर के शेयर क्रैश हुए हैं। इसमें पावर सेक्टर और एनर्जी के शेयर भी फिसलते नजर आए। चुनावी नतीजे का माहौल कुछ ऐसा है कि पावर या एनर्जी सेक्टर की बड़ी कंपनियों के शेयर रेंगते नजर आ रहे हैं। अडानी ग्रीन, अडानी एनर्जी और अडानी पावर में क्रमशः 18.29 प्रतिशत, 14.18 प्रतिशत और 13.6 प्रतिशत की भारी गिरावट देखी गई।

सेबी ने लॉन्च किया सार्थी 2.0, यहां निवेशकों को मिलेगा हर सवाल का जवाब

मुंबई एजेंसी। आम निवेशकों की आसानी के लिए फिर एक मजबूत कदम उठा है। कैपिटल मार्केट रेगुलेटर सेबी ने निवेशकों के लिए पर्सनल फाइनेंस पर मोबाइल ऐप 'सारथी 2.0' पेश किया है। आमतौर पर वित्तीय टर्म बड़े ही कंप्लेक्स होते हैं। इस ऐप में ऐसी धारणाओं को आसान तरीके से समझाने के उपाय किये गये हैं। भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड ने बयान में कहा, अपडेटेड 'सारथी' ऐप को उपयोगकर्ताओं के लिए आसान बनाया गया है।

इसमें जटिल वित्तीय अवधारणाओं को आसान बनाने के उद्देश्य से व्यापक स्तर पर उपाय किये गये हैं।

सेबी के इस अपडेटेड ऐप में फाइनेंसियल 'कैलकुलेटर' शामिल किया गया है। इसमें केवायसी प्रक्रियाओं, म्यूचुअल फंड , ईटीएफ, शेयर बाजारों में शेयर खरीदने और बेचने, निवेशक शिकायत निवारण व्यवस्था और ऑनलाइन विवाद समाधान प्लेटफॉर्म पेश करने के साथ उसका विश्लेषण उपलब्ध है।

टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने मई 2024 में 25,273 गाड़ियां बेचीं

बैंगलोर, एजेंसी। अपने मजबूत और स्थिर प्रदर्शन को रेखांकित करतेहुए, टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने मई 2024 के महीने में 25,273 गाड़ियों की बिक्री दर्ज की है। यह मई 2023 की तुलना में 24त्न कीसाल-के-मुकाबले-साल की वृद्धि है। तब कंपनी ने 20,410 इकाइयाँ बेची थीं।मई महीने में, घरेलू बिक्री 23,959 गाड़ियों तक पहुँच गई। इसमें 1,314 इकाइयों का निर्यात भी शामिल है। कंपनी ने अप्रैल 2024 की तुलना में भी23त्न की वृद्धि दर्ज की है। इस दौरान 20,494 गाड़ियों की बिक्री हुई थी। इसके अलावा, यह उपलब्धि कैलेंडर वर्ष 2024 के पहले पांच महीनों में 48त्न की उल्लेखनीय वृद्धि दिखाती है, जिसमें कुल बिक्री 1,22,776 गाड़ियों तकपहुंच गई ।

अदाणी वन और आईसीआईसीआई बैंक ने एयरपोर्ट से जुड़े फायदों के साथ भारत का पहला क्रेडिट कार्ड लॉन्च किया

वीज़ा के सहयोग से शुरू किए जाने वाले इस कार्ड में मिलते हैं अनेक महत्वपूर्ण रिवार्ड्स

मुंबई, एजेंसी। अदाणी वन और आईसीआईसीआई बैंक ने आज वीज़ा के सहयोग से एयरपोर्ट से जुड़े लाभों के साथ भारत का पहला को-ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड लॉन्च किया। यह कार्ड दो वेरिएंट में उपलब्ध होगा- अदाणी वन आईसीआईसीआई बैंक सिग्नेचर क्रेडिट कार्ड और अदाणी वन आईसीआईसीआई बैंक प्लेटिनम क्रेडिट कार्ड। ये कार्ड एक व्यापक और पर्याप्त रिवार्ड प्रोग्राम प्रदान करते हैं। कार्ड में कार्डधारकों की जीवनशैली को बेहतर बनाने और उनके एयरपोर्ट और यात्रा के अनुभव को बेहतर बनाने के लिए डिज़ाइन किए गए ढेर सारे लाभ शामिल हैं। ये कार्ड अदाणी समूह के कंज्यूमर ईको सिस्टम जैसे अदाणी वन ऐप, जहाँ फ़्लाइट, होटल, ट्रेन, बस और कैब की बुकिंग की जा सकती है, अदाणी द्वारा प्रबंधित हवाई अड्डे; अदाणी सीएनजी पंप; अदाणी बिजली बिल और ऑनलाइन ट्रेन बुकिंग प्लेटफ़ॉर्म ट्रेनमैन के जरिये खर्च करने पर 7 प्रतिशत तक अदाणी रिवार्ड पॉइंट प्रदान करते हैं। दिलचस्प बात यह है कि पुरस्कारों की कोई सीमा नहीं है।

कार्ड कई तरह के लाभ भी प्रदान करते हैं, जिसमें मुफ़्त हवाई टिकट जैसे वेलकम बेनिफिट और प्रीमियम लाउंज एक्सेस, प्रणाम मीट एंड ग्रीट, पोर्टर, वैलेट और प्रीमियम कार पार्किंग जैसे एयरपोर्ट संबंधी विशेष सुविधाएं भी शामिल हैं। कार्ड उपयोगकर्ताओं को ड्यूटी फ्री आउटलेट पर शॉपिंग और एयरपोर्ट पर एफ एंड बी खर्च पर छूट जैसे

और अंतरराष्ट्रीय खर्चों पर मुफ़्त मूवी टिकट और अदाणी रिवार्ड पॉइंट जैसे लाभ भी मिलते हैं।

इस महत्वपूर्ण साझेदारी के साथ वित्तीय क्षेत्र में अदाणी समूह का पहला उद्यम भी लॉन्च हो गया है। यह उद्यम एक्सीलैंस और इनोवेशन के लिए अदाणी ग्रुप की बेजोड़ प्रतिष्ठा का लाभ उठाता है। कंज्यूमर फाइनेंस के माहौल में जबरदस्त परिवर्तन लाने के लक्ष्य के साथ अदाणी वन का लक्ष्य आईसीआईसीआई बैंक और वीज़ा के साथ मिलकर स्पेशल प्रिविलेज की दुनिया को अनलॉक करते हुए ग्राहकों को एक बेहतर और आसान भुगतान अनुभव प्रदान करना है। इस सहयोग के माध्यम से, अदाणी वन लोगों को सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है, साथ ही यह भी सुनिश्चित करता है कि उनके पास आज की गतिशील अर्थव्यवस्था में पनपने के लिए आवश्यक वित्तीय संसाधनों तक पहुँच हो।

अदाणी समूह के चेयरमैन श्री गौतम अदाणी ने लॉन्च इवेंट में अपना उत्साह व्यक्त करते हुए कहा, ''आईसीआईसीआई बैंक और वीज़ा के साथ यह अनूठी और महत्वपूर्ण साझेदारी ग्राहकों के अनुभव को बेहतर बनाने की दिशा में एक नया स्टैंडर्ड कायम करेगी। यह सहयोग दरअसल इनोवेशन और एक्सीलैंस के प्रति हमारी जिम्मेदारी को भी दर्शाता है। अदाणी वन आईसीआईसीआई बैंक क्रेडिट कार्ड एक सहज डिजिटल ईको सिस्टम की दुनिया को बेहतर तरीके से आगे बढ़ाता है। फिजिकल बी2बी कारोबारों को डिजिटल दुनिया से जोड़ते हुए अदाणी वन प्लेटफॉर्म यूजर्स को एक शानदार और बेहतर सुविधाओं का आनंद उठाने का अवसर प्रदान करता है।''

आईसीआईसीआई बैंक के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर श्री राकेश झा ने कहा, ''हमारा मानना है कि हमारे डिजिटल प्रॉडक्ट्स और प्रोसेसिंग में सुधार के साथ ग्राहकों की समस्त जरूरतों पर फोकस करने से हम न सिर्फ ग्राहकों बाजार हिस्सेदारी बढ़ाने में भी आसानी हुई है। अडाणी वन और वीज़ा के सहयोग से को-ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड की लॉन्चिंग हमारे इसी विजन के अनुरूप है। इस लॉन्च के माध्यम से, हम अपने ग्राहकों को अदाणी समूह के कंज्यूमर ईको सिस्टम में पुरस्कार और लाभ प्रदान करने और बैंक के क्रेडिट कार्ड पोर्टफोलियो को मजबूत करने का इरादा रखते हैं।'' लॉन्च के अवसर पर अदाणी समूह और आईसीआईसीआई बैंक को बधाई देते हुए, वीजा इंडिया और साउथ एशिया के ग्रुप कंट्री मैनेजर श्री संदीप घोष ने कहा, ''इन रोमांचक को-ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड को लॉन्च करने के लिए अदाणी समूह और आईसीआईसीआई बैंक के साथ साझेदारी करके हमें प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। ये कार्ड वीज़ा के विश्वसनीय नेटवर्क और दुनिया भर में स्वीकृति का लाभ उठाते हैं। साथ ही ये कार्ड दुनिया भर के कार्डधारकों को ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से एक बेहतरीन यात्रा और खरीदारी का अनुभव प्रदान करते हैं, जिससे उन्हें अधिक सुविधाएं मिलती हैं और उनका यात्रा का अनुभव बेहतर होता है। हम भविष्य में इस तरह के अनेक नए ऑफर्स लाने के लिए तत्पर हैं।''

अदाणी वन आईसीआईसीआई बैंक क्रेडिट कार्ड के साथ खरीदारी की ऐसी शक्ति का अनुभव करें, जिसे आपने पहले कभी अनुभव नहीं किया होगा। वित्तीय सशक्तिकरण की इस रोमांचक यात्रा पर हमारे साथ जुड़ें

संक्षिप्त समाचार

विश्व कप में फॉर्म को लेकर चिंताओं को दूर कर सकते हैं रोहित शर्मा: पूर्व ऑस्ट्रेलियाई कप्तान

ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान शेन वॉटसन का मानना ?है कि भारत के कप्तान रोहित विश्व कप में अच्छा प्रदर्शन करके अपनी फॉर्म को लेकर चिंताओं को दूर कर सकते हैं। उन्होंने उनकी तुलना 2021 के प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट डेविड वार्नर से की। वॉटसन ने कहा, डेविड वार्नर को टी20 विश्व कप में अच्छा प्रदर्शन करने में कुछ गेम लगे। टूर्नामेंट के आधे से भी कम समय में उन्होंने अपनी लय बदल ली। लोग बात करते हैं कि टी20 विश्व कप में शानदार फॉर्म के साथ उतरना कितना शानदार है, लेकिन महान खिलाड़ी सही समय पर आगे बढ़ने और चीजों को एक साथ लाने का तरीका ढूंढ़ लेते हैं। रोहित शर्मा जानते हैं कि जरूरत पड़ने पर उन्हें कैसे आगे बढ़ना है। वॉटसन ने कप जीतने के लिए अपने देशवासियों का समर्थन किया, लेकिन परिस्थितियों के आधार पर भारत द्वारा पेश किए जाने वाले खतरे से सावधान रहने को कहा। उन्होंने कहा, मैं ऑस्ट्रेलिया से कभी आगे नहीं निकल सकता, वे जरूरत पड़ने पर चीजों को बदल सकते हैं। वाटसन ने कहा, भारत ने जिस तरह से अपनी टीम चुनी है, अगर चीजें अच्छी होती हैं और उनके स्पिनरों का प्रदर्शन वैसा ही रहता है जैसा कि वे परिस्थितियों में दिखाना चाहते हैं, तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे बड़ी पारी खेल सकते हैं। भारत टूर्नामेंट का अपना पहला मैच 5 जून को न्यूयॉर्क के नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में आयरलैंड के खिलाफ खेलेगा।

गेंदबाजी कोच के रूप ब्रावो को शामिल करना शानदार कदम: ट्रॉट

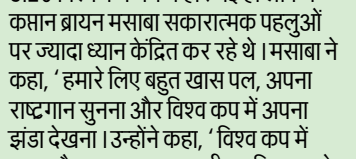

काबुल, एजेंसी। अफगानिस्तान के मुख्य कोच जोनाथन ट्रॉट ने मंगलवार को कहा कि मौजूदा टी20 विश्व कप के लिए ड्वेन ब्रावो को गेंदबाजी कोच के रूप में टीम के साथ जोड़ना काफी अच्छा रहा क्योंकि वेस्टइंडीज के इस पूर्व क्रिकेटर ने उनका काम आसान कर दिया। बाएं हाथ के तेज गेंदबाज फजलहक फारूकी के नौ रन पर पांच विकेट के अलावा रहमानुल्लाह गुरबाज (76) और इब्राहिम जादरान (70) के अर्धशतक और दोनों के बीच पहले विकेट की ठोस सोझदारी से अफगानिस्तान ने युगांडा को यहां 125 रन से हराया। अफगानिस्तान की जीत के बाद मीडिया से बात करते हुए ट्रॉट ने ब्रावो को श्रेय दिया जो उनके अनुसार टीम के गेंदबाजों के रवैये में बदलाव लाए। ट्रॉट ने मैच के बाद कहा, 'डीजे (ड्वेन ब्रावो) का टीम से जुड़ना शानदार रहा। खिलाड़ी के रूप में काफी अनुभव रखने वाले बेहतरीन कोच का होना (बहुत बढ़िया है) जबकि इस प्रारूप में उसे फ्रेंचाइजी क्रिकेट का भी काफी अनुभव है। उन्होंने कहा, 'उनके जैसे खिलाड़ी के कोच के रूप में टीम से जुड़ने से आपका काम बहुत आसान हो जाता है और इससे इससे कोचिंग भी बेहतर होती है, विशेषकर गेंदबाजों के साथ। युगांडा की टीम 16 ओवर में 58 रन पर आउट हो गई। टीम भले ही अपने पहले टी20 विश्व कप मैच में हार गई हो लेकिन कप्तान ब्रायन मसाबा सकारात्मक पहलुओं पर ज्यादा ध्यान केंद्रित कर रहे थे। मसाबा ने कहा, 'हमारे लिए बहुत खास पल, अपना राष्ट्रगान सुनना और विश्व कप में अपना झंडा देखना। उन्होंने कहा, 'विश्व कप में पहला मैच, बहुत घबराहट थी इसलिए इससे बाहर निकलकर अच्छा लगा। यह कुछ ऐसा है जिसे मैं जीवन भर संजोकर रखूंगा। हम अगले मैच में बेहतर प्रदर्शन करने की कोशिश करेंगे।

बजरंग पूनिया को मिली बड़ी राहत

● नाडा द्वारा लगाए गए बैन को ष्ठष्ठक्कने हटाया, सामने आई बड़ी वजह

नईदिल्ली, एजेंसी। टोक्यो ओलंपिक के ब्रॉन्ज मेडल विजेता बजरंग पूनिया पर नेशनल एंट्री डोपिंग एजेंसी ने पिछले बड़ा एक्शन लिया था। नेशनल एंट्री डोपिंग एजेंसी ने बजरंग पूनिया को अस्थाई तौर पर सस्पेंड कर दिया था। पूनिया ने मार्च में सोनीपत में आयोजित नेशनल ट्रायल्स के दौरान डोप सैम्पल नहीं दिया था, जिसके चलते ह्वष्ठ ने ये एक्शन लिया। लेकिन राष्ट्रीय डोपिंग निरोधक एजेंसी की अनुशासन पैनल (एडीडीपी) ने पहलवान बजरंग पूनिया को नाडा द्वारा आरोप का नोटिस नहीं दिए जाने तक उन पर लगा अस्थाई निलंबन हटा दिया है।

अफगानिस्तान की टी20 विश्व कप में चौथी बड़ी जीत

युगांडा को 125 रनों से हराया

गुयाना , एजेंसी। अफगानिस्तान ने पहले बल्लेबाजी करते हुए रहमानुल्लाह गुरबाज के 76 रन और इब्राहिम जादरान के 70 रनों की पारी के दम पर 20 ओवर में पांच विकेट पर 183 रन बनाए। जवाब में युगांडा की पूरी टीम 16 ओवर में 58 रन पर ढेर हो गई। फजलहक फारूकी के पांच विकेटों की मदद से अफगानिस्तान ने युगांडा को 125 रनों से हराकर टी20 विश्व कप में बड़ी जीत दर्ज की। यह पुरुष टी20 विश्व कप में किसी टीम की चौथी सबसे बड़ी जीत है। अफगानिस्तान ने पहले बल्लेबाजी करते हुए रहमानुल्लाह गुरबाज के 76 रन और इब्राहिम जादरान के 70 रनों की पारी के दम पर 20 ओवर में पांच विकेट पर 183 रन बनाए। जवाब में युगांडा की पूरी टीम 16 ओवर में 58 रन पर ढेर हो गई। रियाजत अली शाह और रॉबिंसन ओबुया के अलावा युगांडा का अन्य कोई बल्लेबाज दहाई अंक तक नहीं पहुंच सका। युगांडा के लिए रॉबिंसन ने सर्वाधिक 14 रन बनाए। फारूकी के अलावा नवीन उल हक और कप्तान राशिद खान ने दो-दो विकेट झटके।

पुरुष टी20 विश्व कप का न्यूनतम स्कोर

39 नीदरलैंड बनाम श्रीलंका 2014
44 नीदरलैंड बनाम श्रीलंका 2021
55 वेस्टइंडीज बनाम इंग्लैंड 2021
58 युगांडा बनाम अफगानिस्तान 2024
60 न्यूजीलैंड बनाम श्रीलंका 2014

फारूकी का शानदार प्रदर्शन

अफगानिस्तान के लिए फजल हक फारूकी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए पांच विकेट झटके। इसी के साथ फजलहक अफगानिस्तान के लिए टी20 में किसी मैच में पांच विकेट लेने वाले पांचवें गेंदबाज बन गए। उनसे पहले राशिद खान, करीम जनत, समिउल्लाह शिनवारी और मुजीब उर रहमान ऐसा कर चुके है। फारूकी का यह प्रदर्शन अफगानिस्तान के लिए टी20 में किसी गेंदबाज का दूसरा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। फारूकी ने अपनी स्पैल में सिर्फ नौ रन दिए।

टी20 में अफगानिस्तान के पांच विकेट लेने वाले गेंदबाज

5/3 राशिद खान आयरलैंड 2017
5/9 फजलहक फारूकी युगांडा 2024
5/11 करीम जनत वेस्टइंडीज 2019

गुरबाज-जादरान ने दिलाई मजबूत शुरुआत

इससे पहले, युगांडा ने टॉस जीतकर अफगानिस्तान को पहले बल्लेबाजी का न्योता दिया। अफगानिस्तान के लिए जादरान और गुरबाज की जोड़ी ने शानदार प्रदर्शन किया। इन दोनों बल्लेबाजों ने पहले विकेट के लिए 154 रनों की साझेदारी कर अफगानिस्तान को मजबूत शुरुआत दिलाई। इन दोनों बल्लेबाजों के दमदार प्रदर्शन के दम पर ही अफगानिस्तान बड़ा स्कोर खड़ा करने में सफल रहा। जादरान और गुरबाज ने तूफानी बल्लेबाजी की और दोनों ने अर्धशतक जड़े।

युगांडा ने टी20 विश्व कप का चौथा न्यूनतम स्कोर बनाया

युगांडा का विश्व कप में यह पहला ही मैच था और टीम प्रभावित करने में पूरी तरह नाकाम रही। युगांडा ने पुरुष टी20 विश्व कप का चौथा न्यूनतम स्कोर बनाया। नीदरलैंड के नाम इस वैश्विक टूर्नामेंट में सबसे कम स्कोर बनाने का रिकॉर्ड दर्ज है। लक्ष्य का पीछा करने उतरी युगांडा की शुरुआत बेहद खराब रही और टीम ने पहले ही ओवर में दो विकेट गंवा दिए। युगांडा की टीम अंत तक इन झटकों से उबर नहीं सकी और उसे हार का सामना करना पड़ा।

टूर्नामेंट के लिए भारतीय टीम में चयन पर सैमसन ने तोड़ी चुप्पी, बताया कैसी है तैयारी, जानें

न्यूयॉर्क, एजेंसी। सैमसन ने आईपीएल 2024 में शानदार प्रदर्शन किया था और पांच अर्धशतक समेत 531 रन बनाए। उन्हें इस प्रदर्शन के दम पर ही अमेरिका और वेस्टइंडीज में होने वाले टी20 विश्व कप में भारत की 15 सदस्यीय टीम में जगह मिली थी। भारतीय टीम टी20 विश्व कप में अपने अभियान की शुरुआत करने के लिए तैयार है। भारत का सामना ग्रुप-ए के मुकाबले में बुधवार को आयरलैंड से होगा। इस मैच से पहले भारत ने बांग्लादेश के खिलाफ एकमात्र अभ्यास मैच खेला था। इस मैच में कप्तान रोहित शर्मा के साथ संजू सैमसन पारी का आगाज करने उतरे थे। टूर्नामेंट में भारत के अभियान शुरू करने से पहले सैमसन ने टीम में चयन को लेकर बड़ा बयान दिया है। सैमसन का कहना है कि आईपीएल 2024 सीजन में राजस्थान रॉयल्स की कप्तानी करते हुए भी उन्हें टी20 विश्व कप चयन का ख्याल था।

सैमसन ने आईपीएल में किया था शानदार प्रदर्शन - सैमसन ने आईपीएल 2024 में शानदार प्रदर्शन किया था और पांच अर्धशतक समेत 531 रन बनाए। उन्हें इस प्रदर्शन के दम पर ही अमेरिका और वेस्टइंडीज में होने वाले टी20 विश्व कप में भारत की 15 सदस्यीय टीम में जगह मिली थी। सैमसन ने अब तक सिर्फ 16 वनडे और 25 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले हैं।

पूरी तैयारी के साथ आया हूं - आयरलैंड के खिलाफ मैच से पहले सैमसन ने कहा कि वह टूर्नामेंट के लिए पूरी तैयारी से आए हैं। सैमसन ने बीसीसीआई द्वारा डाले गए वीडियो में कहा, विश्व कप में वास्तव में संजू सैमसन पूरी तैयारी के साथ आया है। 10 साल तक लगातार विफलताओं के बाद कुछ सफलताएं मिल रही है। क्रिकेट में जिंदगी ने मुझे सब कुछ सिखाया है जो इस टूर्नामेंट में आने से पहले मेरा सीखना जरूरी था। आईपीएल ने मेरे दिमाग को पूरी तरह से घेर रखा था। इतना कुछ करना था और कप्तान होने के नाते इतना सोचना पड़ता था। मेरा दिमाग हमेशा घिरा रहता था लेकिन कहीं न कहीं विश्व कप का ख्याल दिमाग में था। विश्व कप टीम में चयन होना बहुत बड़ी बात है। यह मेरे करियर की सबसे अच्छी चीज हुई है। मैने कैरियर में हमेशा विफलताओं से भी सीखने की कोशिश की है।

टी -20 वर्ल्डकप

भारत को हराना पाक के लिए विश्व कप जीतने से ज्यादा बड़ा

रिजवान ने रमीज राजा के इस बयान का खुलासा किया

यूयॉर्क, एजेंसी। टी20 विश्व कप का आगाज हो चुका है। हालांकि, सबसे ज्यादा चर्चा नौ जून को न्यूयॉर्क में होने वाले मैच की हो रही हैं। उस दिन भारत का सामना कट्टर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान से होगा। टी20 विश्व कप में दोनों टीमें अब तक सात बार आमने-सामने आ चुकी हैं। इनमें से भारत ने छह मैच जीते, जबकि 2021 में पाकिस्तान ने 10 विकेट से जीत हासिल की थी। शाहीन अफरीदी की घातक गेंदबाजी के आगे केएल राहुल, रोहित शर्मा और विराट कोहली की एक नहीं चली थी। हालांकि, 2022 में भारत ने मेलबर्न में इसका बदला ले लिया था। 2021 में पाकिस्तान की जीत के हीरो रहे मोहम्मद रिजवान ने अब भारत के खिलाफ मैच को लेकर बयान दिया है। पाकिस्तानी फैंस में यह बात बहुत वायरल है कि वह टी20 विश्व कप हार जाएं, लेकिन भारत के खिलाफ उन्हें हार बर्दाश्त नहीं है। अब रिजवान ने इस पर बयान दिया है।

रिजवान ने भारत के खिलाफ मैच से पहले रमीज राजा को याद किया है। उन्होंने पाकिस्तानी खिलाड़ियों को पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष का वह संदेश याद दिलाया, जिसकी बदौलत उन्होंने 2021 में जीत हासिल की थी। रिजवान ने खुलासा किया कि रमीज ने खिलाड़ियों से भारत के खिलाफ मैच जीतने के लिए कहा था, चाहे कुछ भी हो जाए। उन्होंने कहा, हमने 2021 से पहले (विश्व कप में) कभी भारत को नहीं हराया था। रमीज राजा हमसे मिले और कहा, तुम्हें भारत को हराना है। जब उन्होंने यह बात कही थी, तब विश्व कप काफी दूर था। जब वह पहली बार पीसीबी अध्यक्ष बने थे, तभी से उन्होंने टीम में इस सोच को विकसित करना शुरू कर दिया था। जैसे-जैसे हम विश्व कप के करीब आते गए, उन्होंने कहा- भले ही आप ट्रॉफी जीतें या नहीं, बस भारत से मत हारना।

रिजवान ने यह भी खुलासा किया कि चूंकि वह पहली बार विश्व कप में भारत का सामना कर रहे थे, इसलिए उन्हें वास्तव में जीत हासिल करने तक उस परिणाम के महत्व का एहसास नहीं था। उन्होंने कहा, भारत और पाकिस्तान के बीच मैच हमेशा दबाव वाला होता है। लोग एक टूर्नामेंट में सभी मैच नहीं देख सकते हैं, लेकिन भारत-पाकिस्तान का मैच ऐसा है जिसे हर कोई देखता है। चाहे वे किसी भी देश के हों। उस समय हमारे साथ मैथ्यू हेडन थे। उन्होंने मेरे और कप्तान को गले लगा लिया और पूछा कि हम कैसा महसूस कर रहे हैं। कप्तान ने कहा कि हमने कड़ी मेहनत की थी और फिर सबकुछ ऊपर वाले के हाथ में छोड़ दिया था। उन्होंने कहा, मेरे लिए यह पहली बार था, चाहे वह विश्व कप में खेलना हो या इतने बड़े मैच में। इसलिए मैं काफी सामान्य महसूस कर रहा था। मुझे नहीं लगा था कि यह किसी अन्य मैच से अलग था। लेकिन जब हम जीते, तब मुझे एहसास हुआ कि हमने क्या हासिल किया है। पाकिस्तान में मान लीजिए कि मैं कहीं शॉपिंग के लिए जाता हूं, लोग पैसे नहीं लेते हैं। फिर मैंने खरीदारी के लिए बाहर जाना बंद कर दिया क्योंकि वे हमसे पैसे नहीं ले रहे थे। वे सभी भारत को हराने के लिए हमारी सराहना कर रहे थे। मैं जिस किसी से भी मिला, वह जीत के लिए हमारी सराहना कर रहा था। एक बार जब मैं किसी के कमरे में गया तो वह टीवी पर उसी मैच को लगाकर देख रहे थे और कहा कि वे इसे रोज देखते हैं।

राशिद खान की अन्य टीमों को चेतावनी, कहा- पिछले विश्व कप ने हमें बहुत आत्मविश्वास दिया

काबुल, एजेंसी। अफगानिस्तान के कप्तान राशिद खान ने मंगलवार 4 जून को गुयाना में टी20 विश्व कप 2024 के ग्रुप सी के अपने पहले मैच में युगांडा पर अपनी शानदार जीत पर खुशी जताई। राशिद ने बाकी टीमों को चेतावनी देते हुए कहा कि अफगानिस्तान ने पिछले साल भारत में वनडे विश्व कप की सफलता से काफी आत्मविश्वास हासिल किया है। अफगानिस्तान ने मंगलवार को अपने इरादे जाहिर करते हुए डेब्यू करने वाले युगांडा को 125 रनों से हराया। युगांडा की टीम सिर्फ 68 रनों पर ढेर हो गई जो पुरुषों के टी20 विश्व कप के इतिहास का चौथा सबसे कम स्कोर है। अफगानिस्तान ने रहमानुल्लाह गुरबाज और इब्राहिम जादरान की 154 रनों की ओपनिंग साझेदारी की बदौलत शानदार प्रदर्शन किया लेकिन फजलहक फारूकी ने 4 ओवर में सिर्फ 9 रन देकर पांच विकेट लेकर युगांडा की बल्लेबाजी को तहस-नहस कर दिया।

राशिद खान ने कहा, पिछले विश्व कप ने हमें बहुत आत्मविश्वास दिया। इससे हमें यह विश्वास मिला कि हम किसी भी समय किसी भी टीम को हराने में सक्षम हैं। यह केवल कौशल और प्रतिभा के बारे में नहीं है, यह विश्वास के बारे में भी है, और हम जो कर रहे हैं उस पर ध्यान केंद्रित करें ना कि विरोधी क्या कर रहे हैं।

2010 में अपने पुरुष टी20 विश्व कप की शुरुआत करने वाले अफगानिस्तान ने तब से एक लंबा सफर तय किया है। पिछले तीन संस्करणों में टी20 विश्व कप के अगले दौर में पहुंचने के बाद अफगानिस्तान को डार्क हॉर्स के रूप में लेबल किया गया है और राशिद की टीम ने अपने शुरुआती मैच में इसे सही साबित किया।

अफगानिस्तान ने टॉस गंवा दिया लेकिन उन्होंने मंगलवार को युगांडा के खिलाफ एक भी कदम गलत नहीं किया। हां, अफगानिस्तान ने आखिरी 5.3 ओवरों में सिर्फ 29 रन बनाए लेकिन गुरबाज और इब्राहिम ने सुनिश्चित किया कि उनकी टीम बोर्ड पर एक चुनौतीपूर्ण स्कोर बनाए। फजलहक फारूकी ने शीर्ष क्रम को ध्वस्त कर दिया, जबकि नवीन-उल-हक और राशिद खान ने भी दो-दो विकेट लिए।

उन्होंने कहा, हम एक टीम के तौर पर ऐसी ही शुरुआत चाहते थे। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम किसके साथ खेल रहे हैं, यह मानसिकता पर निर्भर करता है। पिछले कुछ हफ्तों में हमने जो कड़ी मेहनत की है, जिस तरह से सलामी बल्लेबाजों ने शुरुआत की और जिस तरह से हमारे गेंदबाजों ने गेंदबाजी की - यह कुल मिलाकर एक बेहतरीन टीम प्रयास था। अफगानिस्तान की टीम अब 7 जून को न्यूजीलैंड के खिलाफ एक अहम मुकाबले में उतरेगी और राशिद खान ने कहा कि उन्हें सकारात्मक परिणाम की उम्मीद है। राशिद ने कहा, हमारे लिए यह बड़ा मैच है। यह चीजों को सरल रखने के बारे में है।

संक्षिप्त समाचार

अजमेर में 11वीं की छात्रा से गैंगरेप, ब्लैकमेल कर 5 लाख रुपए ऐंठे

अजमेर। राजस्थान के अजमेर जिले में 11वीं की छात्रा से गैंगरेप और ब्लैकमेल कर 5 लाख रुपए ऐंठने के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। एक नाबालिग को डिटेन किया है। मामला अजमेर के किशिचयनगंज थाना क्षेत्र का है। आरोपियों से पुलिस पूछताछ में कई चौंकाने वाले तथ्य सामने आए हैं।पीड़िता के परिजनों ने इस संबंध में 6 आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कराया है। उनमें से दो आरोपियों को पकड़ लिया गया है. वहीं एक नाबालिग को निरुद्ध किया गया है।

अजमेर एसपी देवेंद्र बिश्नोई ने बताया कि क्रिश्चनगंज थाना इलाके की रहने वाली 11वीं क्लास की छात्रा के परिजनों ने इस संबंध में रिपोर्ट दर्ज करवाई है। उनकी ओर से दी गई रिपोर्ट के मुताबिक इरफान नाम के युवक ने उनकी बेटी को सोशल मीडिया के जरिए प्रेम जाल में फंसाया। फिर उसकी आईडी से अलग-अलग दोस्तों को कुछ फोटो और वीडियो अपलोड कर दिए। उसके बाद उनके स्क्रीनशॉट लेकर उसके साथ अवैध संबंध बनाए। आरोपी उसके बाद भी उसे ब्लैकमेल करता रहा. फिर पांच लाख रुपये की डिमांड की। इस मामले में अन्य बदमाश भी शामिल हैं. क्रिश्चनगंज थाना पुलिस ने पीड़ित परिवार की रिपोर्ट पर आरोपियों के खिलाफ आईपीसी की संगीन धाराओं में केस दर्ज कर लिया है। आरोपियों की गिरफ्तारी को लेकर टीम का गठन किया गया. केस की पड़ताल के बाद मुख्य आरोपी इरफान और उसके सहयोगी अरबाज को गिरफ्तार कर लिया गया है।

अजमेर रेलवे स्टेशन के सामने फटा सिलेंडर, अफरातफरी

अजमेर। राजस्थान के अजमेर में रेलवे स्टेशन के सामने एक ढाबे की रसोई में शॉर्ट सर्किट से आग गई। इसके कुछ ही मिनटों बाद आग एलपीजी सिलेंडर तक पहुंची। देखते ही देखते सिलेंडर में ब्लास्ट हो गया। आसपास के 2 और ढाबे भी आग की चपेट में आ गए। हादसा सुबह साढ़े 10 बजे हुआ। हालांकि, भीषण आग और गैस सिलेंडर के फटने के बावजूद कोई जनहानि नहीं हुई। बता दें कि शहर का सबसे व्यस्ततम मार्ग पर यह रेस्टोरेंट स्थित है। हादसे की सूचना मिलने के बाद समीप ही क्लॉक टावर थाना पुलिस मौके पर पहुंची। वहीं सूचना के बाद पहुंची फायर ब्रिगेड कर्मियों ने काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। आग की वजह से आसपास की तीन दुकानों और बाहर खड़ी बुलेट बाइक भी आग की भेंट चढ़ गई. आगजनी की इस घटना में दुकानों को लाखों का नुकसान हुआ है। हादसे से 50 मीटर की दूरी पर स्थित एक गारमेंट्स की दुकान के मालिक अनूप शर्मा ने बताया कि आग लगने से आस पास के क्षेत्र में अफरा तफरी मच गई. दुकानों के बाहर खड़े वाहनों को तुरंत हटा लिया गया। दुकानों पर मौजूद लोग भी तुरंत बाहर आ गए और दूर खड़े हो गए। इस आपाधापी में एक बुलेट बाइक को नही हटाया जा सका। आग इतनी तेजी से फैल रही थी कुछ ही देर में उसने विकराल रूप ले लिया। उन्होंने बताया कि आग सिलेंडर के भभकने से लगना सम्भव है।

भिलाई में फिर करोड़ों की ठगी

भिलाई, एजेंसी। छत्तीसगढ़ में ऑनलाइन ठगी के मामले में लगातार शिकायतें सामने आ रहे हैं। पहले राजधानी रायपुर और अब भिलाई में एक बार फिर रिटायर्ड बैंक कर्मी को ठगों ने शिकार बनाया है। भिलाई नगर में इससे पहले रिटायर्ड बीएसएफ ऑफिसर से करोड़ों की ठगी हुई थी। इसके बाद अब बैंक ऑफ़ बड़ौदा के रिटायर बैंक कर्मी से 1 करोड़ 58 लाख रुपए की ठगी की गई है। बताया जा रहा है कि बैंक कर्मी को झांसे में लेकर शेयर ट्रेडिंग के लिए अपोलो ग्लोबल मैनेजमेंट ट्रेडिंग एप डाउनलोड कराकर इस ठगी की वारदात को अंजाम दिया गया है। इस घटना के बाद भिलाई नगर पुलिस ने मामले में धारा 420 के तहत अपराध दर्ज कर विवेचना कर रही है। इस ठगी की घटना को लेकर भिलाई नगर पुलिस ने जानकारी देते हुए बताया कि हुडको सेक्टर निवासी सुरेंद्र चिदंबरम जो की बैंक ऑफ़ बड़ौदा में काम किया करते थे। 2 महीने पहले 25 मार्च को व्हाट्सएप में आए एक अनजान नंबर के मैसेज से उन्हें पहले ग्रुप में जोड़ा गया, उसके बाद उन्हें ऐप के माध्यम से ऑनलाइन ट्रेडिंग स्कूल जॉइन करने के लिए कहा गया। जहां जॉन पीटर नाम के व्यक्ति ने शेयर मार्केट के बारे में उन्हें जानकारी दी और उन्हें खुद को सेबी से रजिस्टर्ड बताया।

गंगोत्री-केदारनाथ चारधाम रूट खराब मौसम से होगी टेंशन!

देहरादून , एजेंसी। गंगोत्री-केदारनाथ समेत चारों धामों पर जाने वाले भक्तों के लिए जरूरी खबर है। मौसम को लेकर बारिश पर अपडेट सामने आया है। ऐसे में चारधाम यात्रा रूट पर खराब मौसम की वजह से तीर्थ यात्रियों को टेंशन हो सकती है। मौसम पूर्वानुमान में पांच जिलों में बारिश का पूर्वानुमान लगाया है। मौसम विभाग की ओर से अलर्ट भी जारी किया गया है। मौसम पूर्वानुमान में अलर्ट जारी होने के बाद तीर्थ यात्रियों से अपील है कि चारधाम यात्रा पर जाने से पहले मौसम से जुड़ी सभी जानकारी जुटा कर ही यात्रा पर जाएं।

आपको बता दें कि उत्तराखंड के पर्वतीय जिलों में भूस्खलन या सड़क पर बड़े-बड़े बोल्डर गिरने की वजह से यातायात ठप हो जाता है। सड़क बंद होने की स्थिति पर दोनों ओर गाड़ियों की भारी लंबी-लंबी लाइनें लग जाती हैं। हालांकि, प्रशासन की ओर से चारधाम यात्रा रूट पर जेसीबी को तैनात किया गया है। इसके अलावा, बीआरओ, पीडब्ल्यूडी, एसडीआरएफ सहित पुलिस

फोर्स भी चौबीसो घंटे अलर्ट मोड पर है।

विदित हो कि 10 मई से शुरू चारधाम यात्रा में भक्तों की भारी भीड़ देखने को मिल रही है। राजस्थान, एमपी, यूपी समेत अन्य राज्यों से श्रद्धालु भारी संख्या में दर्शन करने को पहुंच रहे हैं।

चारों धामों में से सबसे ज्यादा केदारनाथ धाम में भक्तों ने दर्शन किए हैं। चारधाम यात्रा रूट पर तीर्थ यात्रियों की भारी भीड़ की वजह से जाम भी लग रहा है। हालांकि, प्रशासन की ओर से अतिरिक्त पुलिस फोर्स को तैनात कर ट्रैफिक को सुचारू किया जा रहा है।

मौसम निदेशक डॉ. बिक्रम सिंह ने बताया कि सोमवार को राज्य के उत्तरकाशी, चमोली, रुद्रप्रयाग, बागेश्वर एवं पिथौरागढ़ जिलों में कहीं कहीं हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है। वहीं इन जिलों में 40 किमी प्रतिघंटा रफ्तार से झोंकेदार हवाएं चलने का येलो अलर्ट भी दिया गया है।

अन्य जिलों में मौसम शुष्क रहेगा। अब तापमान बढ़ने की संभावना नहीं है। अधिकतम तापमान 39 डिग्री सेल्सियस तक रह सकता है। इस बीच, मौसम विभाग ने तीन जून को राज्य के पर्वतीय क्षेत्रों जबकि चार जून से पूरे प्रदेश में बारिश की संभावना जताई है।

अग्निशमन के लिए एनडीआरएफ की एक समर्पित बटालियन गठित करेगी सरकार - सुक्खू

शिमला । हिमाचल प्रदेश में चुनावों के बाद जंगलों में लग रही आग को समय पर नियंत्रित करने को लेकर सरकार ने कवायद शुरू कर दी है। भविष्य में वनों में आग लगने की घटनाओं को नियंत्रित करने और इससे होने वाले नुक्सान को कम करने के लिए राज्य सरकार अग्निशमन के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित एनडीआरएफ की एक समर्पित बटालियन गठित की जाएगी। बटालियन गठित करने को लेकर सरकार विचार कर रही है। यह बात मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने सोमवार को शिमला में वनों को आग से बचाने के उपायों की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए कही। उन्होंने वन विभाग को आग की घटनाओं के कारणों की जांच करने और आवश्यक कार्यवाही की सिफारिश करने के लिए सरकारी एजैंसी से अध्ययन करवाने के निर्देश भी दिए। बैठक में उद्योग मंत्री हर्षवर्धन चौहान, मुख्य सचिव प्रबोध सक्सेना और विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

वनों में आग की 1412 घटनाएं दर्ज : सुक्खू ने कहा कि 374 वन बीट आग लगने की घटनाओं के लिए अत्यधिक संवेदनशील है तथा इन क्षेत्रों में अग्निशमन सेवाओं का सुदृढ़ीकरण किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस वर्ष अब तक वनों में 1412 आग की घटनाएं दर्ज की गई हैं। इन घटनाओं से 2789 हैक्टेयर हरित क्षेत्र सहित 12718 हैक्टेयर भूमि प्रभावित हुई है, जिससे 4.61 करोड़ रुपए का प्रारंभिक वित्तीय नुक्सान आंका गया है। उधर सोमवार को शिमला-कालका रेल मार्ग पर सभी ट्रेनों की आवाजाही सामान्य रही। रेलवे ट्रैक के आसपास गत दो दिनों से जंगल की आग के कारण ट्रेनों की आवाजाही बाधित हो रही थी।

मामूली बात पर बहस, बेटे ने बुजुर्ग पिता को दरांती से काट डाला, दिल्ली पुलिस ने दबोचा

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली पुलिस ने सोमवार को उस शख्स को अपने 85 वर्षीय पिता की हत्या के आरोप में गिरफ्तार किया गया। 35 वर्षीय आरोपी का नाम वेद प्रकाश बताया जाता है। पुलिस ने बताया कि सुबह 7:29 बजे जीटीबी अस्पताल से नंद नगरी थाने में एक कॉल आई, जिसके अनुसार मृतक के बड़े बेटे किशन पाल ने अपने पिता ओम प्रकाश को अस्पताल में भर्ती कराया। लेकिन अस्पताल प्रशासन ने उसे मृत घोषित कर दिया।

मामूली विवाद में धारदार हथियार से ताबड़तोड़ वार: मृतक नंदनगरी इलाके में अपने दो बेटों 40 वर्षीय किशनपाल और 35 वर्षीय वेदप्रकाश के साथ रह रहा था। पुलिस ने छानबीन में पाया कि आरोपी वेदप्रकाश ने सोमवार को मामूली विवाद में अपने पिता पर धारदार हथियार से ताबड़तोड़ वार कर उन्हें मौत के घाट उतार दिया। पुलिस ने आरोपी वेदप्रकाश को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी अक्सर अपने पिता से झगड़ा करता था।

मामूली बात को लेकर दोनों के बीच बहस: सोमवार को भी किसी मामूली बात को लेकर दोनों के बीच बहस शुरू हुई और फिर आरोपी ने वारदात को अंजाम दे डाला। मृतक की पहचान 85 वर्षीय ओमप्रकाश के रूप में हुई है। उत्तर पूर्वी जिला पुलिस उपायुक्त जॉय टिर्की ने बताया कि सोमवार को सुबह 07.29 बजे जीटीबी अस्पताल से पुलिस को मामले की पीसीआर कॉल मिली।

बड़ा बेटा लेकर पहुंचा अस्पताल: पता चला कि ओमप्रकाश को उनका बड़ा बेटा किशनपाल अस्पताल लेकर पहुंचा, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। आरोपी वेद प्रकाश ने रसोई में सब्जी काटने के लिए रखे दरांती से अपने पिता पर वार किया। बताया जाता है कि आरोपी अविवाहित है और वह और उसके पिता छोटी-छोटी घरेलू समस्याओं को लेकर झगड़ते रहते थे।

48 डिग्री तापमान के बीच काल कोठरी में बिन कूलर के हैं केजरीवाल, आतिशी का आरोप

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने रविवार को तिहाड़ जेल में सरेंडर कर दिया है। सीएम केजरीवाल के जेल जाने के बाद अब दिल्ली सरकार की मंत्री आतिशी ने एक और बड़ा आरोप बीजेपी पर लगा दिया है। आतिशी ने दावा किया है कि जेल में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को कूलर नहीं दिया गया है। आतिशी ने कहा, बीजेपी ने अरविंद केजरीवाल को एक फर्जी केस में गिरफ्तार किया है। रविवार को अरविंद केजरीवाल ने सरेंडर कर दिया और वो जेल चले गए। लेकिन बीजेपी शासित केंद्र सरकार को फिर भी शांति नहीं मिली। अरविंद केजरीवाल को एक ऐसे सेल में रखा गया है जहां एक कूलर तक नहीं है। इस वक्त जब दिल्ली

का तापमान 48 डिग्री और 50 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है तो तिहाड़ में खतरनाक क्रिमिनलों को भी कूलर दिए जा रहे हैं लेकिन दिल्ली के चर्चित सीएम अरविंद केजरीवाल को इतनी गर्मी में एक कूलर तक नहीं दे रहे हैं। मैं बीजेपी से और दिल्ली के एलजी साहब से यह पूछना चाहती हूं कि वो कितना नीचे गिरेंगे?

आतिशी ने कहा कि उन्हें (अरविंद केजरीवाल) 48 डिग्री तापमान में एक छोटी सी काल कोठरी में रखा गया है जहां कूलर तक नहीं है जो क़ैदियों को भी उपलब्ध है। मोदी-क्रूरक और रूल साहब की क्रूरता की कोई सीमा नहीं है। आतिशी ने आगे कहा कि प्रधानमंत्री जी, अगर आप अरविंद केजरीवाल जी को इतना प्रताड़ित करोगे तो देश और दिल्ली की जनता आपको कभी माफ़ नहीं करेगी।

तीन बार केजरीवाल का वजन लिया गया - आतिशी: आतिशी ने कहा कि रविवार को जब अरविंद केजरीवाल जेल गए तब उनका चिकित्सीय परीक्षण किया गया था। जब उन्होंने पहले वेट मशीन से अपना वेट लिया तो उनका वजन 61 किलोग्राम आया।

स्विमिंग पूल में डूबकर बच्ची की मौत, गाजियाबाद जिले की ब्रेव हार्ट सोसाइटी में हादसा

नई दिल्ली, एजेंसी। गाजियाबाद जिले के राजनगर एक्सटेंशन की ब्रेव हार्ट सोसाइटी में सोमवार देर शाम स्विमिंग पूल में डूबकर प्रॉपर्टी डीलर की छह वर्षीय बेटी की मौत हो गई। घटना का पता लगते ही सोसाइटी में हड़कंप मच गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में ले लिया। पुलिस के मुताबिक, सीसीटीवी कैमरे में बच्ची अकेले जाती नजर आ रही है।

गहरे पानी में जाने के कारण डूबी बच्ची: पुलिस के मुताबिक ब्रेव हार्ट सोसाइटी में रहने वाले शाबान अली प्रॉपर्टी डीलर हैं। उनकी छह वर्षीय दो जुड़वा बेटियां हैं। सोमवार शाम करीब सात बजे उनकी एक बेटी खुशबू सोसाइटी के स्विमिंग पूल में नहाने चली गई। गहरे पानी में जाने के कारण उसकी डूबकर मौत हो गई।

पानी पर तैरती मिली लाश: कुछ देर बाद शव पानी के ऊपर तैरता देख लोगों को घटना का पता चला, जिसके बाद हड़कंप मच गया। स्थानीय लोगों ने परिजनों को सूचना दी तो वह आनन-फानन में घटनास्थल पर दौड़ पड़े। बच्ची को स्थानीय चिकित्सक के पास ले जाया गया, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। घटना की जानकारी लगने पर नंदग्राम पुलिस मौके पर पहुंची और जांच-पड़ताल की।

सीसीटीवी कैमरे में अकेले जाते दिखी बच्ची: एसीपी नंदग्राम रवि कुमार सिंह का कहना है कि घटना का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई थी। सीसीटीवी कैमरे चेक करने पर पता चला कि बच्ची अकेले ही स्विमिंग पूल पर पहुंची थी। वह नहाने के लिए स्विमिंग पूल में उतरी और पानी में डूबकर उसकी मौत हो गई। शव को कब्जे में लेकर आगामी कार्रवाई की जा रही है।

बिना अभिभावक बच्ची की एंट्री पर सवालिया निशान: सोसाइटी के नियमों के मुताबिक 10 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए उनके अभिभावकों का साथ होना जरूरी है। एंट्री होने के बाद ही बच्चों को स्विमिंग पूल में जाने की इजाजत दी जाती है, लेकिन सीसीटीवी कैमरे चेक करने पर पता चला कि छह साल की खुशबू अकेले ही स्विमिंग पूल पर पहुंच गई।

नेपाल में जमकर बरसेंगे बदरा, 18 लाख लोग होंगे प्रभावित

काठमांडू, एजेंसी। नेपाल में भीषण गर्मी पड़ रही है। लोगों का लू से बुरा हाल है। इस बीच भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने राहत भरी खबर दी है। यहां 13 जून को मानसून के पहुंचने की उम्मीद है, जो एक जुलाई तक चलेगा। यहां की सरकार ने चेतावनी दी है कि मौसम के दौरान बारिश से संबंधित घटनाओं से 18 लाख लोग प्रभावित हो सकते हैं।

18 लाख लोग प्रभावित: गृह मंत्रालय ने आगामी मानसून के मौसम से निपटने के लिए सोमवार को राष्ट्रीय जोखिम न्यूनीकरण और तैयारी कार्यक्रम 2024 शुरू किया। मंत्रालय ने अनुमान लगाया है कि हिमालयी राष्ट्र में मानसूनी बारिश से आई बाढ़ और भूस्खलन से 412,000 घरों के 18 लाख लोग प्रभावित होंगे।

10,000 से अधिक सैन्यकर्मी तैनात: राष्ट्रीय आपदा जोखिम न्यूनीकरण और प्रबंधन प्राधिकरण के प्रवक्ता दीजन भट्टाराई के अनुसार, इस साल प्राकृतिक आपदा के कारण लगभग 83,000 परिवार प्रभावित होंगे।

18,000 परिवारों को राहत सामग्री की आवश्यकता होगी। मंत्रालय ने आगामी आपदा से लड़ने के लिए 10,000 से अधिक सैन्यकर्मियों सहित 31,000 सुरक्षा कर्मियों को लगाने का फैसला किया है। नेपाल सेना बचाव और राहत कार्यों के लिए काठमांडू, पोखरा, इटाहरी, भरतपुर और सुरखेत में हेलीकॉप्टरों को भी तैनात करेगी।

63 लोग मारे गए थे: बता दें, पिछले साल देशभर में आपदा से संबंधित 679 घटनाओं में 63 लोग मारे गए थे। कम से कम 69 लोग घायल हो गए, और प्राकृतिक आपदा से संबंधित घटनाओं के कारण 30 लोग लापता हो गए। सरकार ने आपदा संभावित क्षेत्रों में लोगों को सतर्क रहने को कहा है।

मरी हुई 74 साल की महिला अंतिम संस्कार दौरान अचानक हो गई जिंदा, ताबूत पर जोर-जोर से वार कर दफनाने से रोका

इक्वाडोर (अमेरिका), एजेंसी। एक मरी हुई बुजुर्ग महिला के दफनाने दौरान जिंदा होने का चौंकाने वाला मामला सामने आया है। घटना अमेरिका के इक्वाडोर की है जहां मरी हुई कॉन्स्टेंस ग्लैंट्ज़ (74) ने अंतिम संस्कार गृह में काम करने वाले लोगों को चौंका दिया। उन्होंने पाया कि ग्लैंट्ज़ अभी भी सांस ले रही थी, जबकि वे उसके शव को दफनाने की तैयारी कर रहे थे। माना जाता है कि उसकी मृत्यु एक धर्मशाला में हुई थी और उसे नेब्रास्का के लिंकन में बुथेरस-मेसर एंड लव फ्यूनरल होम में स्थानांतरित कर दिया गया था।911 पर कॉल करने और सीपीआर करने के बाद, ग्लैंट्ज़ को एक स्थानीय अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया गया। सोमवार, 3 जून को, लैंकेस्टर काउंटी शेरिफ कार्यालय ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की, जिसमें अधिकारियों ने लिंकन, नेब्रास्का की कॉन्स्टेंस ग्लैंट्ज़ की पहचान उस व्यक्ति के रूप में की, जिसे लगभग जिंदा दफना दिया गया था। लैंकेस्टर काउंटी शेरिफ के मुख्य डिप्टी बेनहौचिन ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा यह एक बहुत ही असामान्य मामला है । उन्होंने बताया कि दक्षिण अमेरिका के लोकतांत्रिक गणराज्य ईक्वाडोर में मृत घोषित की गई बुजुर्ग महिला अचानक वापस जीवित हो गई, अपने अंतिम संस्कार के दौरान ताबूत पर जोर-जोर से वार करने लगी। स्थानीय समयानुसार सुबह 9:45 बजे, वेवरली में मलबेरी नर्सिंग होम के कर्मचारियों ने ग्लैंट्ज़ को मृत घोषित कर दिया था।

सनकी किंग ने फिर द. कोरिया भेजे मलमूत्र वाले सैंकड़ों गुब्बारे ! सियोल ने इमरजेंसी अलर्ट किया जारी

प्योंगयाग, एजेंसी। दक्षिण कोरिया ने कचरे से भरे गुब्बारे उड़ाने के मामले को लेकर उत्तर कोरिया को दंडित करने के लिए दोनों देशों के बीच हुए शांति समझौते को निलंबित करने की सोमवार को घोषणा की। हालांकि उत्तर कोरिया गुब्बारे उड़ाने की अपनी हरकत पर लगाम लगाने को कह चुका है। लोगों द्वारा दक्षिण कोरिया में हाल ही में पर्चे बांटे जाने के अभियान से नाराज उत्तर कोरिया ने बीते कई दिनों में पड़ोसी देश की ओर कचरे से भरे गुब्बारे उड़ाए थे।

दक्षिण कोरिया ने रविवार को कहा कि उत्तर कोरिया की इस हरकत के जवाब में वह कड़ा कदम उठाएगा। जानकारी के अनुसार उत्तर कोरिया ने एक बार फिर शनिवार रात कचरा लिए 600 से अधिक गुब्बारे दक्षिण कोरिया भेजे। गत बुधवार को भी प्योंगयांग ने उपहार का नाम देकर कचरा और मलमूत्र लिए सैकड़ों गुब्बारे सियोल की ओर भेजे थे। दक्षिण कोरिया ने आक्रोश जताते हुए घटना की निंदा की थी। इन गुब्बारों पर गंदगी से भरे बैग लटके हुए हैं।

उत्तर कोरिया हालांकि पहले ही सीमा पार गुब्बारे उड़ाए जाने को रोकने की घोषणा कर चुका है। सोमवार को, दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद ने कहा कि परिषद ने वर्ष 2018 के अंतर-कोरियाई समझौते को निलंबित करने का फैसला किया है। इस समझौते का उद्देश्य दोनों कोरियाई देशों के बीच आपसी विश्वास बहाल होने तक सीमावर्ती शत्रुता को कम करना था। सुरक्षा परिषद ने कहा कि इस समझौते के निलंबन से दक्षिण कोरिया को उत्तर कोरिया की सीमा के पास सैन्य अभ्यास फिर से शुरू करने और पड़ोसी मुल्क के उकसावे पर प्रभावी एवं तत्काल प्रतिक्रिया करने की अनुमति मिलेगी।

परिषद के मुताबिक, समझौते के निलंबन पर एक प्रस्ताव मंगलवार को कैबिनेट परिषद में मंजूरी के लिए पेश किया जाएगा। उत्तर कोरिया ने पिछले मंगलवार से अब तक दक्षिण कोरिया के विभिन्न हिस्सों में करीब एक हजार से ज्यादा गुब्बारे उड़ाए हैं, जिनमें खाद से लेकर सिगरेट के टुकड़े, कपड़े के टुकड़े और बेकार कागज भरे हुए थे। दक्षिण कोरिया की सेना के अनुसार, इन गुब्बारों में कोई भी खतरनाक पदार्थ नहीं मिला।

इजराइल आर्मी ने चार और बंधकों की मौत की पुष्टि की

येरूसलम, एजेंसी। अधिकारियों ने बताया कि इन तीन व्यक्तियों की पहचान अमीरम कूपर, योराम मेट्जगर और हैम पेरी के रूप में हुई है। उन्होंने बताया कि ये सभी 80 वर्ष या उससे अधिक उम्र के थे। इजराइल की सेना ने हमास द्वारा बंधक बनाए गए चार और लोगों की मौत होने की पुष्टि की है, जिनमें तीन बुजुर्ग शामिल हैं। हमास की ओर से जारी किए गए वीडियो में ये लोग रिहाई के लिए भीख मांगते नजर आए थे। अधिकारियों ने बताया कि इन तीन व्यक्तियों की पहचान अमीरम कूपर, योराम मेट्जगर और हैम पेरी के रूप में हुई है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129